-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

एक मुसाफिर : एक दुनिया

हि. ५३६

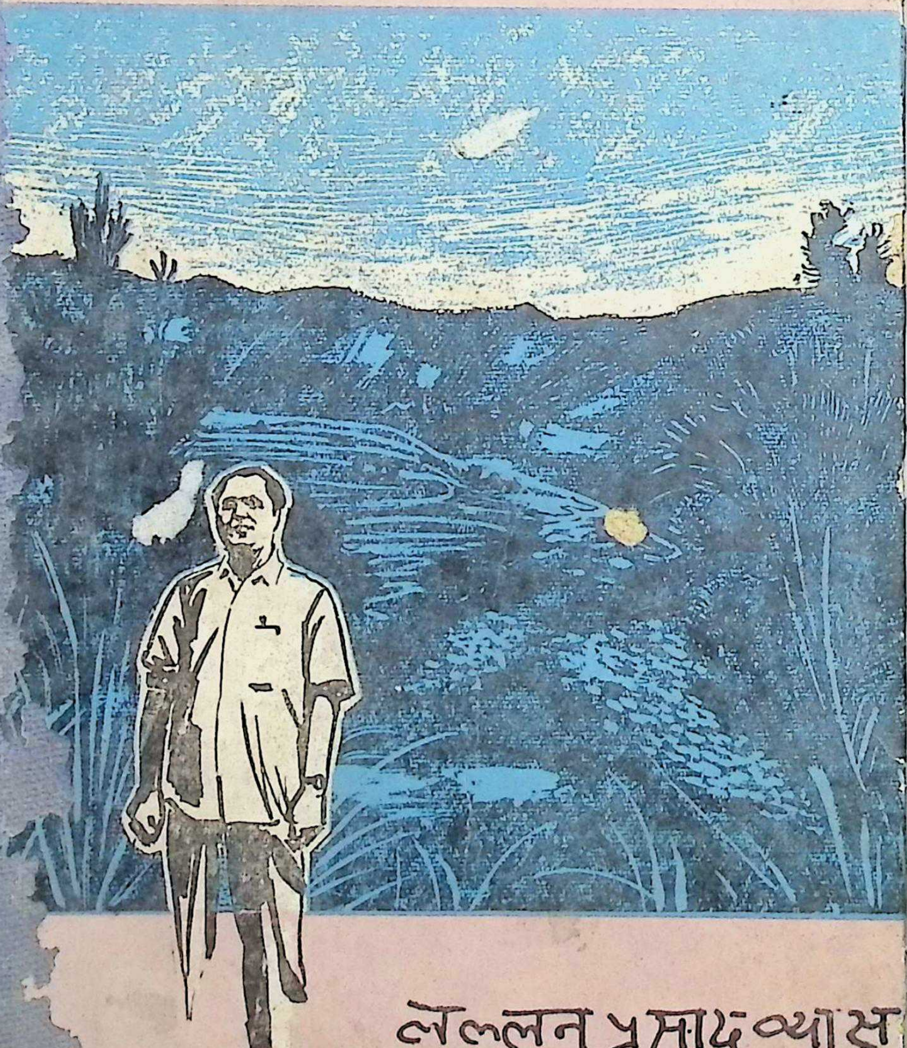

लल्लन प्रसाद व्यास

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

न्म स
राइच
दीच्य
ाली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

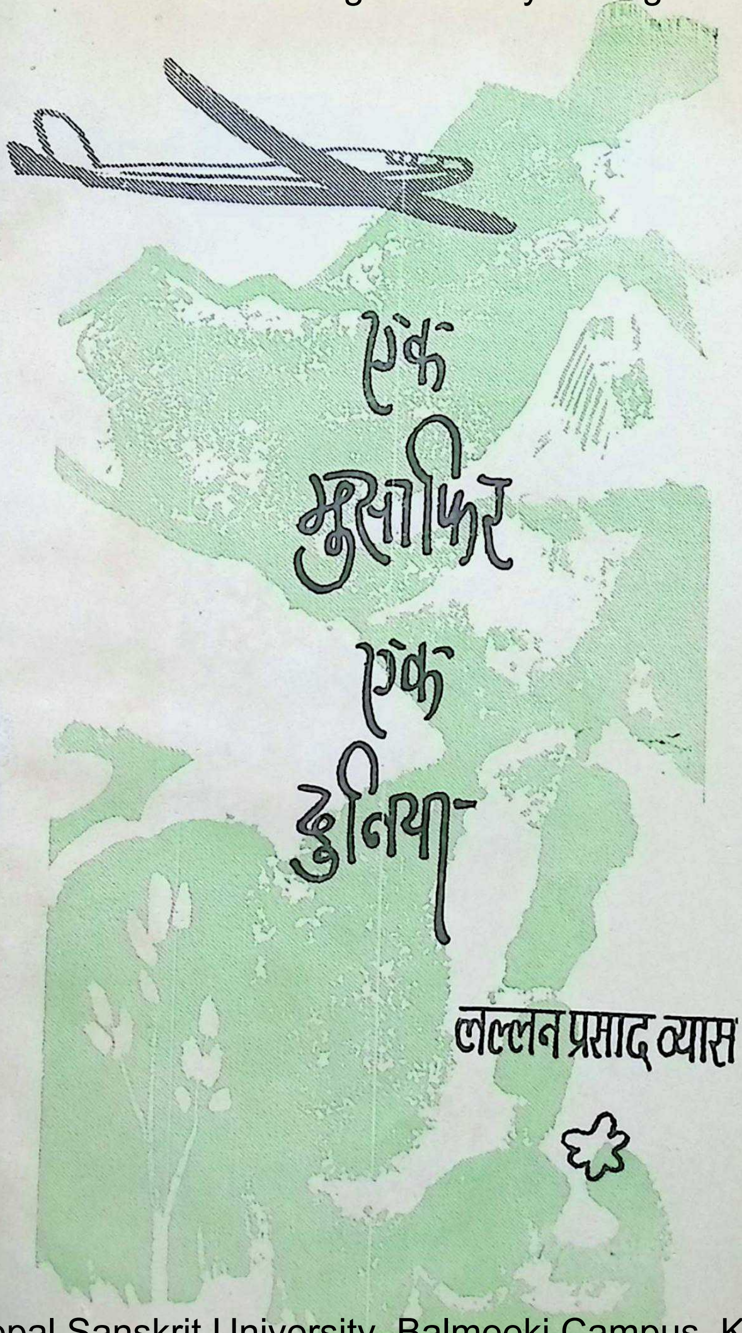

एक मुसाफिर एक दुनिया

लल्लन प्रसाद व्यास

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

एक मुसाफिर : एक दुनिया

[रोचक यात्रा-संस्मरण]

हिं. ५५८

लल्लन प्रसाद व्यास

५२८

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

वाराणसी–१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

EK MUSAFIR : EK DUNIYA—TRAVEL LITERATURE
By Lallan Prasad Vyas

वाल्मीकि वि…
पुस्तकालय

प्रथम संस्करण
२१००
फरवरी '६६

१२९४०

मूल्य
३.०० रुपये

प्रकाशक
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
पो. बॉक्स नं. ७०, पिशाचमोचन
वाराणसी–१

मुद्रक
राष्ट्रीय प्रेस
सेनपुरा
वाराणसी–१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हि:५३४

अपने पूज्य

श्री स्वामी कृष्णानन्द जी

को समर्पित !

यह

श्रद्धा

सुमन

—लल्लन प्रसाद व्यास

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हि. ५२३८

आमुख

द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में चेतना तथा जागरण का नवीन अध्याय प्रारम्भ होता है। शताब्दियों से साम्राज्यवादी शक्तियों के शोषण और दोहन नें संसार के इस अंचल की कोटि-कोटि जनता को स्वाधीन होने के लिए प्रेरित किया और उन्हें प्रेरणा दी विकास के पथ पर अग्रसर होने की। पूर्वांचल के इन देशों की क्रान्तियों तथा प्रतिक्रान्तियों ने इस व्यापक-विस्तृत क्षेत्र का न केवल राजनीतिक स्वरूप ही परिवर्तित कर दिया है अपितु उनके सामाजिक एवं आर्थिक ढाँचे में भी महान् परिवर्तन कर दिये हैं। इन क्षेत्रों का भारत से अति प्राचीन काल से सांस्कृतिक तथा आर्थिक घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। सदियों के साम्राज्यवादी प्रभुत्व के कारण भारत से इन देशों की घनिष्ठता छिन्न-भिन्न हो गयी और मैत्री एवं सहयोग की प्राचीन परम्पराएँ खण्डित हो गयीं। सन् १९४७ में भारत की स्वाधीनता ने एशियाई देशों के स्वतन्त्रता आन्दोलन को नवीन शक्ति एवं स्फूर्ति प्रदान की। तब से अब तक के प्रायः दो दशकों में दक्षिण-पूर्वी एशिया में ऐसे युगान्तरकारी परिवर्तन हुए हैं, जो शायद पिछली एक शताब्दी में भी नहीं हुए थे। इन ऐतिहासिक परिवर्तनों के सम्बन्ध में प्रामाणिक इतिहास तथा आँखों देखे विवरणों का एकदम अभाव रहा है। हर्ष की बात है कि प्रतिभावान तथा प्रतिष्ठित पत्रकार एवं लेखक श्री लल्लन प्रसाद व्यास ने यात्रा के बाद प्रस्तुत पुस्तक की रचना कर न केवल एक अभाव की पूर्ति की है अपितु राष्ट्रभाषा हिन्दी के भण्डार को समृद्ध किया है।

'एक मुसाफिर : एक दुनिया' में विद्वान् लेखक ने दक्षिण-पूर्वी एशिया के सात देशों के अपने रोचक और रोमांचक यात्रा-विवरण अत्यन्त सजीव शैली में प्रस्तुत किये हैं। यात्रा-विवरण के अन्तर्गत ही उन देशों के दर्शनीय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

स्थानों के वर्णन के साथ ही उन देशों की वर्तमान गति-विधि की भी झलक मिल जाती है। लेखक अनुभवी पत्रकार भी है, इससे सहज ही उसकी पैनी दृष्टि थोड़े में ही व्यापक क्षेत्र के स्वरूप और ने उनकी समस्याओं का बड़ी रोचकता से स्पर्श किया है। इस प्रकार पाठक को दक्षिण-पूर्वी एशिया तथा भारत के पड़ोसी देशों के स्वरूप का जहाँ बोध होता है, वहीं वे भारतीय दृष्टिकोण से उन देशों की चतुर्दिक गतिविधियों का भी परिदर्शन-सर्वेक्षण कर सकेंगे।

बर्मा, थाइलैण्ड, फारमोसा, हांगकांग, कम्बोडिया, मलयेशिया तथा दक्षिण वियतनाम, सुदूर अतीत में भारतीय संस्कृति से प्रभावित तथा प्रेरित देश रहे हैं। आज भी इन देशों में प्रायः प्राचीन भारतीय धर्म तथा संस्कृति के अवशेष मिलते हैं अथवा उनका परिवर्तित स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। इन देशों की धार्मिक, सामाजिक परम्पराओं में भारतीयता की छाप अब भी अंकित है। लेखक ने अपने यात्रा-क्रम में इस दृष्टिकोण से भी निरीक्षण-परीक्षण किया है, यह प्रसन्नता की बात है। इन क्षेत्रों की अनेक राजनीतिक समस्याओं ने विश्व-राजनीति को प्रभावित किया है। जागरूक लेखक ने पुस्तक में उनका भी सम्बद्ध विवरण यथा प्रसंग प्रस्तुत किया है, जिससे इस पुस्तक का महत्व और अधिक बढ़ गया है। वस्तुतः यह पुस्तक हिन्दी में यात्रा-साहित्य की ही अभिवृद्धि नहीं करती अपितु दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों सम्बन्धी रोचक एवं प्रामाणिक पुस्तक की भी अभावपूर्ति करती है।

ऐसी सुन्दर पुस्तक लिखने के लिए विद्वान् लेखक हिन्दी-जगत् की बधाई का पात्र है।

व्यास-निवास
वाराणसी
२५-२-६६

लक्ष्मी शंकर व्यास
सहायक सम्पादक 'आज'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अनुक्रम

		पृ. सं.
१. पगोडाओं के देश 'बर्मा' में	...	३
२. सुन्दरता और स्वच्छता के देश 'थाइलैण्ड' में	...	१९
३. शत्रु के शत्रु देश 'फारमोसा' में	...	४५
४. गगनचुम्बी अट्टालिकाओं के नगर 'हांगकांग' में	...	६५
५. अंगकोर के देश 'कम्बोडिया' में	...	६९
६. नेताजी के स्मृति-सौरभ से सुगन्धित देश 'मलयेशिया' में	...	७५
७. महायुद्ध के काले बादलों के देश 'दक्षिण वियतनाम' में	...	८५
८. रोचक संस्मरण और समस्याएँ	...	९३

—:०:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

एक मुसाफिर : एक दुनिया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

१

पगोडाओं के देश बर्मा में

बैंकाक स्थित थाई-भारत संस्कृति आश्रम ने मुझे थाईलैण्ड आमंत्रित कर दक्षिण-पूर्व एशिया के दर्शन की मेरी एक चिरसंचित अभिलाषा पूर्ण करने का सुअवसर प्रदान किया। जब मैं थाईलैंड के लिए प्रस्थान करने को तैयार हुआ तो स्वाभाविक इच्छा हुई कि बर्मा देखता हुआ चलूं जो मार्ग में ही पड़ता है। उस समय बर्मा में एक अभूतपूर्व उथल-पुथल हो चुकी थी। सरकार ने सभी व्यवसाय और उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करके उनके मुख्य कर्णधारों अर्थात् भारतीयों को लगभग बेरोजगार कर दिया था और इस प्रकार उन्हें बर्मा छोड़ने के लिए बाध्य कर दिया था जिसकी वर्तमान उन्नति और समृद्धि के प्रयासों में इन भारतीयों ने अपनी बलिदानी भूमिका अदा की है। मैं बर्मा प्रवेश का वीसा लेने के लिए दिल्ली स्थित बर्मी दूतावास में गया। किंतु वहाँ साफ मना कर दिया गया। विशेषकर इसलिए कि मैं पत्रकार था, वह भी भारतीय पत्रकार। बर्मी सरकार नहीं चाहती थी कि विदेशी पत्रकार उनके देश में आये और उनके उस विवादग्रस्त कदम की आलोचना और समीक्षा करे। इसके पूर्व मुझे पत्रकार होने के विभिन्न लाभ तो अवश्य अनुभव हुए थे किन्तु हानि और कठिनाई अनुभव करने का यह पहला ही अवसर था। मैंने इन अधिकारियों को विभिन्न तरीकों से यह विश्वास दिलाया कि मेरी बर्मा यात्रा पत्रकारिता के किसी उद्देश्य से नहीं है बल्कि थाईलैंड जाते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

समय उस महान् देश के दर्शन मात्र की है। मेरा सौभाग्य था कि उन्होंने इस पर विश्वास कर लिया और मुझे अपने देश का वीसा दे दिया। थाईलैंड का वीसा पहले ही ले चुका था और उसमें कोई असुविधा भी नहीं हुई थी।

यद्यपि एक छोटी-सी औपचारिकता और शेष थी फिर भी मैंने यह समझ रखा था कि किला अब फतेह कर लिया। मुझे क्या पता था कि यही छोटी-सी औपचारिकता मेरी विदेश यात्रा को स्थगित करने भर को काफी है। यह औपचारिकता रिजर्व बैंक से पी. सर्टिफिकेट (पैसेज सर्टिफिकेट) प्राप्त करने से सम्बन्धित थी जिसके बिना कोई देश से बाहर जा ही नहीं सकता। मैंने सोचा था जब मुझे विदेश से निमंत्रण है तथा मेरे सभी व्यय आदि का भार उन पर है तब भारत सरकार को आपत्ति क्या हो सकती है—मैं तो एक पैसे की भी विदेशी मुद्रा माँग नहीं रहा। परन्तु हमारे देश में विभिन्न नियम विचित्र हैं और उनके पालनकर्त्ता और भी विचित्र। जब मैं कानपुर की रिजर्व बैंक शाखा के अधिकारी से मिला और पी. सर्टिफिकेट के लिए निवेदन किया तो उसने आश्चर्यजनक उत्तर दिया—"आपका केस कल्चर (संस्कृति) से सम्बन्धित है। इसलिए हेड आफिस (बम्बई) को निर्णय के लिए भेजा जायगा।"

अब क्या करूँ ? मुझे ५ दिन बाद प्रस्थान करना है और ये सज्जन कम-से-कम ३–४ सप्ताह का विधान बता रहे थे। मैंने उनसे कहा—"श्रीमान्, मैं तो आपसे विदेशी विनिमय माँगता नहीं और पी. सर्टिफिकेट की व्यवस्था उसी की बचत के लिए ही तो की गयी है।" परन्तु उन्होंने साफ इंकार कर दिया। मैं तत्काल उस प्रार्थनापत्र के साथ दिल्ली गया। वहाँ भी नियम का उसी प्रकार का अन्धानुकरण किया गया। अब मुझे ऐसा लगा कि सरकार के इन विचित्र नियमों के फेर में कहीं मेरी विदेश-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

यात्रा न रह जाय। फिर भी मैंने साहस नहीं छोड़ा, तत्काल लखनऊ वापस लौटाऔर विदेश यात्रा के निमित्त कलकत्ता के लिए प्रस्थान कर दिया। समय कम था सोचा अब वहीं कुछ व्यवस्था करूँगा। कलकत्ता आने पर वहाँ के रिजर्व बैंक में गया, सम्बन्धित अधिकारी से अपनी समस्त कठिनाई बतायी। साथ ही यह भी कहा कि न जाने कितने धनवान सिर्फ सैर-सपाटे के लिए विदेश जाते हैं और देश का विदेशी विनिमय बर्बाद करते हैं। उन्हें सुविधा से जाने की अनुमति भी मिल जाती है। किन्तु मेरे-जैसे व्यक्ति जो देश की एक पैसे की भी विदेशी विनिमय मुद्रा नहीं चाहते और देश की प्रतिष्ठा को विदेशों में बढ़ाने का ही प्रयत्न करना चाहते हैं उनके लिए इस प्रकार की कठिनाइयाँ उपस्थित की जाती हैं। सौभाग्य से उस नेक अधिकारी ने इस समस्या को समझा और यह भी समझा कि मुझे तत्काल जाने देना ही उचित है अतएव उसने पी. सर्टिफिकेट देने की व्यवस्था कर दी। मैंने राहत की साँस ली। ये झंझटें आजकल होती हैं विदेश यात्रा के लिए प्रस्थान करने में––यदि कोई ईमानदारी से नियमों का पालन करते हुए और किसी अधिकारी की पूजा किये बिना करना चाहता है तो। लेकिन हमें करना यही चाहिए, कठिनाइयाँ हों, तो भी।

बहरहाल मैं निश्चित कार्यक्रम के अनुसार ७ मई १९६४ ई० को विमान द्वारा कलकत्ते से रंगून के लिए रवाना हुआ। भारत में ये दिन भीषण गर्मी के होते हैं जब लोग बड़ी उत्सुकता से वर्षा की प्रतीक्षा करते हैं। विमान समुद्र पार करके जैसे ही बर्मी भूमि के ऊपर आया मैंने नीचे देखा कि नदियों में बाढ़ का पानी बह रहा है। इसका अर्थ यह था कि यहाँ वर्षा शुरू हो गयी थी। तापमान भी कुछ कम लगा। बाद में काले बादल भी दिखाई दिये जो वर्षा आरम्भ होने की पुष्टि कर रहे थे। इधर भारत से पहले ही वर्षा शुरू हो जाती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

एक मुसाफिर : एक दुनिया

रंगून निकट आ रहा था। विमान की खिड़की से हरित प्रदेश में बसे रंगून नगर की झलक दिखाई पड़ रही थी। इसी में एक चोटी थी स्वर्णिम। उसका स्वर्ण दूर से ही चमक रहा था। मैंने विमान परिचारिका से उत्सुकतावश चमकते पगोडा का नाम पूछा। उसने विनम्रतापूर्वक बताया—श्वेडेगान। अच्छा तो यही वह विश्वप्रसिद्ध पगोडा है। यह पगोडा तो विश्व के पवित्रतम बुद्ध मन्दिरों में माना जाता है। उसी समय इसकी ऐतिहासिक और धार्मिक पृष्ठभूमि मेरे मस्तिष्क में बिजली की तरह कौंध गयी।

एक बार बर्मा निवासी दो भारतीय व्यापारी राजगृह से वाराणसी उरुवेला के वन में होकर जा रहे थे। इनका नाम तपस्स और भल्लुक था। इन्होंने मार्ग में एक अत्यन्त तेजस्वी योगी के दर्शन किये जिसके मुखमण्डल से मानो चन्द्र और सूर्य की असंख्य किरणें फूट रही थीं। यह योगी और कोई नहीं, स्वयं भगवान बुद्ध थे जो निकटवर्ती बोधिवृक्ष के नीचे कुछ दिनों पूर्व ही बुद्धत्व की प्राप्ति कर चुके थे और अब उस महाज्ञान को अखिल मानवता के कल्याण हेतु उपयोग करने के प्रश्न पर विचारमग्न थे। इन व्यापारियों ने इस महायोगी के दर्शन करके अपने को धन्य माना तथा बर्मा से लाये हुए चावलों के मोदक उनके भोग के लिए प्रस्तुत किये। बुद्धदेव ने इन मोदकों को स्वीकार किया और प्रसन्न होकर अपने शिर के ८ पवित्र बाल उनको प्रदान किये। ये बाल भी अत्यन्त प्रकाशमान थे। व्यापारीगण ने इसे अपने जीवन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि माना और अत्यन्त मुदित मन से बर्मा लौट चले। बर्मा में इन पवित्र बालों का सम्मानपूर्वक स्वागत किया तथा उन्हें उसी स्थान पर गाड़ दिया जहाँ आज यह पवित्र पगोडा स्थित है। जिस पहाड़ी पर यह निर्मित है वह भी साधारण महत्त्व की नहीं। यहीं पर पूर्व के ३ बुद्धों के दंड, कमंडलु और वस्त्र गड़े पाये गये थे। इसी-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

लिए गौतम बुद्ध के पवित्र बालों को भी यहीं गाड़ा गया। इतना ही नहीं, धार्मिक विश्वास तो यह है कि इस पहाड़ी का सम्बन्ध गत महाप्रलय से पूर्व का है जब इसकी चोटी पर कमल के ५ फूल उगे थे और इनमें से ५ दैवी पक्षी पीत वस्त्र धारण करके निकले और अनंत की ओर उड़ चले। इसका अर्थ यह निकाला गया कि मानवता के कल्याण के लिए समय-समय पर ५ बुद्ध अवतरित होंगे और पाँचों ही अपने जीवनकाल में अपने कोई स्मृतिचिह्न यहाँ अवश्य भेजेंगे। पिछले ४ बुद्धों के दंड, कमंडलु, वस्त्र और केश यहाँ आ चुके हैं। विश्वास किया जाता है कि पाँचवें बुद्ध भी यहाँ कोई-न-कोई चिह्न अवश्य भेजेंगे।

यह सब सोच ही रहा था कि परिचारिका ने अपनी सुमधुर वाणी में घोषित किया, "अब हम रंगून के अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतर रहे हैं। इस समय स्थानीय समय...है।" ये शब्द कान से टकराये और मस्तिष्क की विचार-श्रृंखला टूट गयी।

विमान रंगून हवाई अड्डे पर उतरा और मैं उसमें से उतरा। इस अपरिचित विदेश में मेरी आँखें अपने परिचित स्वदेशवासियों को ढूँढ़ रही थीं जिन्हें तार से मैंने अपने आगमन की पूर्व सूचना दे रखी थी। ठीक हवाई अड्डे पर तो कोई आ नहीं सकता था, उनके बाहर खड़े होने की सम्भावना अवश्य थी। लेकिन एक कठिनाई यह थी, उन स्वदेशवासियों से मेरा भी परिचय बस पत्र-व्यवहार से था। वैसे चेहरे से न वे मुझे पहचानते थे और न मैं उन्हें। लेकिन कोई चिन्ता की बात नहीं थी। हृदय अपने आत्मीयों को खूब पहचानता है। तब तक मैं उस कक्ष में पहुँच चुका था जहाँ पासपोर्ट वीसा आदि की जाँच होती है। इस कक्ष के बाहर ही वे लोग खड़े थे जो यहाँ आनेवाले यात्रियों के स्वागतार्थी मित्र थे। मैंने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

भी देखा कि ४-५ सज्जन मुझे देखकर हाथ उठा रहे थे। मैंने अनुमान लगाया कि ये भारतीय हैं और चूँकि आज मैं विमान से यहाँ उतरनेवाला अकेला भारतीय हूँ तो सम्भवत: ये लोग मेरे ही स्वागत में खड़े हैं। मैंने हाथ जोड़कर उत्तर दिया।

दरवाजा बन्द था अतएव शीशे से ही एक दूसरे को देख सकते थे—वह भी दूर से ही। मेरा मन उन लोगों से मिलने के लिए उतावला हो रहा था—विशेषकर इसलिए भी कि पता नहीं कितनी देर से वे मेरे लिए इंतजार कर रहे हों। मुझे लगा कि हवाई अड्डे की औपचारिकताओं की पूर्ति में कम-से-कम एक घण्टा लगेगा क्योंकि ये लोग एक भारतीय—वह भी पत्रकार के कागज-पत्रों, माल-ताल आदि की जाँच बड़े इत्मिनान से कर रहे थे। उन्हें शायद यह भी आश्चर्य था कि उनकी सरकार द्वारा बनायी गयी कांटेदार चहारदीवारी के बाद भी यह पत्रकार नामक जन्तु कैसे घुस आया? और अब उनके बस की बात नहीं थी कि वे मुझे वापस खदेड़ दें। मैंने एक अधिकारी से अत्यन्त विनम्रतापूर्वक बाहर खड़े बन्धुओं के निकट जाकर केवल एक मिनट के लिए बात करने की अनुमति माँगी किन्तु वह राजी नहीं हुआ। इस प्रकार लगभग एक घण्टे की औपचारिक पूर्ति के बाद मैं अपने प्रतीक्षारत बन्धुओं के पास जाकर उनसे मिल सका। तभी साक्षात् परिचय हुआ। वे सभी वहाँ के सार्वजनिक जीवन के प्रमुख व्यक्ति थे।

यह वह समय था जब ये भारतीय अपने जीवन भर की अर्जित सम्पत्ति लगभग खो चुके थे और अब उनके जीवन में प्रविष्ट हुई अनिश्चितता और परतन्त्रता उन्हें यह भूमि छोड़ने को विवश कर रही थी जिसको इन्होंने अपने खून-पसीने से सींचा था। उस समय राष्ट्रीयकरण का निर्णय घोषित हो चुका था, बस क्रियान्वयन की प्रारम्भिक अवस्था चल रही थी। ये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

बर्मा का विश्वविख्यात 'श्वेडेगान' पगोडा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सभी किंकर्तव्यविमूढ़ थे, और इस धरती—बल्कि धरती नहीं इसके कुछ तत्वों की अकृतज्ञता से दुखी थे। मैं भी मन-ही-मन बड़ा संकोच अनुभव कर रहा था कि कहाँ ऐसे समय यहाँ आ टपका। एक तो वे पहले से ही अपने जीवन-मरण की समस्या में पड़े हुए हैं दूसरे मैं भी इसी समय इन्हें परेशान करने आ गया। इस समय मेरा आना ये लोग मन से कैसे पसन्द कर सकते हैं।

परन्तु वास्तव में बात ऐसी नहीं थी। शीघ्र ही उन्होंने अपने व्यवहार से मुझे यह विश्वास दिला दिया कि मेरे आने से वे बहुत सन्तुष्ट हैं—यह सोचकर कि ऐसी विपत्ति में उनका एक स्वदेशवासी तो उनका हालचाल पूछने आया।

मैं निकला तो था दक्षिण पूर्व एशिया की सांस्कृतिक यात्रा पर और इस दृष्टि से बर्मा मेरे लिए प्रथम देश था। किन्तु यहाँ भारतीयों का भविष्य अन्धकारपूर्ण देखकर संस्कृति की बात भूल गया। वर्तमान की क्रूर यथार्थता ने विगत के गौरव की कोमल भावना को ठोकर मार दी थी। स्वार्थ ने मानवीय भावनाओं को झकझोर दिया।

हम लोग कार पर बैठकर नगर की ओर चल पड़े। रास्ते में वही श्वेडेगान पगोडा मिला। मैंने सोचा कि इस देश में आने पर सर्वप्रथम इसके इष्टदेव का दर्शन करता चलूँ। हमारे उन बन्धुओं ने भी अपनी सह-मति व्यक्ति की और हम लोग पगोडा में बुद्धदेव का दर्शन करने के लिए उतर पड़े। प्रवेश द्वार पर साफ-सुथरी और सुन्दर स्त्रियाँ फूल-माला, धूपबत्ती आदि बेच रही थीं। अन्दर जाते ही वातावरण अत्यन्त शान्त सुगन्धित और आनन्दमय था। मैंने यहाँ देखा कि बर्मी और भारतीय सभी एक प्रकार से श्रद्धाभिभूत होकर भगवान बुद्ध के दर्शन करने आते हैं और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

शायद भगवान भी दोनों पर समान रूप से कृपा करते होंगे। किन्तु यह कैसी विडम्बना है कि उनका एक भक्त अपनी रोटी-रोजी से वंचित होकर इस भूमि को छोड़कर भारत में वापस आने दर-दर की ठोकरें खाने को विवश हो रहा है और दूसरा वहाँ इन विस्थापितों के दुर्भाग्य पर अपनी समृद्धि का महल खड़ा करना चाहता है, वह भी तब, जब दोनों सगे भाइयों–जैसे हैं। १९३७ ई० तक दोनों का एक ही देश था, जब बर्मा भारतवर्ष का ही एक प्रशासकीय अंग था। बर्मा के अनेक प्रवासी भारतीय उसी समय के हैं, जब बर्मा भारत से अलग देश न था। इन्होंने अपने ही देश के दूसरे भाग में जाकर क्या अपराध किया था ? क्या उन्होंने कभी यह भी सोचा था कि एक दिन उनकी यह जन्मभूमि ही परायी हो जायगी ? सोचते भी कैसे ? बर्मा ने सदैव ही भारत की संरक्षकता प्राप्त की है। १९३७ ई० तक वह भारत का प्रशासकीय अंग रहा और उसके बाद १९४८ ई० में स्वतन्त्र होने पर भी उसने भारत को बड़े भाई के रूप में ही देखा। बर्मा के लोकप्रिय नेता ऊ नू ने प्रत्येक महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न पर भारत की ओर ही निहारा—नेता पं० जवाहरलाल नेहरू से ही विचार-विमर्श किया। किन्तु विगत दो वर्षों से भ्रातृत्व की यह धारा उलटी बहने लगी है। यह उलटी धारा सबसे पहले भारत पर चीनी आक्रमण के समय परिलक्षित हुई जब बर्मा ने बड़े भाई पर बर्बर आक्रमण होने पर भी तटस्थ दृष्टिकोण अपनाया और आक्रमण के विरुद्ध निंदा का एक शब्द भी नहीं कहा। यह भी न सोचा कि जो दानव आज उसके बड़े भाई को दबोच रहा है जो उससे भी अधिक शक्तिशाली है तो कल वही दानव उसे कैसे छोड़ देगा और उसके डेढ़ वर्ष बाद राष्ट्रीयकरण के नाम पर भ्रातृत्वपूर्ण सम्बन्धों पर यह दूसरा कड़ा प्रहार।

कहने को तो बर्मा सरकार यह कहती है कि उसके राष्ट्रीयकरण से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सभी देशों के लोग समान रूप से प्रभावित हुए हैं परन्तु वस्तुतः राष्ट्रीयकरण के प्रहार के लक्ष्य भारतीय बन गए हैं क्योंकि इस देश का वाणिज्य और व्यापार मुख्यतः भारतीयों के हाथ में रहा है। यदि वर्मी सरकार का यह तर्क स्वीकार कर लिया जाय तो प्रश्न उठता है कि राष्ट्रीयकरण कार्यक्रम की विधि में एकरूपता क्यों नहीं बरती गयी और हर्जाने की यथाशीघ्र सन्तोषजनक व्यवस्था क्यों नहीं की गयी? और सबसे बड़ा प्रश्न तो यह है कि इन भारतीयों का समस्त व्यापार अपने हाथ में ले लेने के बाद सरकार ने उनकी जीविका की वैकल्पिक व्यवस्था क्यों नहीं की? इतना ही नहीं भारतीयों पर इस अभूतपूर्व संकट के समय बर्मा सरकार के नियन्त्रित समाचारपत्रों ने भी भारतीयों के विरुद्ध अच्छा खासा अभियान चलाया। नाटकों आदि के आयोजन द्वारा भारतीयों के चरित्र पर आक्षेप किया गया तथा अनेक बर्मी अधिकारियों और कर्मचारियों ने भी हवा के नये रुख का अनुभव करके अपनी मनमानी की। यहाँ तक कि प्रारम्भ में तो भारत आने के लिए इच्छुक भारतीयों को तरह-तरह से परेशान करके उनके जाने में विलम्ब किया गया। भारतीय हितों के रक्षक एकमेव साप्ताहिक पत्र 'प्राची प्रकाश' को एक अपर्याप्त कारण बता कर बन्द कर दिया गया। वहाँ की सरकार ने अकस्मात बड़ी राशि के नोटों को बन्द कर भारतीय धनपतियों पर सबसे बड़ा प्रहार किया। भारत वापस लौटनेवाले नागरिकों को बहुत थोड़ी संपत्ति लाने दी गयी—कुछ घटनाएँ तो ऐसी भी सुनने में आयीं जब सरकारी अधिकारियों ने भारतीय स्त्रियों को उनके मंगल-सूत्र तक को ले जाने की मनाही की। इस प्रकार की न जाने कितनी बातें की गयीं—बिना यह विचार किये कि दो मित्र देशों के सम्बन्धों पर इनका कितना विपरीत प्रभाव पड़ेगा। उन्हें यह भी विचार न रहा कि जब बर्मा से लाखों भारतीय अपने साथ अत्याचार और अन्याय की आपबीती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कहानी लेकर जायंगे तो उससे भारत में इस पड़ोसी देश के प्रति कितनी कटुता और अविश्वास की भावना उत्पन्न होगी।

मेरी आँखें बर्मा के सुप्रसिद्ध पगोडा के अन्दर सभी पावन और सौन्दर्य-मयी वस्तुओं को निहार रही थीं किन्तु मन ऐसी ही भावनाओं से उद्वेलित था। तभी साथ के एक बन्धु ने एक स्थान पर रखा भारी पत्थर मुझे दिखाया। इसके बारे में यह विश्वास किया जाता है कि यह मनुष्य का भाग्य बताता है। कोई व्यक्ति मन में किसी कामना के साथ इस पत्थर को उठाये तो ऐसा कहा जाता है कि यदि वह पूरी होने वाली होती है तो पत्थर हलका हो जाता है और यदि नहीं तो उसका वजन बहुत बढ़ जाता है—इतना कि उसे उठाया नहीं जा सकता। चूँकि मैं आत्मविश्वास को भाग्य का एक निर्णायक तत्व मानता हूँ जो अपने अन्दर ही विद्यमान होता है अतएव मैंने इन बाह्य उपकरणों को अन्धविश्वास से अधिक कुछ नहीं माना। इसके अलावा वहाँ महागन्ध नामक एक विशाल घंटा रखा है जिसके बारे में यह विश्वास किया जाता है कि उसे जितनी बार बजाया जाय, बजानेवाले को उतनी ही वार बर्मा आना होगा।

इस घंटे के पीछे भी ऐतिहासिक कथा है जो वहाँ मुझे बतायी गयी। इस घंटे को विजय स्मारक के रूप में अंग्रेजों ने इंगलैंड ले जाने का निश्चय किया परन्तु जहाज पर चढ़ाते हुए यह अकस्मात् रंगून नदी में गिर गया। अंग्रेज नाविकों और इंजीनियरों ने इसे निकालने का भरसक प्रयास किया परन्तु वह घंटा तल में और अधिक धँसता चला गया। अन्ततः बर्मियों ने इस घंटे को पुनः अपने देश के लिए माँग लिया। अंग्रेजों द्वारा सहमति दिये जाने पर जब बर्मियों ने उसे निकालने का प्रयास किया तो वह फूल की तरह पानी से बाहर निकाल लिया गया। अंग्रेज अपनी असफलता पर हाथ मलते ही रह गये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पगोडा के पिछले भाग की ओर चबूतरे पर एक बोधिवृक्ष भी लगा है जिसकी एक डाल १९४८ ई० में बर्मी स्वाधीनता दिवस पर डा० राजेन्द्र प्रसाद अपने साथ लाये थे और उसे यहाँ लगाया था। अब यह एक बड़ा वृक्ष बन चुका है, जिसे भारत-बर्मा मैत्री का प्रतीक समझा जाता है। किन्तु शायद यह वृक्ष भी—यदि पेड़-पौंधों में जीवन होने का भारतीय विज्ञानवेत्ता डा० जगदीशचन्द्र बोस का सिद्धान्त सही है, तो भारत-बर्मा मैत्री की दुर्दशा पर आँसू बहा रहा होगा।

भारत सरकार से शिकायत

यद्यपि बर्मा में विश्वप्रसिद्ध श्वेडेगान पगोडा के अतिरिक्त भी अन्य अनेक प्रसिद्ध पगोडे हैं, रंगून में ही अन्तिम मुगल बादशाह बहादुर शाह की मजार भी है, मांडले में वह जेल भी है, जिसमें लोकमान्य तिलक ने 'गीता रहस्य' लिखी थी तथा लाला लाजपत राय और नेता जी सुभाषचन्द्र बोस ने उसमें रहकर भारत माता की बेड़ियाँ काटने की योजना बनायी थी। किन्तु मेरा मन इन सबमें किसी को भी देखने का नहीं हुआ, क्योंकि उस समय हमारे ५ से ७ लाख प्रवासी भारतीय संकट में थे। मेरा कर्तव्य उस समय सांत्वना देना, उनकी समस्याओं को समझना और उन्हें दूर करने का प्रयास करना था। बर्मा में भारतीयों के प्रत्येक वर्ग से मिलने के बाद मुझे ऐसा लगा कि ये लोग जितना भारत सरकार और रंगून स्थित भारतीय दूतावास से नाराज हैं उतना शायद नेविन सरकार से भी नहीं जिसने उनके सर्वस्व का अपहरण किया है। इसका एक मनोवैज्ञानिक कारण यह है कि लोग अपनों से ही अधिक नाराज होते हैं क्योंकि उन्हीं पर उनका बस भी चलता है। उनकी सबसे बड़ी शिकायत यह थी कि ऐसे संकट के समय भारत सरकार ने उन्हें भुला दिया तथा उनके प्रति उदासीनता दिखाई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

निश्चय ही उस समय तक भारत सरकार ने कोई प्रभावी कदम नहीं उठाया था। भारतीय दूतावास से वे अप्रसन्न इसलिए थे कि उसने बर्मा सरकार के पास उनके हितों का प्रभावी प्रतिनिधित्व नहीं किया। राष्ट्रीयकरण की घोषणा से कई माह पूर्व से यहाँ भारत का राजदूत पद रिक्त था। उसके बाद भी राजदूत की नियुक्ति में महीनों लग गये। भारत के विदेश विभाग की यह किंकर्तव्यविमूढ़ता निःसन्देह अक्षम्य है। उस समय यहाँ के प्रवासी भारतीय—चाहे वे भारतीय नागरिक हों अथवा बर्मा नागरिक—बर्मा सरकार के अमानवीय सैनिक समाजवाद तथा भारत सरकार के किंकर्त्तव्य-विमूढ़तावाद अथवा उदासीनता के दो पाटों के बीच पिस रहे थे और उनकी रक्षा के लिए कोई तत्पर न था, बस मानवता निस्सहाय खड़ी आँसू बहा रही थी। यही स्थिति कमोबेश बाद में भी रही यद्यपि भारत सरकार ने बाद में कुछ ध्यान अवश्य दिया है। किन्तु दुर्भाग्य की बात यह भी है कि अब भारत सरकार के प्रयासों का कोई विशेष महत्व भी नहीं है क्योंकि उसके पीछे की शक्ति की दीवार ढह चुकी है। चीनी आक्रमण के कारण ये छोटे-छोटे देश बस शक्ति के समक्ष नमन करते हैं। यही कारण है कि भारत सरकार के नेताओं और अधिकारियों की दौड़धूप के बावजूद अब तक वहाँ भारतीयों की स्थिति में कोई मूलभूत परिवर्तन नहीं आ सका है। यहाँ तक कि बर्मी नागरिकता प्राप्त भारतीय भी उतने ही त्रस्त हैं—बल्कि कुछ अधिक ही। क्योंकि भारतीय नागरिक तो भारत वापस लौट सकते हैं किन्तु ये बेचारे कैसे लौटें, जब कि बर्मा सरकार इन्हें बर्मी जातिवालों के समान मानती नहीं और चाहती भी है कि ये लोग अन्य भारतीयों की तरह वापस चले जायें बर्मी नागरिकता छोड़ दें।

एक सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न मेरे मस्तिष्क में उठा और वह अन्य अनेक के मस्तिष्क में उठना स्वाभाविक है कि आखिर ५-७ लाख भारतीयों ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

इतना बड़ा अन्याय कैसे सहन कर लिया और उन्होंने चुपचाप उस धरती को छोड़ना कैसे स्वीकार कर लिया जिसे शताब्दियों से उन्होंने और उनके पूर्वजों ने अपना समझकर उसकी भलाई के लिए अपना खून-पसीना एक किया था। इसके दो कारण हैं। प्रथम तो यह कि यहाँ बसनेवाले भारतीयों विशेषकर व्यापारी वर्ग ने कभी यह अनुभव हीं नहीं किया कि इस विदेशी भूमि पर अपना अधिकार स्थिर रखने के लिए उन्हें एकता और सद्भावना के साथ रहना चाहिए। भारतीयों का कोई संगठित और सर्व-मान्य दल या संगठन न बन पाने से इनके बीच किसी सर्वमान्य और प्रभावी नेतृत्व का भी जन्म न हो सका। यदि ऐसा नेतृत्व बन सका होता तो आज उसकी छत्रछाया में वहाँ अन्याय, अनीति और अमानवीयता के विरुद्ध प्रबल जन आन्दोलन उठ खड़ा होता। दूसरा कारण यह है कि वर्तमान सैनिक शासन का बर्मा के सभी निवासियों पर बड़ा गहरा आतंक है। नेविन सरकार बनने पर जब किसी प्रश्न को लेकर रंगून विश्वविद्यालय में छात्रों ने आन्दोलन किया था, तो सरकारी अधिकारियों ने अत्यन्त निर्दयतापूर्वक गोली चलाकर अपने ही दर्जनों भावी होनहार नागरिकों को भून दिया था। उन भारतीयों के मन में डर बैठ चुका है कि जो सरकार अपने ही युवकों का निर्मम कत्लेआम कर सकती है वह विदेशियों पर क्या रहम करेगी। बहरहाल बर्मा के भारतीयों ने चुपचाप आत्मघाती परिस्थितियों के समक्ष मस्तक झुका दिया, मजबूरियाँ जो कुछ भी रही हों। अब काफी देर हो चुकी है। अन्यायी के अन्याय का यदि तत्काल प्रतिकार न किया जाय तो उसकी शक्ति अपराजेय बन जाती है।

जहाँ तक बर्मा की आन्तरिक स्थिति का सम्बन्ध है, वहाँ पूर्णतः सैनिक शासन है और उसके प्रधान हैं जनरल नेविन। एक बार तो उन्होंने बर्मा के लोकप्रिय नेता ऊ-नू से शासन भार लेकर फिर व्यवस्था ठीक हो जाने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पर उन्हें वापस कर दिया था। और वह प्रक्रिया स्वयं ऊ नू के निवेदन पर सम्पन्न हुई थी किन्तु इस बार तो उन्हें अपदस्थ करके जेल में ही छोड़ दिया गया है और अब इस बात के कोई लक्षण भी नहीं दिखाई पड़ते कि निकट भविष्य में उनको पूर्व अधिकार प्राप्त हो सकेगा तथा यहाँ लोकप्रिय शासन की स्थापना हो सकेगी। शायद वर्तमान सरकार विदेशी पूँजी का राष्ट्रीयकरण करके और विदेशियों को बर्मा से निकालकर अपनी जनता की सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करना चाहती है।

मैं बर्मा में चाहते हुए भी अधिक नहीं रुक सकता था क्योंकि मुझे केवल एक दिन का ही वीसा मिला था। विदेशी दूतावास इतनी ही अवधि का वीसा दे सकते थे। अतएव यह समय मैंने अधिक-से-अधिक भारतीय बन्धुओं से मिलने में लगाया और निश्चित समय पर हवाई जहाज से थाईलैंड के लिए उड़ चला। एक महान देश के दर्शन किये यह तो सन्तोष था किन्तु अपने लाखों देशवासियों की दुर्दशा की कहानी सुनकर और प्रत्यक्ष देखकर मन क्षोभ और असन्तोष से भर उठा था। हमारा विमान इस देश की धरती छोड़ रहा था और मैं प्रवासी भारतीयों और यहाँ की सरकार के व्यवहार के बारे में सोच रहा था। कैसी है यह सरकार जिसने अपने देश के साधारण स्वार्थ के आगे सदियों के बल्कि युगों के भ्रातृत्वपूर्ण सम्बन्धों की उपेक्षा कर दी। भारत और बर्मा के सम्बन्ध कुछ शताब्दियों के नहीं, २ हजार वर्ष से भी अधिक के हैं। वैसे तो कई ऐसी कथायें प्रचलित हैं जो भारत बर्मा के सम्बन्ध प्रागैतिहासिककालीन सिद्ध करती हैं परन्तु ऐतिहासिक तथ्य यह बताते हैं कि ईसापूर्व तीसरी शताब्दी में अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचारकों को बर्मा में भेजा था। स्थाविर सोण और उत्तर नामक भिक्षुओं ने यहाँ बौद्ध धर्म की नींव डाली। कुछ पुरातत्ववेत्ता तो यह मानते हैं कि बर्मा में विद्यमान कई पगोडा अशोककालीन ही हैं। बर्मा में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म साथ-साथ फले-फूले। उनमें कोई संघर्ष नहीं आया।

भारत के लोग यहाँ कब से आकर बसने लगे यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता परन्तु ऐसा माना जाता है कि प्रायः ३ हजार वर्ष पूर्व भारत के कुछ व्यापारी अपना जहाज लेकर यहाँ आये थे। उन्हें प्रथम बार ही व्यापार में यहाँ बहुत लाभ हुआ साथ ही यह देश भी उन्हें बहुत भाया। अतएव लौटने पर वे अपने परिवार तथा इष्टमित्रों के साथ यहाँ आये और जंगल आदि साफ करके यहीं रहने लगे। इस प्रकार धीरे-धीरे यहाँ भारतीयों की आबादी बढ़ी। अभी पिछली शताब्दी की ही बात है, जब बर्मा के अनेक नगर जंगल थे। उस समय एक बिहारी जमींदार ने जियावडी ग्रान्ड तथा एक अंग्रेज ने चोगना नामक क्षेत्रों को पट्टे पर खरीदा तथा क्रमशः बिहार और उत्तर प्रदेश के हजारों निवासियों को बुलाकर यहाँ के जंगलों को साफ करवाया। यह जंगल की सफाई वस्तुतः भारतीयों के बलिदान की कहानी है। जंगल साफ करते समय अनेक भारतीयों को जहरीले साँपों ने काट खाया और वे मर गये। इसी प्रकार अन्य अनेक दुर्घटनायें हुईं। इसीलिए यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि बर्मा की समृद्धि बहुत कुछ भारतीयों के त्याग और बलिदान पर भी आधारित है। क्या आज किसी देश का स्वार्थांध राष्ट्रवाद इन तत्वों के प्रति कृतज्ञ नहीं हो सकता ?

मेरा हवाई जहाज थाईलैंड की ओर उन्मुख आकाश में काफी ऊँचाई पर उड़ रहा था। ऊपर से तीन चीजें देखी जा सकती थीं—धान के खेत, सागौन के जंगल और तेल के कुएँ। इन तीन पर ही बर्मा की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था यहाँ तक कि सम्पूर्ण जीवन निर्भर करता है। इन तीनों वस्तुओं के उत्पादन में बर्मा का विश्व भर में अपना महत्वपूर्ण स्थान है।

२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अब बर्मा का स्थल प्रदेश छूट चुका था। हमारा विमान बर्मा और थाईलैंड के बीच विद्यमान समुद्र के ऊपर उड़ रहा था। थोड़ी देर बाद थाईलैण्ड का स्थल प्रदेश भी दिखाई पड़ने लगा और हम बैंकाक में उतरने के लिए अपना झोला आदि ठीक करने लगे।

—: o :—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

२

सुन्दरता और स्वच्छता के देश थाईलैण्ड में

थाईलैंड आने से पूर्व इस देश के सम्बन्ध में मेरे मन में दो कल्पना-चित्र बने थे—एक तो यह कि थाईलैंड प्राकृतिक सौंन्दर्य और सुषमा से भरपूर है तथा दूसरा यह कि भारतीय संस्कृति का यह प्रमुख केन्द्र है। जहाँ तक इसकी प्राकृतिक सुषमा और सुन्दरता का सम्बन्ध है, इसकी झलक मुझे विमान पर से ही मिल गयी थी जब उतरते समय मैंने आस-पास के प्रदेश को देखा था और मन प्रफुल्लित हो उठा था। निश्चय ही मेरा कल्पना चित्र इस सम्बन्ध में हुबहू ऐसा ही था। किलकारी भरती चलती हुई नदियाँ, उनके किनारे धान के हरे-भरे खिलखिलाते खेत और उनसे सटे खड़े झूमते हुए फलदार वृक्ष—सब मिलकर मानो थाईलैंड की सौंन्दर्यमयी धरती का श्रृङ्गार कर रहे थे। आकाश से नीचे देखने पर ऐसा लगता कि जैसे नदियाँ वहाँ की धरती के गले में माला हों। हवाई अड्डे से कार द्वारा जब ८ मील दूर बैंकाक नगर की ओर चला तो सौंन्दर्य और सुषमा का वह कल्पना-चित्र और अधिक साकार होकर सामने आ गया। मार्ग में पड़ने वाले अरुण और नील कमलों के तालाब, छोटी-छोटी नदियाँ और नाले तथा उन पर बने कलात्मक पुल, लकड़ी के बने हुए छोटे-छोटे कलात्मक मकान और उनके चारों तरफ लान और उद्यान की हरियाली—ये सब उस चित्र में सुहावने रंग भरने का काम कर रहे थे। प्रकृति के इन चटक रंगों से युक्त चित्र निहारते रहने के कारण ८ मील की यह यात्रा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

बिलकुल खली नहीं, बल्कि वहुत ग्रानन्ददायी लगी। ग्रानन्ददायी इसलिए विशेष रूप से, क्योंकि यह यात्रा मेरे कल्पना चित्र को मूर्त्त रूप दे रही थी। कल्पना को साकार देखकर कितना ग्रानन्द मिलता है इसे कोई सहृदय ही समझ सकता है।

ग्रौर फिर ग्रा गया बैंकाक। छोटी-बड़ी ग्रनेक नदियों का नगर, उन पर तैरती हुई छोटी-छोटी नौकायें, उन नौकाग्रों पर मस्ती से तिरता हुग्रा जीवन, सुख-सन्तोष ग्रौर निश्चिंतता से व्याप्त ग्रौर समृद्धि से पूर्णतः भरपूर। यह नौकायें ग्रपने ग्राप में थाईलैंड के एक बड़े वर्ग की ग्रर्थव्यवस्था को समेटे हैं। इसीलिए ये नौकायें केवल सुन्दर ग्रौर विहँसते मुखड़ों के ही दर्शन नहीं करातीं, बल्कि फल-फूल ग्रन्न ग्रादि की भरपूरता को भी दिखाती हैं जिन पर वह हँसी-खुशी निर्भर करती है। यह नदियाँ ग्रौर नौकायें बिल्कुल शहर के ग्रन्दर ही हैं ग्रौर इसलिए एक तरफ इन नदियों में नौकायें दौड़ती हैं ग्रौर दूसरी तरफ साफ-सुथरी, चिकनी-चुपड़ी सड़कों पर चमचमाती हुई ग्राधुनिकतम माडल वाली कारें दौड़ती हैं। नयी ग्रौर पुरानी जीवन-प्रणाली का कैसा ग्रद्भुत सह-ग्रस्तित्व है, समन्वय है। वस्तुतः यही समन्वय बैंकाक जैसी महानगरी की विशेषता है, सौन्दर्य है।

बैंकाक नगरी का दर्शन करके मुझे जो बात सबसे ग्रधिक पसंद ग्रायी, वह है इसकी ग्रसाधारण स्वच्छता। यही स्वच्छता उसके सौन्दर्य को बढ़ाती है। पहली झलक में ही मुझे बैंकाक इतना पसन्द ग्राया कि मुझे इससे मानो प्यार हो गया हो। महानगरी—वह भी विश्व की कतिपय प्रमुख महानगरियों में से एक होने के बावजूद बैंकाक इतनी स्वच्छता का निर्वाह कर लेता है, यह देखकर मुझे ग्राश्चर्य ही हुग्रा। बैंकाक जैसी सफाई ग्रपने देश में भी कई नगरों में है, किन्तु प्रायः महानगरों में नहीं। बैंकाक की स्वच्छता की तारीफ मुझसे वहाँ के ग्रन्य ग्रनेक भारतीयों ने भी की।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मैंने पूरे बैंकाक में कहीं भी गन्दी बस्तियाँ (स्लम एरियाज) नहीं देखीं। बैंकाक के उन स्थानों पर अपेक्षाकृत कम सफाई अवश्य है, जहाँ लकड़ी के छोटे-छोटे मकान एक साथ ही अनेक बने हैं और वे पुराने हो चुके हैं। फिर भी इन्हें किसी प्रकार 'गन्दी बस्ती' की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, क्योंकि सफाई का प्रश्न बहुत कुछ लोगों की आदतों और स्वभाव पर निर्भर करता है, अन्य बाहरी परिस्थितियों पर नहीं। साथ ही बैंकाक आधुनिक इतना है कि स्थान-स्थान पर यहाँ नाइट क्लब, बार, डिपार्टमेंटल स्टोर्स, होटल, रेस्टां, नाचघर आदि देखे जा सकते हैं। बड़े-बड़े भवन और दुकानें यहाँ बहुत हैं लेकिन हांगकांग की तरह गगनचुम्बी अट्टालिकायें स्काईस्क्रैपर्स नहीं हैं। ठीक भी है, ऐसी अट्टालिकायें किसी महानगरी के वास्तविक सौन्दर्य में अभिवृद्धि नहीं करतीं। हाँ, उसे विराट स्वरूप अवश्य प्रदान करती हैं।

मैं थाई-भारत संस्कृति आश्रम के भवन में ही ठहरा, क्योंकि उसी के निमन्त्रण पर मैं थाईलैण्ड गया था। उस दिन रात में तो बड़े प्रेम से सोया। दूसरे दिन प्रातःकाल ६ बजे ही उठ गया। उस समय भारत में ४॥ बजे होंगे, क्योंकि भारत और थाईलैंड के समय में १॥ घण्टे का फर्क है। उस समय उठकर मैं भवन की बालकनी पर टहल रहा था। मैंने देखा दर्जनों बौद्ध भिक्षु भिक्षापात्र लेकर भिक्षाटन के लिए निकले हैं— पूर्णतः शांति और सौम्यता के साथ। यह अपना भिक्षापात्र अपने शरीर के पीत वस्त्रों में ढके रहते हैं लेकिन उनके हाथ में विराजमान अरुण कमल प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता है जो मानो भिक्षुओं की मौन मानव-कल्याण कामना की मुखर अभिव्यक्ति हो। इन बौद्ध भिक्षुओं को देखकर तथा पास के बुद्ध मन्दिर में बौद्ध धर्म ग्रन्थों के श्लोकों का सस्वर और समवेत उच्चारण सुनकर मुझे अपना वह कल्पना चित्र भी साकार दिखाई पड़ा जो मैंने यहाँ की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

संस्कृति के सम्बन्ध में बनाया था। मुझे यह भी लगा कि जैसे प्राचीन भारतीय संस्कृति का एक अध्याय साकार होकर मेरे सामने आ गया हो।

इन भिक्षुओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह लोग भिक्षा के लिए न तो किसी का दरवाजा खटखटाते हैं और न भिक्षा के लिए आवाज ही लगाते हैं। सद्गृहस्थ और सुगृहणियाँ स्वयं प्रातःकाल ताजा भोजन लिये हुए इन भिक्षुओं की राह जोहा करती हैं ताकि भिक्षु उनसे भिक्षा लेकर उन्हें कृतार्थ करें। भिक्षुगण अनुशासित इतने हैं कि यदि कोई गृहस्थ भिक्षुओं के लिए भोजन लिये खड़ा है और संयोग से ६ भिक्षु आ गये तो शेष दो परिस्थिति समझते ही चुपचाप आगे बढ़ जायेंगे। अधिक भिक्षुओं के लिए भोजन होने पर यह लोग स्वतः 'क्यू' जैसा बना लेते हैं। भोजन आदि के लिए यहाँ कभी भी किसी भिक्षु को झगड़ते नहीं पाया गया। संयमी इतने हैं कि दिन में एक बार ही यह लोग भोजन करते हैं और वह भी दिन में ही। इसके बाद यह कोई पेय पदार्थ ही ले सकते हैं और कुछ नहीं।

भिक्षा में यह किसी चीज की इच्छा नहीं प्रकट करते हैं। हाँ, जो मिल जाता है उसके लिए 'नहीं' नहीं करते। मिलनेवाली चीजों में केवल भोजन ही नहीं प्रायः इन्हें सिगरेट, साबुन, तौलिया, कपड़े, फल आदि सभी कुछ मिल जाता है। सिगरेट यह लोग ठाठ से पीते हैं।

थाईलैंड के भिक्षु बड़े प्रगतिशील दिखाई पड़े। कुछ के पास मैंने टेलीविजन और रेडियो भी देखा। मेरे मन में प्रश्न उठा कि जब नाच-गाना इनके लिए देखना और सुनना मना है तो टेलीविजन का इनके लिए उपयोग क्या है? इस सम्बन्ध में एक प्रमुख भिक्षु ने बताया कि वे इसे समाचार श्रवण के लिए रखते हैं। रहते भी हैं ये लोग आधुनिक सुख-सुविधाओं के साथ ही। थाई जनता भी बड़ी प्रगतिशील है। वह ऐसी बातों का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अन्यथा भी नहीं मानती। आखिर वही तो इन सुख-सुविधाओं को उपलब्ध कराती है उन्हें।

थाईलैंड में बौद्ध धर्म एक 'विकासमान प्रक्रिया' है, इसीलिए नहीं कि यह यहाँ का राजधर्म है और राजा द्वारा उसे प्रश्रय और संरक्षण प्राप्त है, बल्कि अधिक इसलिए कि यहाँ थाईवासियों का यह धार्मिक विश्वास है कि जो व्यक्ति अपने जीवन में कभी बौद्ध भिक्षु नहीं बनता उसको सद्गति नहीं प्राप्त होती। इसीलिए यहाँ राजा से लेकर सामान्य जन तक जीवन में एक बार भिक्षु अवश्य बनते हैं चाहे वह एकाध हफ्ते के लिए ही क्यों न हों। वर्तमान राजा भी एक बार भिक्षु बन चुके हैं। भिक्षु बनने वाले जिन व्यक्तियों को वह जीवन पसन्द आ जाता है वे तो स्थायी रूप से भी भिक्षु बन जाते हैं शेष पुनः गृहस्थ बन जाते हैं। प्रसंगवश यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि थाई जीवन में हिन्दुओं की तरह ४ आश्रमों की व्यवस्था भी मानी जा सकती है। आज भी अनेक थाई अपने जीवन के अन्तिम प्रहर में किसी बुद्ध मन्दिर आदि में जाकर रहते हैं और भगवत् चिंतन करते हैं।

सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि बौद्धों की अपनी एक अलग सरकार–जैसी होती है, जिसके प्रधान 'संघराज' कहलाते हैं। यह 'सरकार' केवल बौद्धों के कार्यकलापों के संचालन के लिए ही होती है। पहले इसमें कुछ मन्त्री भी होते थे, जिन पर विभिन्न दायित्व होते थे। इधर इस व्यवस्था में कुछ अन्तर अवश्य पड़ा है। संघराज का महत्व यहाँ के प्रजा जीवन में भी बहुत है और शाही समारोहों में भी उन्हें बहुत महत्व प्राप्त होता है। इस राजकीतिक अधिकार विहीन सरकार को यह अधिकार प्राप्त होता है कि वह नियम विरुद्ध आचरण करने वाले भिक्षुओं के धार्मिक वस्त्र उतरवा ले और उन्हें गृहस्थ आश्रम में जाने को बाध्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कर दे। यही 'सरकार' विदेश जानेवाले बौद्धों को अनुमति देती है और आवश्यक निर्देश भी।

हिन्दू देवी-देवता

थाईलैण्ड देश बौद्ध है। अतएव हिन्दू देवी-देवता भगवान बुद्ध ही थाईलैण्ड वासियों के इष्टदेव हैं। यहाँ के प्रत्येक नगर और ग्राम में बुद्धदेव के मन्दिर मिलेंगे किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि थाईलैण्ड में बुद्धदेव के अतिरिक्त और किसी हिन्दू देवी-देवताओं का महत्व नहीं। वस्तुतः यहाँ राम, गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, विश्वकर्मा आदि हिन्दू देवों को लगभग वैसा ही महत्व प्राप्त है जैसा भारत में। यह तथ्य इस बात का साक्षी है कि भारत और थाईलैण्ड के धार्मिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध बहुत घनिष्ठ और प्राचीन हैं।

थाईलैंड में बौद्ध धर्म की पवित्रता की रक्षा के लिए एक व्यवस्था यह भी की गयी है कि वहाँ प्रत्येक बौद्ध भिक्षु के पास एक तरह का प्रमाणपत्र होता है जिसमें सम्पूर्ण विवरण लिखा रहता है—जैसे किसने दीक्षा दी थी आदि। यहाँ बौद्ध लोग वैशाख पूर्णिमा, माघ पूर्णिमा आदि के पर्व बड़ी निष्ठापूर्वक मनाते हैं। इन अवसरों पर यह लोग सिर घुटवाते हैं—नाई से नहीं, परस्पर ही। इस प्रकार बौद्ध भिक्षु का सिर नाई के सामने नहीं झुकता, भले ही राजा का झुक जाय।

थाई नरेश सामान्य भिक्षुओं के समक्ष नतमस्तक नहीं होते, 'नमस्कान' (नमस्कार) अवश्य करते हैं किन्तु वे संघराज के समक्ष नतमस्तक अवश्य होते हैं। प्रत्येक बौद्ध भिक्षु का मन्दिर या विहार में ही रहना आवश्यक है। ऋण से लदा हुआ व्यक्ति बौद्ध भिक्षु नहीं बनाया जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

एक मुसाफिर : एक दुनिया--

थाई-नरेश बौद्ध भिक्षु के रूप में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:
epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वैसे आजकल पूरे थाई देश में २८-३० हजार बौद्ध मन्दिर हैं और २ लाख के करीब बौद्ध भिक्षु हैं। यह स्थिति काफी उत्साहवर्द्धक मानी जा सकती है। राजा से लेकर सामान्य अधिकारी तक बौद्ध धर्म के प्रचार और प्रसार में भी लगे हैं। फिर भी भौतिकवाद इस देश में भी धर्म के विरुद्ध मोर्चा जमाकर आ डटा है। यह भौतिकवाद पाश्चात्य दिशा की ओर से यहाँ आया है, जिसका प्रभाव यहाँ के जन-मन पर काफी कुछ पड़ा है। भारत के एक बहुत बड़े वर्ग की तरह थाईलैंड ने भी अपना पहनावा छोड़कर पश्चिमी देशों का पहनावा अपनाया है। हाँ, भाषा के बारे में यह बात पूरी तरह से नहीं कही जा सकती, क्योंकि इन्हें अपनी भाषा पर बड़ा नाज है। फिर भी इधर कुछ वर्षों से यहाँ अंग्रेजी का प्रचलन बहुत बढ़ रहा है और उसके साथ ही बढ़ रही है अंग्रेजी संस्कृति भी, क्योंकि भाषा और संस्कृति का बड़ा पुराना और अटूट साथ है। स्वाभाविक है कि इस स्थिति से प्राचीन संस्कृति प्रेमी और धर्मनिष्ठ जन चिंतित हैं।

किन्तु धर्मनिष्ठ जन की निष्ठा को देखकर कोई निराशा की बात यहाँ नहीं दिखाई पड़ती। इनकी निष्ठा का मैं एक ही उदाहरण दूँगा। एक दिन मैं बैंकाक स्थित थाई बौद्ध संघ के प्रधान कार्यालय में गया। वहाँ मैंने उसके प्रधान को, एक क्लर्क या कार्यकर्त्ता को काम करते हुए देखा—दौड़ धूप के साथ। और यह सज्जन कोई साधारण व्यक्ति नहीं, सरकार में उपमन्त्री के महत्वपूर्ण पद पर काम भी करते हैं। इसी संघ के उपाध्यक्ष पद पर सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश थे, जो विगत वर्ष अध्यक्ष पद पर थे। इनके समक्ष पद और मान का कोई महत्व नहीं, बस कार्य का महत्व है। ऐसे उदाहरण कितने देशों में मिलते हैं? मुझे तो उसी समय लगा था कि जिस देश में सेवा के इतने उच्च आदर्श हैं वह देश अपनी धरोहर, अपनी विशिष्टता कभी नहीं खो सकता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

यहाँ के जीवन में राम को अत्यन्त श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। अनेक बौद्ध मन्दिरों में राम या रामचरित को विशेष महत्व दिया गया है। बैंकाक में ही एक अत्यन्त प्रसिद्ध बौद्ध मन्दिर है जिसमें बुद्धदेव की मूर्ति नीलम की बनी हुई है। इसकी दीवारों पर रामकथा के अनेक महत्वपूर्ण प्रसंग अत्यन्त कलात्मक ढंग से चित्रित हैं। ये चित्र काफी पुराने हैं—यहाँ तक कि कुछ नष्ट भी हो रहे हैं किन्तु थाई सरकार इस ओर जागरूक है और वह उन्हें उसी ढंग पर पुनः बनवा रही है। थाई देश में रामायण अथवा रामकथा को 'रामकिन' कहते हैं जो थाई भाषा में उपलब्ध है। ये प्रसंग उसी के आधार पर चित्रित हैं। किन्तु चूँकि 'रामायण' और 'रामकिन' के कथा-प्रसंगों में मामूली-सा हेर-फेर है अतएव इन चित्रों में भी वह अन्तर स्पष्ट है। उदाहरणार्थ, 'रामकिन' के हनुमान जी यद्यपि रामभक्त तो हैं और राम की सेवा तथा उनके कार्य की पूर्ति में लगे भी रहते हैं किन्तु वे ब्रह्मचारी नहीं हैं बल्कि राम के कार्य से जहाँ-जहाँ जाते हैं वहाँ वे स्त्रियों से प्रेम करके और कभी-कभी विवाह भी करते हुए राम के मूल कार्य की सिद्धि कर लेते हैं। एक और बड़ा अन्तर भी 'रामकिन' में है और वह है सीता के परित्याग सम्बन्धी। इसके अनुसार सीताजी वनवास से लौटकर एक दिन राम का चित्र बनाती हैं किन्तु गलती से वह रावण का बन जाता है जिसे देखकर राम क्रुद्ध होते हैं और वे सीता को पुनः वनवास दे देते हैं। सीताजी का धरती में प्रवेश रामायण की भाँति ही होता है।

और हाँ, थाईलैण्ड में एक 'अयुध्या' भी है। नगर बहुत स्वच्छ और सुन्दर है। बहुत ढूँढ़ने पर भी वहाँ राम की कोई मूर्ति नहीं दिखाई दी। एक रामा पार्क अवश्य मिला। इसके पहले बैंकाक में एक 'रामा होटल' का भी नाम सुना था। केवल 'अयुध्या' ही नहीं यहाँ लवपुरी भी है जिसका उच्चारण 'लोपबुरी' किया जाता है। यहाँ एक हनुमान मन्दिर है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

बैंकाक के राष्ट्रीय संग्रहालय के बाहर श्रीराम की मूर्ति ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

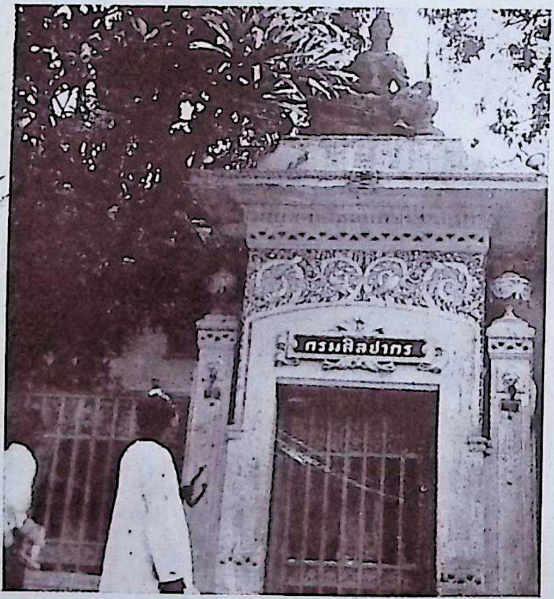

थाईलैण्ड के प्रसिद्ध नगर बैंकाक के एक भवन पर
विश्वकर्मा की मूर्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

'हनुमान मन्दिर' में हनुमान जी को ढूँढ़ने की मैंने काफी कोशिश की। मन्दिर की जो मुख्य मूर्ति है वह विष्णु भगवान की खण्डित प्रतिमा लगती है। ४ भुजाओं में से एक खण्डित है। एक छोटी मूर्ति अवश्य हनुमान जी की हो सकती है। मूर्ति इतनी घिसी हुई है कि इसकी आकृति स्पष्ट नहीं है। 'हनुमान मन्दिर' का नाम सुनकर अनुमान से ही इसे हनुमान की मूर्ति माना जा सकता है। हाँ, हनुमान मन्दिर होने का प्रमाण यहाँ बड़ी संख्या में विद्यमान बन्दर अवश्य देते हैं। इनकी आकृति हनुमानजी से अपेक्षाकृत अधिक मिलती-जुलती है।

श्री राम का सम्बन्ध थाईलैण्ड की प्राचीन संस्कृति से भी है। यहाँ का एक अत्यन्त प्राचीन नगर है 'सुखोथाई' या 'सुखोदायी' जिसके आज खंडहर मात्र शेष हैं। इसके खंडहर ही बता रहे हैं कि नगर कितना विशाल था और तत्कालीन सभ्यता और संस्कृति भी कितनी वैभवपूर्ण थी। इन्हीं खण्डहरों में एक 'देवस्थान' मिला है। खुदाई में वहाँ किसी बुद्धमूर्ति के दर्शन नहीं हुए और यदि हुए तो 'फ्रा ईसुवन' के जो भगवान राम की मूर्ति थी।

थाईलैंण्ड के जन-जीवन में भी राम व्याप्त हैं। मैं थाईलैण्ड के अत्यन्त सुन्दर पर्वतीय स्थल 'चेंगमाई' से 'फिस्नुलोक' विष्णुलोक जा रहा था। यह यात्रा मैंने बस से की और कण्डक्टर ने मुझे बस का जो टिकट दिया उस पर धनुषधारी राम का चित्र बना हुआ था। इसी प्रकार बैंकाक स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय के बाहर भी धनुर्धारी राम की एक विशालकाय मूर्ति स्थापित है।

गणेश

थाईलैंण्ड में बुद्धदेव के बाद यदि कोई भारतीय देवता सबसे अधिक लोकप्रिय है तो यह गणेशजी ही हैं। यहाँ गणेशजी के चित्र का प्रयोग कुछ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

विभागों के राजचिह्न के रूप में भी होता है। वैसे यहाँ गरुड़ जी मुख्य रूप से राजचिह्न पर दिखाई पड़ते हैं। बैंकाक एक विशाल नृत्यशाला बनी हुई है, उसके भवन पर गणेशजी विराजमान हैं। यहाँ कई बुद्ध मन्दिरों में भी गणेशजी की प्रतिमा मिलेगी। बैंकाक में ही एक ब्राह्मण मन्दिर है जिसका पुजारी यज्ञोपवीत और शिखाधारी ब्राह्मण है। इस मन्दिर में विशालकाय गणेश प्रतिमा स्थापित है। साथ ही यहाँ विष्णु भगवान, ब्रह्मा, नटराज, चतुर्भुजी दुर्गा आदि की मूर्तियाँ भी हैं। मैंने पुजारी से भेंट की तो उसने अपना नाम फ्रा शिवाचान (शिवाचार्य) बताया। उसकी उम्र उस समय ८५ वर्ष की थी और उसने यह भी बताया कि ५ पीढ़ी पहले उसके पूर्वज भारत से आये थे। इस मन्दिर में बुद्धदेव की भी मूर्ति है।

राष्ट्रीय संग्रहालय में गणेशजी की दो विशाल मूर्तियाँ हैं। कुछ छोटी मूर्तियाँ लोपबुरी शैली की हैं। यहाँ लक्ष्मी जी की भी मूर्ति है जो बिलकुल भारतीय शैली की है। गणेशजी की मूर्तियाँ सुखोथाई के खण्डहरों में भी पायी गयी हैं।

ब्रह्मा और विष्णु

थाईलैण्ड में ब्रह्मा मंगल और कल्याण के प्रतीक हैं। इसीलिए अनेक घरों की प्रवेश सीमा पर ही इनकी मूर्ति की स्थापना की जाती है ताकि यह गृहस्वामी के परिवार की रक्षा और कल्याण करे। कई मन्दिरों में भी ब्रह्मा के दर्शन होते हैं। बैंकाक के सबसे प्रमुख "ऐरावान होटल" के बाहर भी ब्रह्मा की मूर्ति प्रतिस्थापित है।

यहाँ विष्णु के दर्शन अवश्य कम होते हैं। परन्तु थाईलैण्ड में आते ही विष्णुलोक (फिश्नुलोक, का नाम अवश्य सुनाई पड़ा। पर यहाँ जाने पर विष्णु भगवान का प्रभाव कोई दिखाई नहीं पड़ा। यहाँ के राष्ट्रीय संग्रहालय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

में अत्यन्त विशालकाय और कलात्मक विष्णु प्रतिमाओं को देखकर अवश्य अनुमान होता है कि इस देश में कभी विष्णु भगवान का बहुत महत्वपूर्ण स्थान था। यहाँ १३ वीं १४ वीं शताब्दी की सुखोथाई शैली की विष्णु मूर्ति बहुत भव्य और कलापूर्ण है। श्याम धातु की ऐसी मूर्ति भारत में भी दुर्लभ है। इसके अतिरिक्त भी विष्णु की अनेक प्रतिमाएँ हैं, जो विभिन्न शैलियों की हैं। यहाँ हरिहर, (शिव और विष्णु) की कई मूर्तियाँ रखी हुई हैं। इधर के देशों में हरिहर की मूर्तियाँ कई स्थानों पर देखने में आयीं।

बैंकाक स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियों से मानो भरा पड़ा है। ये मूर्तियाँ लगभग ६ठीं–७वीं शताब्दी से लेकर १३वीं-१४वीं शताब्दी तक की हैं तथा ये विभिन्न शैलियों की हैं। कुछ पूर्णतः भारतीय शैली की हैं। इनमें शिवलिंग, पंचमूर्ति, लक्ष्मी, सर्प-यज्ञोपवीत-धारी शिव, श्वान वाहनवाली शीतला, दशभुजा काली, वीणावादिनी सरस्वती, बाँसुरी बजाते हुए श्रीकृष्ण, रामभक्त हनुमान, हाथी पर शिव, ऐरावत पर आसीन इन्द्र, अर्द्ध नारीश्वर आदि देवी-देवताओं की मूर्तियाँ उल्लेखनीय हैं, जो इस देश में भारतीय संस्कृति की कहानी स्वयं कहती हैं।

नवग्रह भी

इसी संग्रहालय में नवग्रहों की मूर्तियाँ भी हैं—राहु, केतु, सूर्य चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि। इनकी मूर्तियाँ यहाँ होनी अपने—आप में कोई आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि आज भी थाई जीवन में इन नवग्रहों को भारत की भाँति ही स्थान प्राप्त है।

अन्य देवता

एक दिन मैं थाई सरकार के शिल्प और कला विभाग में गया। प्रवेश करते ही द्वार पर मैंने एक भारतीय देवता की मूर्ति देखी। पूछने पर पता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

चला कि यह विश्वकर्मा की मूर्ति है। यह सुनकर थाई देश के प्रति मन में श्रद्धा उमड़ पड़ी। जिन भारतीय देवताओं को स्वयं भारत भूल चुका है वे आज भी थाईलैण्ड में पूजे जाते हैं। कई अर्थों में थाईलैण्ड भारत से अधिक भारतीय है। बैंकाक में ही एक प्रमुख पार्क है जिसमें भारतीय शैली की एक मूर्ति के सिर से फौव्वारा निकलता है। पूछने पर पता चला कि यह शिव की मूर्ति है। किन्तु ध्यान से देखने पर वह नारी की मूर्ति लगती है अतएव शिव की नहीं हो सकती। केवल जटा से निकलती गंगा का साम्य स्वीकार किया जा सकता है।

इसी प्रकार बैंकाक में एक 'लुम्बिनी पार्क' है जिसमें स्थित विशाल सरोवर में नाव पर एक विशालकाय होटल है। यह होटल सभी सुख-सुविधाओं से युक्त है तथा मनोरंजन का अच्छा केन्द्र है। यह नाव 'किन्नरी नाव' के नाम से प्रसिद्ध है तथा नाव के आगे एक उन्नत उरोजी किन्नरी की मूर्ति बनी हुई है। इस नाव पर लोग छोटी-छोटी नौकाओं से जाते हैं।

बैंकाक में ही एक बुद्ध मन्दिर है जिसमें निर्वाण की मुद्रा में बुद्धमूर्ति स्थापित है। इसी मन्दिर के बगल में एक ऊँचे टीले पर शिवलिंग और नंदी की मूर्ति स्थापित है। धर्म का यह समन्वय और सहअस्तित्व बहुत दुर्लभ है।

खंडहरों में

सुखोथाई और अयुध्या इस देश के प्राचीनतम नगर हैं जहाँ इस धरती की संस्कृति खंडहरों के नीचे सोयी पड़ी है। अयुध्या नगर तो अब नया भी बसा है। इन दोनों नगरों की संस्कृति के दर्शन इनके संग्रहालयों में आज भी किये जा सकते हैं।

यह संस्कृति और कोई नहीं, भारतीय संस्कृति ही है। सुखोथाई के खंडहरों को देखकर तो आज भी उसके वास्तविक नगर की भव्यता का अनुमान लगाया जा सकता है। नगर की जीर्ण-शीर्ण चहारदीवारी तक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

विद्यमान है। इसी की पहाड़ी पर बुद्धदेव की विशालतम प्रतिमा स्थापित है। इसकी विशालता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि मूर्ति के घुटनों के बराबर तक भी मेरा सिर नहीं पहुँचा था। सुखोथाई के संग्रहालय में विष्णु, हरिहर, भारतीय शैली की नारी, चार बुद्धों के चरण-चिह्न, शेषशायी विष्णु, चलते हुए बुद्ध, ब्रह्मा, इंद्र, गरुड़, नाग, गांधार शैली का बुद्ध-सिर आदि विद्यमान हैं।

अयुध्या के संग्रहालय के बाहर ही विशालकाय त्रिमूर्ति के दर्शन होते हैं। अन्दर गणेश, विश्वकर्मा आदि देवताओं की मूर्तियाँ हैं।

थाईलैंड के विभिन्न स्थानों पर भारतीय देवी-देवताओं और उनके साथ विद्यमान भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि को देखकर मुझे कहीं ऐसा नहीं अनुभव हुआ कि मैं किसी विदेश में हूँ। इसीलिए यह मानना पड़ेगा कि इस देश ने सर्वाधिक निष्ठापूर्वक उस सांस्कृतिक धरोहर को सँजोकर रखा है जो उसे भारत से मिली थी।

थाई भाषा और भारतीय भाषायें

थाई भाषा में लगभग ४० प्रतिशत शब्द संस्कृत के हैं। साथ ही पालि के भी अनेक शब्द हैं। इसके बाद भी भाषागत साम्य के दर्शन केवल इसलिए नहीं होते कि उन शब्दों के उच्चारण में अन्तर होता है। थाई भाषा बोली जाने के समय संस्कृत का ज्ञाता भी उसमें निहित संस्कृत प्रभाव को नहीं जान सकता जब तक कि उसे थाई लिपि का ज्ञान न हो।

अपने संस्कृत प्रभाव और आधार के कारण थाई भाषा हिन्दी के बहुत निकट आ गयी है। उसकी वर्णमाला हिन्दी वर्णमाला से बहुत मिलती-जुलती है। इसमें भी हिन्दी के समान 'स्वर' और 'व्यंजन' होते हैं जिन्हें "स्वरः" और "फ्यन्छनः" कहते हैं। थाई में हिन्दी की अपेक्षा 'स्वर'

वाल्मीकि विद्यापीठ (पुस्तकालय)
92680
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

अधिक तथा 'व्यंजन' कम हैं। थाई में 'क' और 'ख' कई हैं। उनके उच्चारण भेद से अर्थभेद हो जाता है। इस भाषा में 'ख', 'ग' और 'घ' के लिए 'ख' ही चलता है, विभिन्न उच्चारण-भेद के साथ। इसी प्रकार छोटे-मोटे कुछ अन्य अन्तर भी हैं। सबसे बड़ा अन्तर यही मानना चाहिए कि थाई शब्दों के लेखन और उच्चारण में पर्याप्त भेद है। इसी कारण यह हिन्दी के समान वैज्ञानिक और निर्दोष भाषा नहीं है। हिन्दी की यह विशेषता सर्वविदित और सर्वमान्य है कि उसके जो शब्द लिखे जाते हैं वही बोले या पढ़े जाते हैं और जो बोले या पढ़े जाते हैं उसी के अनुसार वे लिखे भी जाते हैं।

किन्तु इसके साथ-साथ यह भी स्वीकार करना होगा कि थाई के अनेक शब्द इतने सरल, सुस्पष्ट तथा अपने अर्थ की पूर्णता व्यक्त करनेवाले हैं कि उनकी टक्कर के शब्द शायद कई भारतीय भाषाओं में भी न होंगे। इस दृष्टि से ये शब्द हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं के लिए भी अनुकरणीय बन सकते हैं। ऐसे शब्दों को यदि भारतीय भाषाओं में अपना भी लिया जाय तो वे किसी प्रकार भी विदेशी नहीं लगेंगे। ऐसे कुछ शब्द उदाहरण के लिए प्रस्तुत हैं :—

थाई शब्द	थाई उच्चारण
अनुवाद	अनुवाथ
अनुराग	अनुराक
अनुरूप	अनुरूप
अनुरक्ति	अनुरक्क
अनुमोदन	अनुमोथना
अनुमान	अनुमान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

थाई शब्द	थाई उच्चारण
अनुगामिक (शिष्य)	अनुखामिक
अनुक्रम	अनुक्रोम
अनादर	अनाथोन
प्रासाद	फ्रासाथ
विहार	विहान
भोजनागार (होटल)	फोचनाखान्
वचनानुक्रम (शब्दकोष)	फचनानुक्रुम
पूजा	बूछा
प्रतिदिन (कैलेण्डर)	प्रतिथिन
दूरदर्शन (टेलीविजन)	थोर:फाब
समागम (संघ)	समाखुम
सभा	सफा
छाया	छाया
प्रभा	प्रफा
आहार	आहान
सामाजिक	सामाछिक
वंशावली (जीवन परिचय)	फोडसावली
शव	सोब
शासना (धर्म)	सासना
जाति	छाट
सुधाकर	सुथाकोन
दिवाकर	थिवाकोन
आभा	आफा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

थाई शब्द	थाई उच्चारण
नारीयाभरण (कपड़े की दूकान)	नारीय:फन्न
रथ यंत्र [कार]	रोटयोन
सहकार	सहकोन
आयु	आयु
विचारणा	फिचरणा
शाला [होस्टल]	साला
वनस्पति	फनसबोड़
व्याकरण	वैय्याकोन्
अक्षर	अक्सोन
भाषा	फासा
धर्मशास्त्र	धम्मसात्
परिभोग (खाद्य पदार्थ)	बोरिफोक
क्रीड़ास्थान	क्रीथास्थान
उपभोग	उप:फोक
शीलधर्म	सील:थम्म
लेखगणित	लेखाखनित
प्रवृत्तिशास्त्र (इतिहास)	प्रवतिसात
भूमिशास्त्र	फूमिसात
प्रत्युत्पन्नकाल (वर्तमानकाल)	पच्चुबनकान
अनागतकाल (भविष्य)	अनारखुटकान
अतीतकाल (भूत)	अडीडकान
आचार्य	आचान
विद्यालय	विथ्यालय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

थाई शब्द	थाई उच्चारण
वेला (समय)	वेला
सूचिपत्र	सूचिबत्
प्रकाश (विज्ञापन)	प्रकाट
प्रजाजन	प्रछाछोन
आजीविका	आछीव
पंडित	वंडित
गुरु	खरु
आर्यजन (सभ्य लोग)	आर्यछुन
चक्रयान (साइकिल)	चकयान

थाई भाषा के पारिभाषिक शब्द तो और भी अधिक सरल, सुस्पष्ट और सार्थक हैं। जिस समय भारत सरकार की व्यवस्था के अन्तर्गत हिन्दी के पारिभाषिक शब्द गढ़े जा रहे थे, उस समय डा० रघुवीर ने थाई-भारत संस्कृति आश्रम, बैंकाक के द्वारा थाई पारिभाषिक शब्दों की सूची अवलोकनार्थ मँगायी थी। किन्तु ऐसा लगता है कि उक्त कार्य में उसका कोई विशेष उपयोग नहीं किया गया। यद्यपि कुछ पारिभाषिक शब्दों का उल्लेख पहले किया जा चुका है, उनके अतिरिक्त अग्रलिखित शब्द और प्रस्तुत हैं:—

थाई शब्द	थाई उच्चारण
विद्युतयान (लिफ्ट)	विथ्यूयान
राजदूत	राछथून
राष्ट्रमंत्री (मंत्री)	रथ्यमोंत्री
नायक राष्ट्रमंत्री (प्रधानमंत्री)	नायोक रथ्यमोंत्री
धनागार (बैंक)	थनाखोन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

थाई शब्द	थाई उच्चारण
धनपत्र [नोट]	थनावट
शतांश [रुपये का सवां भाग]	सतांस
प्रभागार [लाइट हाउस]	परफागोन
देशपाल (पातिका)	थेसबान
प्रेषणीय [डाकसेवा]	प्रैसनी
प्रेषणीय पत्र (पोस्टकार्ड)	प्रैसनीबत्
अधिपति (महानिदेसक)	अथिबड़ी
चराचर (ट्रैफिक)	चर्लाचान
दूरशब्द (टेलीफोन)	थोरसप
दूरलेख (तार)	थोरालिख
नालिका (घंटा)	नालिका
नाड़ी (मिनट)	नाथी
विनाड़ी (सेकंड)	विनाथी
विविध बन्धस्थान (संग्रहालय)	फिफिथफंथस्वान
राजनावी (शाही नौसेना)	राछनावी
गणराष्ट्रमंत्री (मन्त्रिमण्डलीय मंत्री)	खनारथ्थमंत्री
प्रकाशनथिपत्र (सर्टिफिकेट)	प्रकासनिवित्त
स्थानीयनगरपाल (थाना)	नखोनबान

संबंधों की प्राचीनता

सबसे अधिक महत्व की बात तो यह है कि थाई लोगों को अपनी भाषा पर बड़ा गर्व है तथा यही वहाँ के समस्त राजकाज और सामाजिक जीवन की एकमेव भाषा है। थाई लोग—यहाँ तक कि अनेक विद्वान् भी यही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

समझते हैं कि उनकी भाषा किसी अन्य भाषा से प्रभावित नहीं, अन्य कोई भाषा ही इससे प्रभावित हो सकती है। इस प्रकार की भावना तथा थाई-संस्कृत का अद्भुत साम्य यह सिद्ध करता है कि दोनों देशों के सम्बन्ध चार-छः शताब्दियों के ही नहीं बल्कि उससे भी कहीं अधिक पुराने—यहाँ तक कि ईसा सन् के पूर्व के भी हो सकते हैं। वैसे बैंकाक के निकट खुदाई में एक मूर्ति मिली थी जो भारतीय मूर्ति-कला की अमरावती शैली की लगती है और उसकी प्राचीनता लगभग ईसा की दूसरी शताब्दी से सम्बन्धित होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त पंचबुरी के निकट यक्षिणी की एक मूर्ति मिली है जो चौथी शताब्दी की मानी जाती है। इसके बाद के ऐतिहासिक सम्बन्धों का भी पता चलता है किन्तु क्रमबद्धता के साथ नहीं। १३ वीं शताब्दी के बाद तो यहाँ भारतीय उपनिवेश विद्यमान होने के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। फिर वर्तमान शताब्दी में आकर दोनों देशों के बीच एक सुदृढ़ सांस्कृतिक कड़ी जुड़ी और इसके निमित्त बने स्व० स्वामी सत्यानन्द पुरी, जिन्हें महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने थाईलैण्ड जाने को प्रेरित किया था। इसके पूर्व महाकवि ने दक्षिण-पूर्व और सुदूर पूर्व की यात्रा की थी और उस यात्रा में ही तत्कालीन थाई नरेश ने उनसे एक भारतीय विद्वान् भेजने का निवेदन किया था। स्वामी जी वर्तमान शताब्दी के तीसरे दशक में थाईलैंड आये, यहाँ की भाषा सीखी, सभी महत्वपूर्ण थाईग्रन्थों का अध्ययन किया और फिर उनका अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया। उन्होंने कुछ भारतीय धर्म-ग्रन्थों का भी थाई में अनुवाद किया तथा संस्कृत भाषा के प्रचार पर बल दिया। इन्होंने ही १९४० ई० में बैंकाक में थाई-भारत संस्कृति आश्रम की स्थापना की जो दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक सम्बन्धों को बढ़ाने में सबसे अधिक सहायक बना। उस समय से आज तक यह आश्रम अपने महत्वपूर्ण कार्यक्रम में लगा है तथा इस विदेश में संस्कृत और हिन्दी के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

प्रचार को बढ़ावा दे रहा है। वर्तमान संचालक पं० रघुनाथ शर्मा स्वयं अपने कार्यकर्ताओं के साथ यहाँ रोजाना इच्छुक थाईवासियों को संस्कृत और हिन्दी पढ़ाते हैं। इस देश में स्वामी सत्यानन्द पुरी के महत्व का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि द्वितीय महायुद्ध के समय एक सम्मेलन में भाग लेने के लिए जापान जाते समय जब वे विमान दुर्घटना में स्वर्गवासी हो गये तो सारा थाईलैण्ड मानों शोक-सागर में डूब गया हो। उस समय तत्कालीन थाई प्रधानमन्त्री ने स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा था—"स्वामी जी भगवान बुद्ध के बाद थाईलैण्ड को भारत की सबसे महत्वपूर्ण देन थे।"

पिता और पुत्र

एक बार श्री नेहरू शांतिनिकेतन गये। वहाँ एक कार्यक्रम में उपस्थित थाई छात्र से उनकी औपचारिक ढंग से बातें होने लगीं। जब नेहरू जी ने उस छात्र से पूछा कि उसे भारत में कैसा लग रहा है, तब उसने चट से उत्तर दिया कि इस देश में आना तो उसके लिए सौभाग्य की बात है, क्योंकि यह देश उसकी 'दादी-भूमि' (ग्रैण्डमदर लैण्ड) है। इस पर नेहरूजी ने साश्चर्य पूछा—"भाई, भारत तुम्हारी दादी-भूमि कैसे हुआ?" तो उसने बताया—"थाईलैण्ड मेरी पितृभूमि [फादरलैण्ड] है और भारत थाईलैण्ड के लिए माता के समान है, इसलिए भारत हमारे लिए दादी-भूमि (ग्रैण्डमदर लैण्ड) हुआ।" इस पर नेहरू जी सहित सभी उपस्थित व्यक्ति हँस पड़े और बात वहीं-की-वहीं रह गयी।

किन्तु वस्तुतः वह छात्र केवल अपनी भावना ही नहीं व्यक्त कर रहा था, बल्कि अपने देश के एक बड़े वर्ग की भावना को प्रकट कर रहा था। स्व० नेहरू जी से ही स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद थाईलैण्ड के एक प्रधान मन्त्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

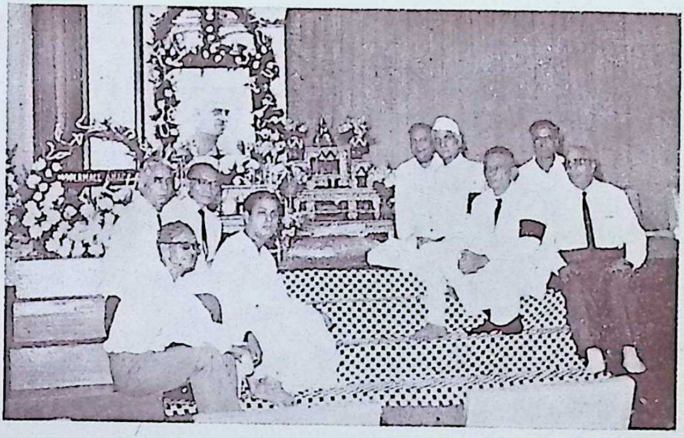

थाइलैण्ड की राजधानी बैंकाक में नेहरूजी के निधन के बाद सत्रहीं मनायी गई। उस अवसर पर थाई-भारत कल्चरल लॉज के संचालक पं० रघुनाथ शर्मा (गांधी टोपी) तथा लॉज के अन्य कार्यकर्त्ता।

✣

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

ने कहा था—'भारत और थाईलैण्ड के सम्बन्ध क्रमशः पिता और पुत्र के सम्बन्ध हैं और वे भारत से पिता की छत्रछाया के ही इच्छुक हैं।' किन्तु दुर्भाग्य से हमारी विदेश नीति ने कभी भी इस प्रकार के आदर्शवादी या सांस्कृतिक और धार्मिक तत्वों को अपना आधार नहीं बनाया। अतएव दक्षिण-पूर्वी एशिया लगभग पूर्णरूपेण अपना होने के बाद भी अपेक्षित मात्रा में अपना न रह सका, क्योंकि इस क्षेत्र के देशों को तो धर्म और संस्कृति ही भारत से मिलाती थी जिसकी उपेक्षा कूटनीति में भी नहीं की जा सकती थी।

और थाईलैण्ड को तो चाहिए ही थी किसी-न-किसी बड़े राष्ट्र की छत्रछाया। इसी कारण उसने सुदूर-स्थित अमेरिका का दामन पकड़ा और और आज थाईलैण्ड संसार में अमेरिका का एक सबसे महत्वपूर्ण और विश्वस्त गढ़ बना हुआ है। अब नवीन सम्बन्ध प्रमुख बन गए हैं और पुराने सम्बन्ध गौण। नई पीढ़ी भी नवीन सम्बन्धों को ही जानती और मानती है। जब कि कभी एक जमाना वह था कि थाईलैण्ड के नगर या ग्राम में यदि कोई भारतीय पहुँच जाता था तो वहाँ के लोग उसका स्वागत एक देवता की भाँति करते थे, क्योंकि वह भारत का है, जहाँ उनके इष्टदेव भगवान बुद्ध पैदा हुए थे। अब भी थाईलैण्ड में कुछ ऐसे लोग अवश्य हैं जो भारत के प्रति उसी प्रकार की भावना रखते हैं किन्तु उनकी संख्या बहुत कम है और उनकी पीढ़ी अब अपने जीवन के संध्याकाल में है।

ललित कला में साम्य

थाईलैंड की नृत्य, वाद्य आदि कलाओं में भारत से बहुत कुछ समानता है। थाई में शास्त्रीय नृत्यों को देखते ही दक्षिण भारत के नृत्यों की याद आ जाती है। इतना ही नहीं, बल्कि यहाँ की विभिन्न नृत्य शैलियों में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

रामायण के अनेक प्रसंग आते हैं। अनेक वाद्ययंत्र भी भारत से मिलते-जुलते हैं। किन्तु दुर्भाग्य से आजकल अपेक्षित मात्रा में दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान न होने से भारतीय शैली के नृत्य यहाँ नहीं सिखाये जाते जब कि अनेक नृत्य और नाटक प्राचीन भारत के तत्सम्बन्धी शास्त्र पर ही आधारित हैं। मैं थाईलैंड के सर्वप्रमुख नृत्य विद्यालय में गया। वहाँ जाने पर पता चला कि थाई पाश्चात्य बाली आदि नृत्य तो सिखाये जाते हैं किन्तु भारतीय नहीं—सिर्फ इसलिए नहीं कि उन्हें अध्यापक उपलब्ध नहीं। इसे सांस्कृतिक सम्बन्धों के प्रति जागरूकता का अभाव ही कहा जायगा। हमें इस ओर विशेष सतर्क रहने की आवश्यकता है।

शिष्टाचार

थाई निवासी हाथ जोड़कर ही परस्पर अभिवादन करते हैं। छोटा अभिवादन करते समय बड़े के सामने नतमस्तक हो जाता है। बौद्ध भिक्षु समाज में श्रेष्ठ होने के कारण उसे लोग हाथ जोड़कर, नतमस्तक होकर अथवा यदि वह बैठा हुआ है तो उसके चरणों के सामने हाथ जोड़कर और उस पर माथा टेक कर अभिवादन करते हैं। 'नमस्कान' भी कहते हैं। अभी भी यहाँ अनेक घरानों में छोटे लोग अपने बड़ों के सामने जाते समय थोड़ी दूर घुटनों के बल चल कर जाते हैं और फिर नतमस्तक होकर प्रणाम करते हैं।

नवीनता के दर्शन

थाईलैण्ड के नगर और गाँव—दोनों बहुत मोहक हैं। इसका कारण है वहाँ की स्वच्छता, सुरुचि और सौन्दर्य। उस देश में सफाई का बहुत आग्रह है, सुरुचि वहाँ के निवासियों का स्वभाव है और सौन्दर्य उन्हें ईश्वरीय देन है। थाई लोगों के रहन-सहन, खान-पान, रुचि आदि की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

एक मुसाफिर : एक दुनिया--

आधुनिक नगरी 'बैंकांक' का एक प्रमुख बाजार।

✣

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

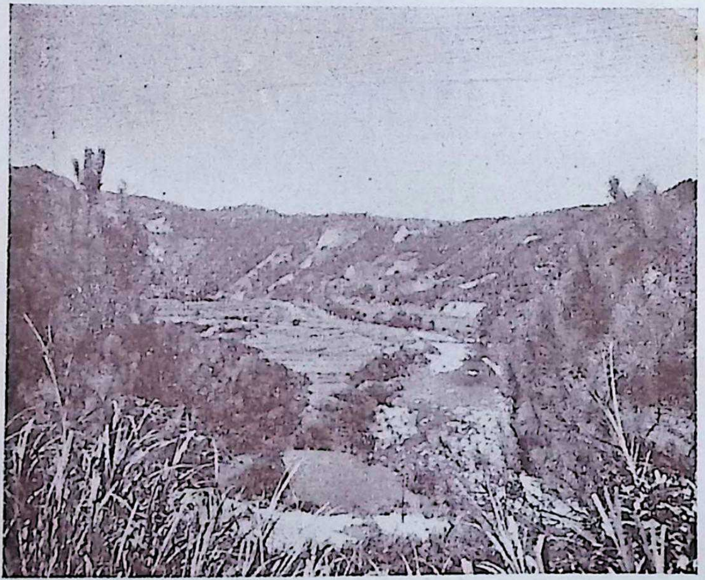

'थाईलैण्ड का कश्मीर'—चेंगमाई। इसका यही सौंदर्य कश्मीर का स्मरण कराता है।

✣

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दृष्टि से नगर और ग्रामों में कोई विशेष अन्तर नहीं होता। वहाँ का महिला वर्ग बहुत उन्नतिशील और प्रगतिशील है। अधिकांश दूकानों पर बिक्री करनेवाली महिलाएँ ही मिलेंगी। थाई लोगों का जीवन हँसी-खुशी और मनोरंजन से भरपूर है—अच्छा पहनना और मस्त रहना, जैसे कल की उन्हें कोई चिन्ता ही न हो। इसीलिए उनका स्वास्थ्य और सौन्दर्य अपेक्षाकृत अधिक स्थायी रहता है। और खाने की न पूछिए—मुझे तो कभी-कभी ऐसा लगा कि जैसे ये दिन भर और रात में काफी देर तक खाते ही रहते हैं। बैंकाक तथा कुछ अन्य नगरों में मुझे अन्य चीजों की दूकानों की अपेक्षा खाने-पीने की दूकानें अधिक दिखाई दीं।

थाईलैण्ड में नाइट-क्लबों, साकी से युक्त मदिरालयों आदि आमोद-प्रमोद के केन्द्र भी इफरात से पाये जाते हैं—केवल महानगरों में ही नहीं, छोटे-छोटे कस्बों तक में। यह सब कुछ तो थाई लोगों के वर्तमान जीवन-दर्शन का द्योतक है और ज्यादा इसे अमेरिकी प्रभाव ही माना जा सकता है। क्योंकि इनका वर्तमान जीवन अमेरिकनों और चीनियों से बहुत प्रभावित है। भारत से प्रभावित तो इनका बस प्राचीन जीवन ही था जो अब इतिहास की बात बन चुका है।

राष्ट्रभाषा का आग्रह

मैंने एक और बहुत अच्छी बात इनमें पाई। थाई लोगों में अपनी भाषा का आग्रह बहुत है और इसके लिए वे गर्व का अनुभव करते हैं। इस देश में पूरी तरह से थाई भाषा ही चलती है। कुछ बड़े-बड़े अधिकारियों और नेताओं को छोड़कर बाकी लोगों को अंग्रेजी नहीं आती है और इसके कारण इनमें हीनता की भावना कहीं नहीं है। मुझे पता है कि कुछ उच्च

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पदस्थ लोगों को भी अंग्रेजी नहीं आती। थाईलैण्ड में केवल दो अंग्रेजी दैनिक पत्र निकलते हैं जिनका प्रसार भी बहुत कम है।

थाईलैण्ड में नरेश परम्परा आज भी अपनी पूर्णता के साथ है। नरेश को मनुष्य के रूप में दूसरा भगवान माना जाता है। वह थाई-प्रजा की समस्त श्रद्धा और निष्ठा का जीवित केन्द्र माना जाता है। यद्यपि विगत अनेक वर्षों से यहाँ सैनिक शासन है, फिर भी देश का जन-जीवन इतना सामान्य है कि सैनिकशाही की बू भी कहीं नहीं आती। वैसे प्रधान-मन्त्री सेनाधिकारी ही हैं।

थाईलैण्ड चूँकि गृह-युद्ध से झुलसते हुए, सैनिक गुटों के बीच टकराते हुए और साम्यवादी प्रसार से भयभीत हुए दक्षिण-पूर्वी एशिया में स्थित है, इसलिए उसपर सुरक्षा-व्यवस्थाओं का दबाव अधिक है। किन्तु अमेरिका की छत्रछाया प्राप्त करने और 'सीटो' नामक सैनिक संधि का सदरमुकाम बन जाने के कारण मुख्य दायित्व के बारे में उसकी चिन्ता नहीं। फिर भी एक ओर साम्यवादी चीन की मनुहार पर 'हाँ-नहीं' करते हुए बर्मा तथा दूसरी ओर उसी चीन से नया रिश्ता कायम करने वाले कम्बोडिया से घिरे होने के कारण थाईलैंड को अपनी सुरक्षा के लिए सदैव जागरूक रहना पड़ता है। साथ ही उत्तर में गृह-युद्ध से झुलसते लाओस की स्थिति होने के कारण भी थाईलैंड और कम्बोडिया का परस्पर वैमनस्य परम्परागत चला आ रहा है। इस समय भी दोनों देशों के बीच कूटनीतिक सम्बन्ध नहीं हैं। अमेरिका ने बैंकाक के अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डे को विश्व के कुछ विशालतम हवाई अड्डों में से एक बनाने में योगदान दिया है। हवाई अड्डा ही क्या, थाईलैंड के सम्पूर्ण नवनिर्माण में अमेरिका की अत्यन्त सक्रिय रुचि है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रकृति की उदारता : मन की निश्चिन्तता

पहले ही कह चुका हूँ कि थाईलैंड प्राकृतिक वैभव और समृद्धि से युक्त देश है। प्रकृति का यह वैभव और समृद्धि केवल उसके सौन्दर्य के रूप में ही परिलक्षित नहीं है, बल्कि उसकी भौतिक सम्पत्ति के रूप में भी है। यहाँ के लोग बहुत सुन्दर, सुशील और सुसंस्कृत होते हैं। साथ ही उन पर प्रकृति की जो दूसरी कृपा है वह है चावल, फलों आदि की अधिकता। थाईलैंड दक्षिण-पूर्व का एक प्रमुख चावल-उत्पादक देश है।

वैसे तो यह देश मुख्य रूप से चावल-उत्पादक के रूप में प्रसिद्ध है किन्तु जो वस्तुएँ यहाँ नहीं भी होती हैं, उनके लिए इसे किसी प्रकार की चिन्ता नहीं है। खाद्यान्न के मामले में यह आत्मनिर्भर है ही, रही कल-कारखानों में निर्मित होने वाले सामानों की बात, सो जापान, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन आदि देशों ने यहाँ के बाजारों में अपने सामान जैसे पाट रखे हों। आयात किये हुए यह सामान यहाँ अपेक्षाकृत सस्ते भी पड़ते हैं। थाई लोग इनका खूब उपभोग करते हैं। उन्हें इस बात की चिन्ता नहीं कि इन आयात की वस्तुओं के अधिक उपभोग से उनकी अर्थ-व्यवस्था पर कोई विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

थाईलैंड का कश्मीर

बैंकाक से ५०० मील दूर स्थित चेंगमाई 'थाईलैंड का कश्मीर' कहा जा सकता है। थाईलैंड आने वाले विदेशी भ्रमणार्थी बैंकाक के साथ-साथ चेंगमाई देखना भी नहीं भूलते, जो स्वास्थ्यप्रद जलवायु, स्वादिष्ट फलों और सुन्दर स्त्रियों की भूमि है। इस पर्वतीय स्थल की जलवायु भारत से बहुत मिलती-जुलती है। साथ ही चेंगमाई अपनी कला और संस्कृति के लिए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

भी प्रसिद्ध है। चेंगमाई के शास्त्रीय नृत्य पूरे थाईलैंड में प्रसिद्ध हैं। इनमें राम-कथा के अनेक प्रसंग प्रदर्शित किये जाते हैं।

भारत के लिए इस देश का विशेष महत्व इस दृष्टि से है कि सहस्रों वर्षों से दोनों देश धर्म, संस्कृति, भाषा आदि के द्वारा निकट रहे हैं, एक रहे हैं। यह निकटता और एकता आज भी विद्यमान है, किन्तु आवश्यकता है उसे निखारने की और उज्ज्वल बनाने की। दक्षिण-पूर्वी एशिया के अशांतग्रस्त क्षेत्र में स्थायी शांति और सद्भावना के लिए यह प्राथमिक आवश्यकता है।

————

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

३

शत्रु के शत्रु देश फारमोसा में

जब मैं थाई भारत संस्कृति आश्रम, बैंकाक के निमन्त्रण पर बर्मा होता हुआ वहाँ जाने के लिए तत्पर हुआ तो मेरे मन में कहीं यह दबी हुई इच्छा थी कि इस बार फारमोसा की यात्रा भी करता चलूँ—यह कैसे सम्भव हो सकेगा, इस पर अधिक विचार नहीं किया था। फारमोसा क्यों, यह प्रश्न मस्तिष्क में उठ सकता है। यह इसलिए कि मैं ऐसा समझता हूँ कि भारत की विदेश नीति की अनेक विडम्बनाओं में फारमोसा सम्बन्धी भी एक विडम्बना रही है। फारमोसा में कम्युनिस्ट चीन सरकार की विरोधी सरकार १९४९ ई० से च्यांगकाई शेक के नेतृत्व में चल रही है जब उन्हें (च्यांग) कम्युनिस्ट शक्ति की वृद्धि के कारण चीन की मुख्य भूमि छोड़कर यहाँ आ जाना पड़ा था। तब से दोनों चीनी सरकारें चल रही हैं और दोनों ही चीनियों की वास्तविक प्रतिनिधि सरकार होने का दावा करती हैं।

सन् १९४९ तक, जब तक च्यांगकाई शेक चीन के मुख्य प्रदेश के भी राष्ट्रपति थे, भारत सरकार ने उन्हें मान्यता दी किन्तु जब वे फारमोसा आ गये और वहाँ अपनी चीनी सरकार की स्थापना की तो भारत ने उनकी मान्यता समाप्त करके उसे पेकिंग स्थित कम्युनिस्ट चीन सरकार को दे दिया। भारत सरकार के इस निर्णय के औचित्य पर कोई भी शंका नहीं प्रकट कर सकता—यह पूर्णतः उचित था किन्तु च्यांगकाई शेक—जैसे भारत के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मित्र और भारतीय स्वतन्त्रता के समर्थक से, तथा उनके नेतृत्व में चीन की शेष जनता से भी, गैर कूटनीतिक सम्बन्ध पूर्णत: समाप्त कर देने का आखिर क्या औचित्य था, यह अवश्य एक विचारणीय प्रश्न है। यदि पश्चिमी जर्मनी को कूटनीतिक मान्यता देने के बावजूद हम पूर्वी जर्मनी से व्यापारिक तथा अन्य सम्बन्ध रख सकते हैं तथा दोनों उत्तर और दक्षिण वियतनाम से भी हम सम्बन्धों का निर्वाह कर सकते हैं तो दो चीन सरकारों के अस्तित्व को स्वीकार करने में कौन-सी अड़चन थी—मुख्य मान्यता कम्युनिस्ट चीन सरकार की ही रहती। किन्तु ऐसा लगता है कि इसके पीछे यथार्थ दृष्टिकोण के वजाय भय की भावना अधिक थी। हमें शायद भय था कि यदि च्यांग काई शेक और उनकी चीनी जनता से गैर कूटनीतिक सम्बन्ध भी रखा तो कहीं कम्युनिस्ट चीन सरकार नाराज न हो जाय—उसी प्रकार जैसे हमने इसरायल का इसलिए कूटनीतिक तिरस्कार कर रखा है क्योंकि यह अरब देशों की भावना के अनुरूप है।

खैर इस बात को यहीं छोड़िये—भूमिका जरा लम्बी हो गयी, यद्यपि आवश्यक थी। मुझे पत्रकार के रूप में और भारत के शुभचिंतक निवासी की हैसियत से च्यांगकाई शेक और उनके देश के प्रति अपना उपेक्षा भाव सदैव से खलता था और कम्युनिस्ट चीन के आक्रमण के बाद से तो कभी-कभी मेरा भावुक हृदय यह सोचने लगा कि कहीं इस आक्रमण के रूप में किया गया मित्रघात हमारे द्वारा ही अनजाने में या मजबूरी में किये गये किसी अन्याय का फल तो नहीं। यदि यह विचार केवल भावुकता की ही बात मान ली जाय तो भी मैं अकेला इसका शिकार नहीं हुआ हूँ। राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने भी एक बार चीनी आक्रमण को भारत द्वारा तिब्बती स्वतन्त्रता के हरण के समय चुपचाप बैठे रहने के पाप का फल बताया था। सच तो यह है कि यह भावुकता नहीं, वल्कि राजनैतिक या कूटनीतिक क्षेत्र में नैतिकता का विचार है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

और यदि फारमोसा के सम्बन्ध में इस भावुकता या नैतिकता का न भी विचार किया जाय, तो भी कूटनीति का आधारभूत और यथार्थवादी सिद्धान्त यह कहता है कि शत्रु का शत्रु हमारा मित्र है। चाणक्य-जैसे भारत के शीर्षस्थ कूटनीतिक आचार्य ने इस सिद्धान्त का बहुत प्रभावी ढंग से प्रतिपादन किया है। इसीलिए साम्यवादी चीनी आक्रमण के बाद देश का एक बड़ा वर्ग ऐसा अनुभव करने लगा कि च्यांग के देश से किसी-न-किसी प्रकार का हमारा सम्बन्ध स्थापित होना चाहिए। कम-से-कम दोनों देशों की जनता का सीधा सम्बन्ध स्थापित होने में क्या हर्ज है—आखिर फारमोसा वहाँ की जनता, चीन और वहाँ की जनता की ही अंग है। जिस प्रकार हम कभी-कभी यह कहते हैं कि हमारी शत्रुता तो चीन के आक्रमण-कारी शासकों से है वहाँ की जनता से नहीं, तो क्या हम यह नहीं समझ सकते कि हमारी मित्रता तो फारमोसा स्थित चीनी जनता से है। वहाँ की सरकार कोई भी हो।

तो यही एक विचार था जिसने मुझे फारमोसा जाने को प्रेरित किया था और शायद सबसे बड़ा कारण यह था कि हमारे अधिकांश भारतीय पत्रकार बन्धुओं ने भी फारमोसा को एक प्रकार से बट्टे खाते में रख दिया था, इसीलिए मैं इधर और भी आकर्षित हुआ। जब मैं थाईलैण्ड में आया तो सौभाग्य से उसका फारमोसा सरकार के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध पाया। अतएव मैं राष्ट्रवादी चीन के राजदूत से यह जानने के लिए मिला कि मेरा किसी प्रकार फारमोसा जाना हो सकता है या नहीं, उनकी सरकार मुझे अनुमति देगी या नहीं। उनसे तथा उनके अन्य प्रमुख अधिकारी से बात करने पर ऐसा लगा कि शायद उनकी सरकार मुझे अनुमति दे दे। यद्यपि उन्होंने निश्चित रूप से दो सप्ताह बाद सूचना देने को कहा।

अब उससे भी बड़ा प्रश्न मेरे सामने था—फारमोसा जाने-आने का ६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हजार टिक़ल (थाई सिक्का) किराया कहाँ से जुटाया जाय क्योंकि मुझे विदेशी विनिमय मुद्रा के नाम पर एक पैसा भी नहीं मिला था। फिर भी कुछ भाग्यवादी अथवा भगवान पर भरोसा करनेवाला होने के कारण मैं निश्चिन्त था और सोच रखा था कि यदि फारमोसा जाने की अनुमति (वीसा) मिल गयी तो किराये की कोई-न-कोई व्यवस्था कर ही लूँगा। दूसरा प्रश्न था, फारमोसा में ठहरने, खाने-पीने और घूमने आदि के व्यय के बारे में। इसके लिए यह व्यवस्था करने का प्रयास किया था कि फारमोसा स्थित बौद्ध संघ का अतिथि बनूँ क्योंकि वहाँ के बौद्ध भिक्षु एक बार भारत यात्रा पर आ चुके थे और एक भारतीय को अपने यहाँ पाकर वे कुछ प्रसन्न ही होते। (किन्तु दो सप्ताह बीत गये और दो में से एक भी प्रश्न हल नहीं हुआ। इस बीच मैं बैंकाक से बाहर चला गया। लौटकर आया तो एक बड़े लिफाफे में अपनी डाक मिली। डाक के सब पत्र जब मैं पढ़ चुका और उसके बाद भी कुछ समय बीत जाने पर जब सफाई के लिहाज से वह लिफाफा फाड़कर रद्दी की टोकरी में फेंकने लगा तो यूँ ही प्रकाश की ओर उसे करके बाहर से ही देखा--अनजाने में ही यह जानने के लिए कि इसमें कहीं कुछ और तो नहीं। इस प्रकार देखने पर मुझे ऐसा लगा कि उसमें कागज़ का टुकड़ा और है। उसे निकाल कर देखा तो पता चला कि मुझे थाईलैंड स्थित दूतावास के प्रेस सम्बन्धी अधिकारी ने याद फरमाय है। दूसरे दिन जब उनसे मिलने गया तो उन्होंने कहा कि आपको फारमोसा सरकार ने आने की अनुमति दे दी है क्या आप तुरन्त वहाँ जा सकते हैं? मैंने इस पर उनसे कहा कि जा तो सकता हूँ किन्तु अभी जाने की व्यवस्था करनी है। तब उन्होंने बताया कि मुझे किसी प्रकार की चिंता करने की जरूरत नहीं। उनकी सरकार के सूचना विभाग ने मुझे फारमोसा(चीनी नाम तेवान) आने का निमन्त्रण दिया है। साथ ही उन्होंने यह भी पूछा,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

क्या मैं तुरन्त फारमोसा के लिए प्रस्थान कर सकता हूँ क्योंकि भारतीय संसद सदस्यों तथा अन्य प्रमुख व्यक्तियों का एक दल एक दिन पहले ही वहाँ पहुँच चुका है अतएव तुरन्त जाने पर मेरा कुछ कार्यक्रम उनके साथ बन सकता है। मेरे लिए अब असुविधा या आपत्ति ही क्या हो सकती थी— एक घण्टे में वीसा (अनुमति पत्र) और हवाई जहाज के टिकट की व्यवस्था हो गयी और मेरा फारमोसा प्रस्थान करने का कार्यक्रम बन गया। मैं ईश्वर और अपने गुरुजनों का भक्त हूँ अतएव इस अनपेक्षित लाभ को मैंने उनकी ही कृपा का प्रसाद मान लिया। और इसके साथ ही भारत के किसी विधिवत् निमन्त्रित पत्रकार की च्यांग सरकार के फारमोसा की प्रथम यात्रा शुरू हुई।

वह अनजाना देश

बैंकाक से मैं 'पान अमेरिकन' विमान से रवाना हुआ। इससे मुझे हांगकांग तक आना था और वहाँ से एक चीना कम्पनी के विमान 'कैट' से तापेह पहुँचना था। हांगकांग में मेरे पास ३॥ घण्टे का समय था। सोचा बाहर निकलकर कुछ देखा जाय और यथासम्भव किसी भारतीय बन्धु से मिला जाय। सौभाग्य से बाहर निकलते ही कुछ दूर पर एक भारतीय बन्धु दिखाई पड़े। मैं लपक कर उनके पास गया तथा मेरे पास विनयशीलता का जितना स्टाक था सब उनके समक्ष उड़ेलते हुआ बोला—'क्या आप भारत के हैं?' तब उन्होंने अत्यन्त लापरवाही से 'हाँ' कह दिया। मैंने भी तब उन्हें भारतवासी होने का परिचय दिया। किन्तु उन्हें इससे कोई प्रसन्नता नहीं हुई। बल्कि जब उन्हें यह पता चला कि अभी ३-४ घण्टे में मुझे दूसरे विमान से आगे जाना है तो उन्होंने मुझे बुजुर्गाना डाँट पिलाते हुए कहा 'आप हवाई अड्डे से बाहर क्यों चले आये, इतने समय में आप यहाँ क्या देख लेंगे, रास्ता भूल जाने पर गड़बड़ हो जायगा और हवाई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जहाज छूट सकता है' आदि आदि । यह सब कहकर वे चले गये । मैं भी उनकी सलाह मानने में असमर्थ रहा । थोड़ी देर बाद मुझे आकाश में एयर इण्डिया का विमान आता हुआ दिखाई पड़ा । मैंने सोचा कि इसमें शायद कोई भारतीय आया हो अथवा उसे लेने ही कोई स्थानीय भारतीय आया हो । अतएव मैं हवाई अड्डे वापस आ गया । संयोग से वहाँ मुझे कई स्थानीय भारतीय दिखाई पड़े जो वहाँ के अत्यन्त सम्पन्न व्यापारी थे । मैंने ५-६ भारतीयों से परिचय किया किन्तु किसी को यह जानकर कोई प्रसन्नता नहीं हुई कि मैं भारत से आ रहा हूँ । यद्यपि मैंने जब किसी भारतीय को देखा, मन पुलक उठा । लेकिन मेरा दुर्भाग्य था कि यह पुलकन और स्नेह एकतरफा रहे । मैंने प्रयास किया कि अब किसी ऐसे भारतीय को ढूँढ़ूँ, जो सम्पन्न न हों क्योंकि ऐसे भारतीय से एक भारतीय होने के नाते स्नेह मिलने की सम्भावना अधिक थी । किन्तु मैं उस समय यह सोचने लगा, क्या सम्पन्नता और उच्च शिक्षा हमारे हृदय की संवेदनशीलता और उदात्तता को कम कर देती है ? यद्यपि विदेशों में भी मेरे ऐसे अनेक लोग बहुत अच्छे मित्र बने जो अधिकतम सम्पन्न और उच्चतम शिक्षित हैं किन्तु उन्हें अपवाद ही माना मैंने और इस प्रकार मेरी उपर्युक्त धारणा पत्थर की लकीर की तरह बनी रही जब कि मैं अब भी चाहता हूँ कि मिट जाय, क्योंकि यह एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति की ही द्योतक है ।

खैर छोड़िये, इस अप्रिय अध्याय को । अन्ततः मैं निश्चित समय पर हांगकांग से दूसरे विमान पर बैठा । विमान में बैठा-बैठा सोच रहा था कि बिल्कुल अपरिचित देश होगा, अपरिचित लोग होंगे और अपरिचित वातावरण होगा—ऐसा कि जिसके लिए भारत सरकार कोई जिम्मेदारी नहीं लेती, अतएव यदि कोई हवाई अड्डे पर भी न आया तो रात में कहाँ जाऊँगा और फिर पता नहीं कि किसी भारतीय के बारे में उनका रवैया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कैसा होगा। पता नहीं वे अपने बीच एक नये नये व्यक्ति को पाकर कैसा अनुभव करेंगे—उनका अपना स्वतन्त्र विचार होगा या चीन के अपने शेष बन्धुओं की तरह होगा जिसके नेता सर्वश्री माओ और चाओ हैं। इन्हीं शंकाओं और आशंकाओं के बीच विमान तापेह के अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा। मैं भी अपने सहयात्रियों के साथ उतरने लगा। विमान से लगी हुई आखिरी सीढ़ी पार ही कर रहा था कि एक मीठी-सी आवाज कान से टकरायी—यू आर मि० व्यास (क्या आप श्री व्यास हैं?) यह उत्तर देने के पूर्व ही मैं आश्वस्त हो चुका था—"जी हाँ, मैं ही हूँ।' 'इस देश में आपका स्वागत करता हूँ' वह वाणी थी।

वे स्वागतकर्ता सरकारी सूचना विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी थे। सामान्य औपचारिकता के बाद उन्होंने मुझसे पासपोर्ट आदि लिया तथा हवाई अड्डे की औपचारिकताओं की पूर्ति के बाद हमलोग बाहर कार पर थे। थोड़ी देर के बाद ही वे मेरे अच्छे मित्र बन गये। अब हमारी कार तापेह के एक सर्वप्रमुख होटल के सामने थी।

इन देशों में शाकाहारियों को होटल में ठहरने पर बड़ी कठिनाई होती है क्योंकि ये लोग सभी पशुओं का गोश्त बनाते हैं। किन्तु उक्त अधिकारी के द्वारा होटल कर्मचारियों से बात करने पर निरामिष भोजन की व्यवस्था सम्भव हो गयी थी। सम्पूर्ण व्यवस्था हो जाने के बाद उक्त चीनी अधिकारी जाने लगे और जाने से पूर्व उन्होंने बताया कि वे प्रातः आयेंगे और मुझे साथ लेकर विमान द्वारा प्रायः ३०० मील दूर स्थित उस स्थान पर जायेंगे जहाँ भारत के संसद सदस्यों का पहला प्रतिनिधि मण्डल गया हुआ है। मैं भी प्रतिनिधि मण्डल से मिलने के लिए बहुत उत्सुक था क्योंकि उसमें मेरे कुछ मित्र भी थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रातःकाल उक्त चीनी अधिकारी यथा समय मेरे कमरे में प्रविष्ट हुए और जब हम चाय पीने लगे तो उन्होंने अखबार मँगाया जिसमें एक बहुत खराब खबर थी—वहाँ की हवाई कम्पनी सी० ए० टी० (कैट) का विमान उसी क्षेत्र में ध्वस्त हो गया था जिधर हमें जाना था और उसमें बैठे प्रायः ५७ व्यक्ति समाप्त हो गये थे। इस विमान सेवा की १८ साल के बाद यह पहली दुर्घटना थी जिसने पूरे प्रदेश में सनसनी फैला दी। उन्होंने यह भी बताया कि जब वह हवाई अड्डे पर मुझे लेने गये थे, तभी उन्हें यह समाचार मिल गया था किन्तु उन्होंने उस समय मुझे बताया नहीं। मैंने इस दुर्घटना पर अपनी हार्दिक समवेदना प्रकट की।

थोड़ी देर बाद ही वह मुझसे बोले कि दुर्घटना के बाद यदि मैं विमान से यात्रा न करना चाहता होऊँ तो ट्रेन से व्यवस्था हो सकती है। मैंने कहा—नहीं इसकी कोई आवश्यकता नहीं। हम लोग भगवान पर दृढ़ विश्वास करते हैं और यह भी मानते हैं कि जन्म और मृत्यु—सब उसी के हाथ में है। अतएव यह हमारी चिन्ता का विषय नहीं।

इसके बाद जब मैं होटल के नीचे उतरा और हवाई अड्डे की ओर चलने लगा तो मुझे ऐसा लगा कि जैसे मैं यहाँ के लोगों के लिए दर्शनीय वस्तु बन गया होऊँ। इसका कारण यह था कि मैं धोती और कुर्ता पहने हुए था और यहाँ के लोगों के लिए ये कपड़े अजीबोगरीब थे क्योंकि भारतीयों का यहाँ कोई आवागमन वर्षों से रहा नहीं। हवाई अड्डे पर विद्यमान नर-नारियाँ भी सभी मेरी ओर ही मुखातिब थे। कई लोग तो पास में खड़े होकर देखने लगते। एक अंग्रेज सज्जन से न रहा गया। वे मेरे पास आये और अंग्रेजी में बोले—"आज आप व्यवस्थित कपड़ों में हैं।' मैंने उन्हें इसके लिए धन्यवाद दिया। परिचय करने पर पता चला कि वे भारत में कुछ वर्ष रह चुके हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

राष्ट्रपति और श्रीमती च्यांग काई शेक अपने कुछ अधिकारियों के साथ निर्माण-कार्यों का निरीक्षण करते हुए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

फारमोसा की एक किसान बाला,
जो समृद्धि और स्वच्छता के बीच
मुस्करा रही है।

च्वीमाय द्वीप (फारमोसा) का सामान्य और निश्चिन्त जीवन।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तापेह से चलकर हमारा विमान कुनकुआंग नामक बहुत बड़े सैनिक अड्डे पर रुकता हुआ ताइनान हवाई अड्डे पर पहुँचा। यह हवाई अड्डा भी सैनिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है तथा यहाँ दक्षिण कोरिया, दक्षिण वियत-नाम, थाईलैंड आदि मित्र देशों के सैनिक विमान मरम्मत के लिए आते हैं। इसीलिए जब यह सैनिक अड्डा निकट आया तो विमान में बैठे हुए यात्रियों से खिड़की के पर्दे गिरा देने का आदेश दिया गया। इसके बाद भी सैकड़ों बमवर्षक तथा अन्य आधुनिकतम सैनिक विमान दिखाई पड़ गये।

इसके बाद जब हम निकटवर्ती नगर में टैक्सी से जा रहे थे तो एक बारातनुमा शोभा यात्रा बड़ी धूमधाम से गाजे बाजे के साथ निकली। मैंने समझा कोई शोभा यात्रा होगी किन्तु मेरे साथ के चीनी मित्र ने बताया कि यह शव यात्रा है। लोग विभिन्न गाड़ियों में बड़ी हँसी-खुशी से परिवार सहित जा रहे थे तथा आगे-आगे कई बाजे थे और सजावट के अनेक उपकरण भी। अपने देश में तो इतने मजे से लोग बारातों में ही जाते हैं। साथ ही पता चला कि ये लोग शव को कई दिनों तक रखते भी हैं।

इसके बाद नगर देखने के ख्याल से हम पैदल चलने लगे। लेकिन हमारे भारतीय पहनावे के कारण कई स्थानों पर "ट्रैफिक जाम" की-सी स्थिति आ जाती थी। लोग बहुत घूर कर देखते तो मुझे हँसी आ जाती। यहाँ तक कि दुकानदार बाहर झाँकने लगते।

सायंकाल एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कृषि संस्थान में संसद सदस्यों के प्रतिनिधि मण्डल से भेंट हुई। मुझे तो दो दिन पहले ही प्रतिनिधि मण्डल के बारे में पता लग गया था और मैं उसमें सम्मिलित अपने मित्रों से मिलने के लिए अत्यधिक व्यग्र भी था किन्तु उन्हें यह बिल्कुल ज्ञात न था कि भारत से उनका एक पत्रकार मित्र भी यहाँ आया है। अतएव भेंट होने पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

स्वाभाविक था कि उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। हम लोग दौड़कर गले मिले। विदेश में स्वजनों का मिलना बहुत सुखकर होता है।

इसके बाद से मेरा ३ दिन का कार्यक्रम प्रतिनिधि मण्डल के साथ-ही-साथ रखा गया था। मुझे क्या आपत्ति हो सकती थी और प्रतिनिधि मण्डल को भी क्यों होती। इसमें सरकार की ही नहीं, मेरी भी सुविधा थी। इस समय हम जिस नगर में थे वह औद्योगिक नगर होते हुए भी बहुत स्वच्छ और सुन्दर था। नगर के बीच से गुजरती हुई नदी इसकी शोभा को और अधिक बढ़ाती थी। रात में एक पहाड़ी पर से नगर का दृश्य बहुत अच्छा लगता था। इस नगर में पहली बार फल की दुकान पर फलों को देखकर पता चला कि यहाँ की और भारत की जलवायु बहुत कुछ एक मिलती है क्योंकि फल एक ही प्रकार के थे।

रात्रि को भोजनोपरांत हम लोग टहलने निकले और एक बड़े-से डिपार्टमेंटल स्टोर्स में गये। वैसे चीन, थाईलैंड आदि देशों में दुकानों पर अधिकांश लड़कियाँ और महिलायें ही सामान बेचती हैं किन्तु इस स्टोर्स में सभी लड़कियाँ ही बिक्री करती थीं। हममें से अधिकांश उस समय धोती ही पहने थे अतएव यहाँ भी अजायबघर की तरह का ही हाल होना था। हम लोग जिस काउन्टर पर सामान देखने के लिए खड़े होते, उसी पर अच्छी खासी भीड़ लग जाती। और वे बिक्री करनेवाली बालायें भी अपने ग्राहकों के बजाय हमारे भारतीय स्वरूप की ओर अधिक उन्मुख थी। हम लोग इसका आनन्द ले रहे थे।

सैनिक द्वीप क्वीमाय में

दूसरे दिन हमारी फारमोसा यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम था, जिसकी कम-से-कम मैं बहुत कुतूहल और जिज्ञासापूर्वक प्रतीक्षा कर रहा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

था। हमें क्वीमाय द्वीप जाना था जो राष्ट्रवादी चीन का प्रथम और सबसे शक्तिशाली सैनिक मोर्चा है। यह द्वीप चीन के मुख्य प्रदेश से बिलकुल सटा हुआ है तथा क्वीमाय से कुछ सौ गज की दूरी की भूमि पर ही कम्युनिस्ट चीन की प्राय: एक तिहाई फौज विद्यमान है। यह फौजें आमने सामने विद्यमान हैं, बस समुद्र का एक छोटा-सा हिस्सा दोनोंको अलग करता है जिसे शायद मेरे-जैसा नौसिखिया तैराक भी साहस करने पर पार कर सकता है। मैंने सैकड़ों बार अखबारों में भी पढ़ रखा था कि यहीं दोनों सेनाओं के बीच गोलाबारी होती है। अब आप मेरे कुतूहल का सही अनुमान लगा सकते हैं।

प्रात:काल क्वीमाय रवाना होने के पूर्व जब हम जलपान की टेबिल पर बैठे तो हमारे साथ के एक बन्धु ने मजाक में एक चीनी अधिकारी से पूछा—"अगर हम लोगों के विमान को गिरा कर कम्युनिस्ट चीनी हमें पकड़ ले जायं तो ?" उसने भी उसी लहजे में कहा—"कह दीजियेगा कि अब हम आपके अतिथि हैं।"

इसी प्रकार के हँसी-मजाक के बीच हम क्वीमाय द्वीप के लिए अपने होटल से बाहर निकले। हमें ताइनान के सैनिक अड्डे से एक विशेष सैनिक वायुयान में ही उड़ना था। यथासमय हम हवाई अड्डे पर पहुँच गये। हमारे पहुँचते ही वहाँ से कुछ सैनिक जेट विमानों ने अपनी उड़ानें भरी। हमें पता चला कि शत्रु से हमारी सुरक्षा की पर्याप्त व्यवस्था की दृष्टि से ६ जेट विमान हमारे साथ ही उड़ेंगे।

भगवान का नाम लेकर मैं अपने सैनिक विमान में बैठा और इसके बाद वह उड़ चला। मैंने देखा कि वह समुद्र की सतह के ऊपर निकट ही उड़ रहा था। यहाँ तक कि समुद्र की हर लहर और उस पर उठने वाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हर बुलबुला देखा जा सकता था। हमारा यह विमान मुश्किल से १ हजार फुट की ऊँचाई पर उड़ रहा था जब कि आजकल यात्री जेट विमान ३५ हजार फुट की ऊँचाई पर उड़ते हैं। इतनी नीची उड़ान भी हमारी सुरक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत ही थी ताकि शत्रु उसे उड़ता हुआ देख न सके और न कोई गड़बड़ी कर सके। हमारी सुरक्षा के लिए ऊपर उड़ने वाले दो-एक जेट विमान दिखाई भी पड़ रहे थे। इस पर भी हमें वे उपकरण पहना दिये गये थे जो हवाई छतरीबाजों को उतरने और समुद्र में तैरने के लिए आवश्यक होते हैं। यह सब एक विचित्र प्रकार के आनन्ददायी अनुभव थे।

ताइनान से क्वीमाय प्रायः २०० मील है और एक घण्टे में हम उस सैनिक द्वीप पर पहुँच गये जो कम्युनिस्ट चीन के लिए सबसे बड़ा अवरोध है। इसके पूर्व मार्ग में हमें अनेक छोटे-बड़े सुन्दर द्वीप दिखाई पड़े थे जिन्हें पेसीकाडर्स द्वीप समूह कहते हैं। चूँकि विमान बहुत नीचे उड़ रहा था अतएव इन द्वीपों की शोभा पूर्णतः देखी जा सकती थी और इनमें विद्यमान असीमिति सैनिक उपकरणों का भी अनुमान लगाया जा सकता था। वस्तुतः यह द्वीप समूह राष्ट्रवादी चीन के द्वितीय सैनिक मोर्चे के समान है। इन द्वीपों की आबादी कम है। अधिकांश निवासी किसान और मछुये हैं।

१७८ वर्ग मील क्षेत्र का क्वीमाय द्वीप सशक्त सैनिक किले बंदी का एक अद्भुत नमूना है। अधिकांश प्रदेश पहाड़ी होने के कारण यह अत्यन्त सैनिक महत्व का स्थान बन गया है। इन पहाड़ों के अन्दर न जाने कितनी आधुनिकतम सुरंगें हैं जिनमें आधुनिकतम विध्वंसक शस्त्रास्त्र रक्खे हुए हैं। यहाँ की एक सुरंग को संसार की सबसे बड़ी मानव निर्मित सुरंग बताया गया। निश्चय ही उसमें घूमने पर हमें यह दावा यथार्थ ही लगा। सबसे बड़ी बात यह है कि ये सुरंगें विस्फोट आदि से अप्रभावित कर दी गयी हैं।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

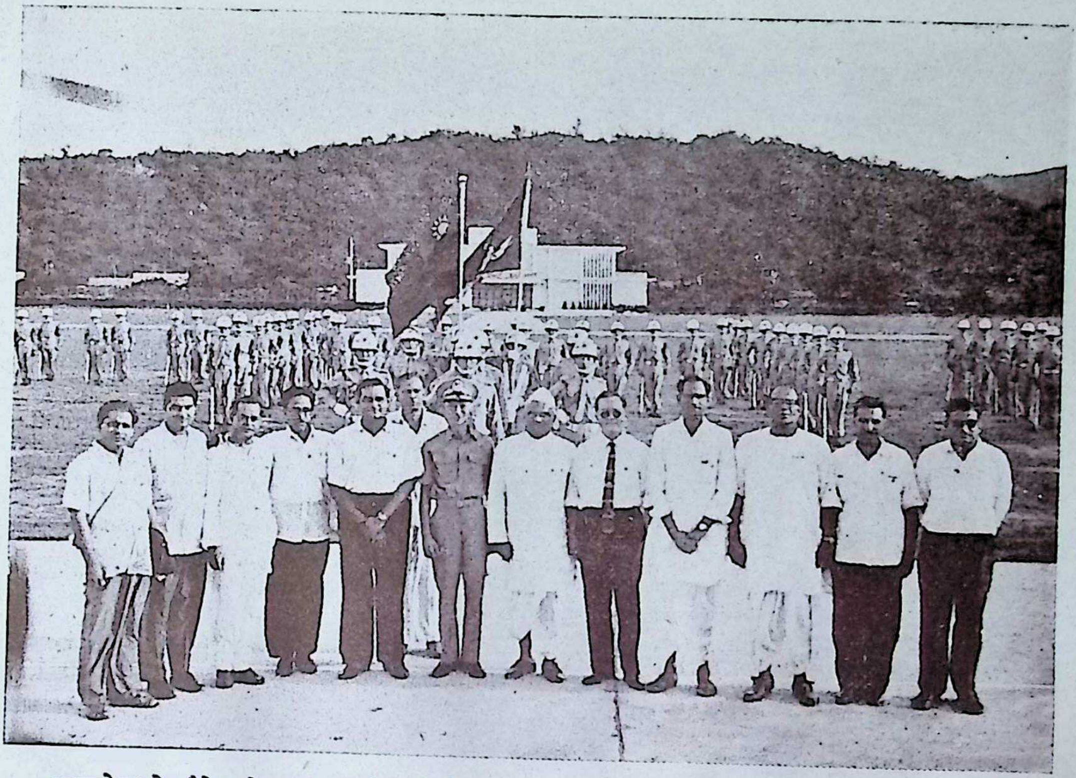

फारमोसा के नौसेना के मुख्य कार्यालय में लेखक तथा कुछ संसद-सदस्य गण (लेखक बायें किनारे पर)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हम प्राय: १०।। बजे दिन में क्वीमाय द्वीप पहुँचे थे और १ बजे तक यहाँ केवल सैनिक मोर्चेबन्दी ही देखते रहे। स्वाभाविक था कि यहाँ की सुदृढ़ सैनिक तैयारियों ने हमें प्रभावित और प्रेरित किया तथा राष्ट्रवादी चीन की सैनिक शक्ति के प्रति भी विश्वास जमाया।

लगभग १ बजे हम भोजन के लिए बैठे। उस समय इस मोर्चे के प्राय: सभी प्रमुख सेनाधिकारी तथा उस कमान के प्रधान सेनापति उपस्थित थे। सौभाग्य से उस दिन दक्षिण वियतनाम के प्रधान सेनापति भी आ गये थे जो उस अवसर पर उपस्थित थे। उनकी यहाँ उपस्थिति अन्तर्राष्ट्रीय महत्व रखती थी।

सभी सेनाधिकारियों ने हमारे देश के प्रति बड़ी सद्भावना प्रदर्शित की और यह भी कहा कि उनकी इस जबरदस्त मोर्चेबन्दी के कारण ही कम्युनिस्ट चीन को अपनी सेना का एक बहुत बड़ा भाग इधर रखना पड़ता है, और वे अपना सारा ध्यान भारत की सीमा की ओर नहीं दे पाते। उनकी कहना था कि इस प्रकार वे सिर्फ अपने लिए ही नहीं लड़ रहे बल्कि भारत के लिए भी—यहाँ तक कि पूरी एशिया के लिए लड़ रहे हैं।

भोजन के उपरान्त हम उस स्थान को देखने गये जहाँ "मनोवैज्ञानिक युद्ध" के उपकरण रखे हुए थे। यह युद्ध दोनों सेनाओं के बीच प्राय: रोजाना चला करता है। इस युद्ध के अन्तर्गत ये लोग नकली बमों और तोप गोलों के द्वारा प्रचार सामग्री—यहाँ तक कि कपड़े—लत्ते तक एक-दूसरे के पास भेजते हैं। प्रचार सामग्री में दोनों ही पक्ष अपनी-अपना श्रेष्ठता का प्रतिपादन करते हैं और एक-दूसरे को बुरा-भला कहते हैं। प्रचार सामग्री का उद्देश्य दूसरी ओर की जनता को प्रभावित करना भी है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उक्त स्थान पर दो कमरे बने हुए थे। एक में इधर से कम्युनिस्ट चीनी प्रदेशों में भेजी जानेवाली सामग्री के नमूने थे और दूसरे में यहाँ आनेवाली सामग्री के नमूने। यहाँ टाट के बने कुछ कपड़े भी रखे थे जिनके बारे में बताया गया कि ऐसे कपड़े ही कम्युनिस्ट शासन के अन्तर्गत चीनी मछुवे और किसान पहनते हैं। वहाँ की आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। ये लोग गुब्बारों द्वारा भी प्रचार कार्य करते हैं। हमें भी सैनिकों ने कुछ गुब्बारे लाकर दिये कि हम उसे उड़ायें जो चीनी मुख्य प्रदेश में पहुँच जायेंगे। हममें से कुछ ने अपने हस्ताक्षर भी उन पर किये। सम्भव है कि यह गुब्बारे कम्युनिस्ट चीनियों तक पहुँच गये हों।

इस द्वीप में हम उस स्थल पर भी गये जो मोर्चे का बिलकुल अग्रिम बिन्दु है। यहाँ दो बड़ी-बड़ी दूरबीनें हैं जिनसे देखने पर चीनी मुख्य प्रदेश के कुछ सैनिक दृश्य बिलकुल साफ दिखाई पड़ते हैं। इस बिन्दु के सामने ३ द्वीप स्पष्ट हैं जिनके नाम क्यायू, शियानेंग और तांगतिंग हैं। ये द्वीप कम्युनिस्ट चीन के अधिकार में हैं। इनमें से क्यायू निकटतम है जो उस बिंदु से केवल २३१० मीटर पर है। यहाँ दोनों ओर से अक्सर गोलाबारी होती है। हमारे जाने के एक दिन पहले भी हुई थी।

क्वीमाय द्वीप में अच्छा नगर भी बसा है। लेकिन यहाँ रहनेवाले लोगों को निश्चय ही बहादुर माना जायगा। वैसे नगर में जाने पर निवासियों का सामान्य और निश्चिन्त जीवन देखकर ऐसा नहीं लगता कि वे संसार के प्रमुख शक्तिशाली और प्रथम सैनिक मोर्चे के निवासी हैं। नगर में अच्छी सड़कें हैं, बाजार हैं, पक्के घर बने हैं, स्कूल, अस्पताल और यहाँ तक कि सिनेमाघर भी हैं। यहाँ लड़कियाँ परस्पर गले में हाथ डालकर घूमती हुई देखी जा सकती हैं और बालकगण भी उसी प्रकार हँसते-खेलते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दिखाई पड़ते हैं। यहाँ की मुद्रा तैवान से कुछ भिन्न है क्योंकि वहाँ के मुद्रा बैंक का यहाँ नियन्त्रण नहीं है।

३ वजे अपराह्न हम उसी विमान से ताइनान के लिए रवाना हो गये। इस बार सुरक्षा की कोई विशेष व्यवस्था नहीं की गयी थी, यद्यपि विमान पूर्ववत् समुद्र सतह के निकट ही उड़ रहा था। इस प्रकार क्वीमाय की अत्यन्त रोचक और कुतूहल मिश्रित यात्रा का अन्त हुआ।

शत्रु की गुप्त सूचनाएँ

क्वीमाय के सैनिक क्षेत्र से लौटकर सायंकाल हम जोपिंग स्थित राष्ट्रवादी चीन का प्रथम नौसैनिक केन्द्र देखने गये जो तेवान में सबसे बड़ा है। यहाँ नौसैनिकों का प्रदर्शन और सलामी का कार्यक्रम बहुत आकर्षक और रोचक था।

रात्रि में काउसंग नगर में ही ठहरे। यह बहुत सुन्दर और आकर्षक नगर है। दूसरे दिन हमें राजधानी तापेह वापस लौटना था जो यहाँ से २८० मील पर थी। हमें विमान से जाना था किन्तु पूर्ववर्णित दुर्घटना ने उस कम्पनी के सभी विमानों की परीक्षा हेतु ३ दिन के लिए उड़ानें स्थगित कर दी थीं। अतएव हमें अपनी एयरकंडीशन बस का सहारा लेना पड़ा। पहले तो इस मजबूरी पर कुछ खीझ आना स्वाभाविक था किन्तु बाद में ऐसा लगा कि बस की यह यात्रा जो पूरे फारमोसा को दक्षिण से उत्तर तक ढंकती थी, बहुत उपयोगी रही। इस यात्रा में हम फारमोसा का सही चित्र स्वयं देख सके। यह चित्र निस्सन्देह बहुत आकर्षक और स्पृहणीय था। साथ ही फारमोसा की सुख, समृद्धि और प्रगति का द्योतक था। मार्ग में खाद्यान्नों से परिपूरित लहलहाते खेत, फल और पुष्पों से लदे वृक्ष, छोटे-बड़े विभिन्न उद्योगों से युक्त सुन्दर और व्यवस्थित गाँव तथा नगर मन को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

बहुत भाते थे। सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि खेत में काम करनेवाले स्त्री-पुरुषों के भी कपड़े बहुत स्वच्छ और उज्ज्वल थे। उन सभी के चेहरों पर श्रम की सफलता का सन्तोष था तथा वेशभूषा में समृद्धि की चमक।

अपराह्न हम तापेह पहुँच गये तथा उसके बाद ही सहायक प्रतिरक्षा मन्त्री से औपचारिक भेंट हुई। दूसरे दिन प्रातः संसद सदस्यों का प्रतिनिधि मण्डल जापान चला गया। मुझे ३ दिन अभी और रहना था और मेरा सम्पूर्ण कार्यक्रम इसी के अनुसार बनाया गया था।

भ्रमण और पार्टियों का दौर प्रायः समाप्त हो चुका था और अब विभिन्न महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मिलने का दौर शुरू हो रहा था। मैं चीनी कम्युनिस्ट मामलों के विशेषज्ञ श्री पाओचिन आन से मिलने के लिए गया। तभी उनसे सम्बन्धित बहुत बड़ा विभाग देखने को मिला। इस विभाग में कम्युनिस्टों की गतिविधियों और सम्बन्धित इतिहास के बारे में सैकड़ों चार्ट और हजारों पुस्तकें और पत्रक हैं। इस विभाग के पास नवीनतम और अधिकृत सूचनायें रहती हैं जो हमारे लिए भी बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। श्री पाओ से एक घण्टे की बात में अनेक महत्वपूर्ण सूचनायें मिलीं। भारतीय सीमाओं पर हो रही कम्युनिस्ट चीनी सैनिक तैयारियों के बारे में उनका मत था कि निकट भविष्य में कम्युनिस्ट चीनी अपने-आप तो कोई हमला नहीं करेंगे परन्तु यदि उनके द्वारा अधिकृत भूमि लेने का प्रयास किया गया, तो वे अवश्य आक्रमण कर सकते हैं। चीनियों द्वारा यह अधिकृत भूमि खाली करने का कोई इरादा नहीं है क्योंकि वे इस क्षेत्र में चीनी परिवारों को बसा रहे हैं।

कम्युनिस्ट चीन में गम्भीर आर्थिक संकट के बावजूद उसके द्वारा अपनी सीमाओं पर स्थित देशों से तनाव उत्पन्न करने के प्रयास का कारण

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

एक मुसाफिर : एक दुनिया—

फारमोसा में एक भारतभक्त एवं हिन्दीभक्त विद्वान
प्रो. लियांग चाओ चा के साथ लेखक।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

श्री पाम्रो ने यही बताया कि चीनी कम्युनिस्ट नेता जनता का ध्यान अपनी आर्थिक असफलताओं की ओर से हटाना चाहते हैं और इस प्रकार चीनी जनता की देशभक्ति का अनुचित लाभ उठा रहे हैं।

रूस-चीन मतभेदों के बारे में श्री पावो ने तत्वतः यही बात कही कि वस्तुतः यह लड़ाई क्रुश्चेव और माओ की निजी लड़ाई है। दोनों एक दूसरे को नीचा दिखाना चाहते हैं। और दोनों ही एक-दूसरे के प्रति विद्रोह की भावना उत्पन्न करने के लिए प्रयत्नशील हैं। इसके अतिरिक्त सिंकियांग प्रदेश में विद्यमान विश्व के महत्वपूर्ण यूरेनियम भंडार की ओर रूस की आँखें लगी हुई हैं। इसीलिए वह सिंकियांग में विद्रोह के लिए प्रयास कर रहा है तथा यह चाहता है कि मध्य एशिया का यह पूर्व तूर्किस्तान स्वतन्त्र प्रदेश बन जाय।

एक रात्रि भोजन में उस समय मेरी प्रसन्नता और आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब मुझे एक ऐसे चीनी विद्वान् प्रोफेसर से मिलने का अवसर मिला जिसने भारत के तीर्थ स्थलों का भ्रमण शायद मुझसे भी अधिक कर रखा था। इनका नाम है श्री लियांग चाम्रो चा और वे तैवान विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं। श्री चाम्रो चा बद्रीनाथ, केदारनाथ, रामेश्वरम्, पुरी आदि न जाने कितने हिन्दू तीर्थों की यात्रा कर चुके हैं और हिन्दी भी कुछ कुछ जानते हैं। ये कुछ वर्ष गांधी जी के साथ सेवाग्राम में भी रहे तथा भारत के अनेक शीर्षस्थ नेताओं को निकट से जानते हैं। और हाँ, इनके पास एक और बड़ा सर्टिफिकेट है। ये कम्युनिस्ट चीन के प्रधान मन्त्री श्री चाम्रो एन लाई के सहपाठी रह चुके हैं। ये आज भी भारत के प्रति बड़ी रुचि रखते हैं और गत वर्ष ही एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के सिलसिले में भारत आये थे। बाद में श्री चाम्रो चा के निकट सम्पर्क में आने से मुझे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

राष्ट्रवादी चीन की साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का अच्छा परिचय मिला।

मेरा श्री लो चिया लुयेन से भी मिलने का कार्यक्रम रखा गया था जो स्वतन्त्र भारत में च्यांगकाई शेक की चीन सरकार के प्रथम और अन्तिम राजदूत रह चुके हैं। इस समय वे तैवान स्थित इतिहास अकादमी के अध्यक्ष हैं। श्री लो मुझे काफी सज्जन और सुलझे हुए व्यक्ति लगे। बात-चीत में पुरानी बातों का जिक्र आया कि कैसे भारत ने उनकी सरकार की मान्यता वापस लेकर कम्युनिस्ट चीन की सरकार को दे दी। उन्होंने कहा, "इस पर भी मैंने या राष्ट्रपति जनरल च्यांग काई शेक ने कभी भी इसके विरुद्ध कोई सार्वजनिक रोष नहीं प्रकट किया। उस समय दिल्ली में जब पत्रकारों ने मुझसे कम्युनिस्ट चीन की मान्यता पर विचार प्रकट करने को कहा था तो मैंने इतना ही कहा था कि भारत इसका परिणाम स्वयं देख लेगा और उसने कम्युनिस्ट चीन के आक्रमण के रूप में देखा भी।"

मुझे श्री लो का यह अन्तिम आधा वाक्य बिलकुल जँचा नहीं। और श्री लो ही नहीं, यहाँ के अनेक निवासी ऐसा समझते हैं कि कम्युनिस्ट चीन का भारत पर आक्रमण भारत द्वारा उसे मान्यता दिये जाने के कारण हुआ। मैंने श्री लो को इस पर टोका और कहा—"कम्युनिस्ट चीन को मान्यता देना और भारत पर उसका आक्रमण बिलकुल पृथक प्रश्न है। कृपया इन्हें एक साथ मत जोड़िये। उसे यदि हमने मान्यता न दी होती तो भी वह हमारे ऊपर आक्रमण कर सकता था। हमारी मान्यता से सिर्फ इतना ही हुआ कि उस समय उसे अन्तर्राष्ट्रीय जगत में काफी महत्व मिल गया।"

बातचीत के सिलसिले में ही उन्होंने यह भी बताया कि "मि० जिन्ना मुझे जब मिले, हमेशा उन्होंने मुझसे यही कहा कि चीन और पाकिस्तान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

में कूटनीतिक सम्बन्ध होने चाहिए किन्तु हमने इसीलिए उसे स्वीकार नहीं किया कि कहीं भारत नाराज न हो जाय।

सबसे अधिक सन्तोष और प्रसन्नता मुझे तैवान बौद्ध संघ में जाकर उसके प्रधान भिक्षु से मिलकर हुई क्योंकि वस्तुतः धार्मिक और सांस्कृतिक सूत्र ही भारत और चीन की जनता को शताब्दियों से बाँध रहे हैं। बड़ा निष्कपट प्रेम मिला मुझे यहाँ भिक्षुओं और भिक्षुणियों से मिलकर तथा छोटा होते हुए भी इन्होंने मुझे बहुत सम्मान दिया—इसलिए कि मैं भगवान बुद्ध के देश से आया था। इन्होंने दूसरे दिन मुझे विशेष आग्रह करके भोजन पर आमन्त्रित किया और मुझे भी जो इसमें रस मिला वह बड़ी-से-बड़ी पार्टियों में नहीं मिलता। प्रधान भिक्षु अभी हाल में ही अपने कुछ बन्धुओं के साथ भारत की तीर्थ यात्रा पर गये थे और उनका यहाँ जो स्वागत हुआ उससे वे बड़े प्रभावित हुए। उनमें मुझे भारत के प्रति असीम भक्ति का परिचय उस समय मिला जब उन्होंने मेरे सामने एक डिब्बा लाकर रख दिया और बताया कि यह पवित्र गंगा की बालू है। मेरा तो मस्तक स्वतः इन रजकणों के समक्ष झुक गया क्योंकि यह मेरे देश की पुण्यभूमि के रजकण थे जिन्हें पावन जाह्नवी ने अपने स्पर्श से और भी पुनीत कर दिया था। मैंने उस डिब्बे से कुछ रजकण निकाल कर श्रद्धावनत होकर उन्हें मुँह में रख लिया प्रसाद रूप में। यह देखकर वहाँ उपस्थित सभी भिक्षुओं ने ऐसा ही किया।

तैवान के सामाजिक जीवन में एक और अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं श्री कू चेंग कांग जो एशियाई देशों की कम्युनिस्ट विरोधी लीग (ऐपेकल) के अध्यक्ष हैं। इसी लीग के निमन्त्रण पर भारतीय संसद सदस्यों का प्रतिनिधि मण्डल यहाँ आया हुआ था। आप शीघ्र ही इस प्रतिनिधि मण्डल के निमन्त्रण पर भारत आ रहे हैं। श्री कू ने अपनी बातचीत में इस बात पर विशेष बल दिया कि इस बार भारत राष्ट्रसंघ में कम्युनिस्ट चीन के प्रवेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

का समर्थन न करे। हाल की घटनाओं से उसका साहस टूट रहा है अतएव ऐसे समय में एक आक्रमणकारी का समर्थन करके उसकी शक्ति न बढ़ाये।

फारमोसा में मेरी अनेक प्रमुख पत्रकारों से भी भेंट हुई। सबसे अधिक सन्तोष मुझे यह जानकर हुआ कि यहाँ की पत्रकारिता स्वतन्त्र है और पर-मुखापेक्षी नहीं क्योंकि ये खुलकर सरकार की आलोचना कर सकते हैं। अधिकांश पत्र चीनियों द्वारा ही संचालित हैं। प्रसार की दृष्टि से यह अवश्य महत्वपूर्ण नहीं किन्तु एक छोटे-से द्वीप की जनसंख्या की दृष्टि से उसे भी असन्तोषजनक नहीं कहा जा सकता। यहाँ की संसद भी विचार-स्वातन्त्र्य की पोषक है। मैंने उन्हीं दिनों स्थानीय पत्रों में पढ़ा था कि विमान दुर्घटना के कारण सम्बन्धित मन्त्री और विभाग संचालक के इस्तीफे की माँग की गयी थी। साथ ही च्यांग सरकार की भी तीव्र आलोचना हुई।

इस प्रकार मेरी पूरे एक सप्ताह की फारमोसा और क्वीमाय द्वीप की यात्रा सानन्द सम्पन्न हुई और मैं वायुयान द्वारा ताइपेह से हांगकांग के लिए रवाना हो गया। यात्रा के उपरान्त इस देश या प्रदेश के बारे में मेरी यही धारणा बनी कि यहाँ के लोग सुख और समृद्धि के शिखर की ओर अग्रसर हैं तथा अपनी अर्थ-व्यवस्था पूर्णतः आत्म-निर्भर बना चुके हैं। विदेशी सहायता का उपयोग इन्होंने बहुत अच्छा किया है। परिश्रम, लगन और देश-भक्ति की उत्कट भावना होने के कारण इनका भविष्य भी उज्ज्वल है। हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आज भी भारत के प्रति यहाँ के निवासियों में बड़ी सद्भावना है और वे भारत से मैत्री के इच्छुक हैं। सरकारी अधिकारियों की भी यही भावना है। हमें भी परिवर्तित परिस्थितियों को देखते हुए यथासम्भव इनसे अधिक-से-अधिक सम्बन्ध लाने में कोई हर्ज नहीं। दोनों देशों की सांस्कृतिक और धार्मिक एकता की कड़ी को मजबूत बनाना चाहिए तथा इस विकासोन्मुख अर्थव्यवस्था के देश से व्यापारिक और आर्थिक सम्बन्ध भी लाने चाहिए। इसका तात्पर्य केवल इतना ही है कि हमारी समस्त नीतियों का आधार देशहित पर आधारित यथार्थवाद हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

४

गगनचुम्बी अट्टालिकाओं के नगर हांगकांग में

अपनी एक सप्ताह की फारमोसा यात्रा के बाद मैं तापेह से विमान द्वारा रवाना हुआ और दो घण्टे में हांगकांग पहुँच गया। मेरे पास बैंकाक-तापेह-बैंकाक का वापसी टिकट था। अतएव हांगकांग में मुझे ४ घण्टे बाद एयर इण्डिया का दूसरा विमान बैंकाक जाने के लिए मिल रहा था जिसमें मेरा स्थान भी सुरक्षित हो गया था। इतना समय प्रतीक्षा करने के बजाय मैंने यह उचित समझा कि हांगकांग नगर की एक झलक ले ली जाय। मैंने हांगकांग नगर में एक सज्जन को फोन किया। उन्होंने दो घण्टे के लिए मुझे सहर्ष आमन्त्रित कर लिया। बाद में कुछ ऐसा विचार बना कि कम्बोडिया होता हुआ थाईलैंड चलूँ। वीसा बनवाकर आगामी विमान से जाने में ५ दिन बाकी थे। अतएव हांगकांग और निकटवर्ती बस्तियों का डटकर भ्रमण और दर्शन हुआ।

हांगकांग का हवाई अड्डा वस्तुतः कोलून नामक नगर में है जो समुद्र की प्रायः एक मील लम्बी पट्टी द्वारा हांगकांग से अलग होता है। हवाई अड्डा बिल्कुल समुद्र तट पर स्थित है और निकट ही छोटे-छोटे द्वीप इस स्थान की शोभा बढ़ाते हैं। विमान उतरने और उड़ान भरने के समय उसमें बैठे हुए यात्रियों को इन द्वीपों का दृश्य बड़ा मोहक लगता है। हवाई अड्डे से प्रातः ३-४ मील पर फेरी की व्यवस्था है जहाँ से जहाज यात्रियों और मोटर कारों आदि को हांगकांग पहुँचाते हैं। कोलून और हांगकांग के बीच

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दिन और रात का यातायात है। लेकिन फेरी की व्यवस्था भी इतनी अच्छी है कि यात्री को ५ से १० मिनट से अधिक की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती और समुद्र पार करने में भी १० मिनट से अधिक नहीं लगता।

लगभग ३० लाख की आबादीवाला यह हांगकांग नगर देखने पर प्रथम धारणा यही बनती है कि मानो यह केवल गगनचुम्बी भवनों और विलासिता की सामग्रीवाली दूकानों का ही नगर हो। परन्तु यह पूर्ण तथ्य नहीं। हांगकांग बहुत बड़ा व्यापारिक और औद्योगिक केन्द्र भी है। सबसे मुख्य बात तो यह है कि ब्रिटिश साम्राज्य की बस्तीवाला यह नगर शुल्क मुक्त बन्दगाह (ड्यूटी फ्री-पोर्ट) है। अतएव यहाँ अनेक चीजें अपेक्षय: सस्ती पड़ती हैं। इसी कारण से विदेशी यात्री यहाँ की दुकानों पर मानो खरीद-दारी के लिए टूटे पड़ते हों। यहाँ सम्पूर्ण विश्व के नागरिकों के दर्शन किये जा सकते हैं।

हांगकांग का नगर सनुद्र की सतह से लगे मैदानी भाग से लेकर दो हजार फुट ऊँची पहाड़ी तक बसा है। इस पहाड़ी पर से हांगकांग का सायंकालीन दृश्य अत्यन्त मनोहारी लगता है, जब जगमगाती बिजलियों से युक्त विशाल नगर तथा उससे सटा हुआ समुद्र बस एकटक देखते ही बनता है। रात्रि में भी नगर का जगमगाता दृश्य आकर्षक लगता है किन्तु समुद्र की शोभा अपना अलग अस्तित्व उस समय नहीं रख पाती। इस पहाड़ी पर भी बड़े सुन्दर भवन बने हैं किन्तु अधिकांश अत्यन्त सम्पन्न व्यक्तियों के। इस पहाड़ी पर विद्युत चलित ट्रामें भी जाती हैं जो नीचे से ऊपर या ऊपर से नीचे आने में ७० डिग्री का कोण बनाती हैं। इसीलिए यह ट्रामें लोहे के रस्से के जरिये पटरी पर ऊपर से नीचे उतारी जाती है और नीचे से ऊपर चढ़ाई जाती हैं। इस ट्राम पर बैठना भी एक आनन्ददायी अनुभव होता है। यह ट्राम दो हजार फुट की ऊँचाई तक जाती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पहाड़ी के नीचे हैपी वैली में भारतीयों के दो प्रमुख पवित्र स्थल हैं, हिन्दू मन्दिर और सिक्ख गुरुद्वारा। हिन्दू मन्दिर का निर्माण बहुत सुन्दर हुआ है। भारत के बाहर हिन्दू मन्दिरों में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। यह मन्दिर मुख्यत: लक्ष्मीनारायण जी का है यद्यपि शिव-पार्वती आदि की भी मूर्तियाँ हैं। ये चित्ताकर्षक और भावपूर्ण मूर्तियाँ जयपुर की ही हैं। यहाँ के भारतीय व्यापारियों ने पर्याप्त समृद्धि और सम्पन्नता अर्जित की है। यह सन्तोष की बात है किन्तु ये भारतीयता के वातावरण से दूर हो रहे हैं, यह चिन्ता की बात है। यहाँ ऐसे अनेक भारतीय व्यापारी हैं जिनके बच्चे हिन्दी नहीं जानते और वे परस्पर अंग्रेजी में ही बात करते हैं। हाँ, इधर जब से बर्मा में भारतीयों के साथ अन्याय हुआ है तब से कुछ दूरदर्शी भारतीय व्यापारी अपने बच्चों को हिन्दी पढ़ाने की आवश्यकता का अनुभव करने लगे हैं—यह सोचकर कि न जाने कब भारत के लिए बिस्तर गोल करना पड़े।

हांगकांग यद्यपि ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत है तथापि इस पर सबसे अधिक प्रभाव चीनियों का है। यहाँ से राष्ट्रवादी चीन (फारमोसा) प्राय: ५५० मील और कम्युनिस्ट चीन अथवा चीनी मुख्य प्रदेश की सीमा सिर्फ ५० मील की दूरी पर है। चीनी सीमा की ओर जाने का मार्ग कुलून से होकर ही है। एक रेलवे लाइन भी यहाँ से उस क्षेत्र तक जाती है। रास्ते में कई छोटी बस्तियाँ पड़ती हैं।

एक दिन अपने एक मित्र के साथ मोटर सायकिल पर इन बस्तियों के भ्रमण के लिए निकला। इधर का क्षेत्र प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर है। यदि कहीं आपके पास कैमरा हो, तो आपका मन होगा कि यहाँ हर कदम पर उसकी क्लिक दबाते चलें। पहाड़ों की तलहटियों में लम्बी-लम्बी गहरी नीली झीलें मन को बहुत भाती हैं और आँखों को बहुत लुभाती हैं। तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

इसी मनभावन और नेत्र-लुभावन वातावरण में डूबते-उतराते तथा शानटिन, तायपों, फौनलिन आदि नगरों को पार करते हुए उस क्षेत्र तक हम पहुँच गये जहाँ लोहे के काँटेदार तार लगे हुए थे और सामने बोर्ड पर अंग्रेजी में लिखा हुआ था कि आगे प्रतिबन्धित क्षेत्र है बिना अनुमति पत्र के कोई आगे नहीं जा सकता है। अर्थात् यहीं से एक मील के नो मैन्स लैंड (अधिकार विहीन क्षेत्र) के बाद चीनी मुख्य भूमि शुरू हो जाती है।

इस बोर्ड के पास से हटकर हम एक किनारे आ गये जहाँ एक झील दोनों राज्यों की सीमा रेखा बनती है। इस पर साफ-साफ एक पुल देखा जा सकता है जो दोनों की सीमा को मिलाता है। हम लोग तो अपने साथ एक अच्छी-सी दूरबीन भी ले गये थे। अतएव उसके द्वारा सीमा क्षेत्र की गतिविधि भी देख सके। इधर से ही पहाड़ियों के मार्ग से चीन के शरणार्थी भाग कर आते हैं। सीमा के आस-पास के क्षेत्र में अधिकांश चीनी किसान बसते हैं जो प्रायः काले कपड़े ही पहनते हैं। इनकी स्त्रियाँ और लड़कियाँ झालरदार टोप पहनकर अपने आकर्षण को बढ़ाती हैं। लेकिन मजाल है कि कोई भ्रमणार्थी उनकी फोटो ले लें। अगर कहीं आपने अपना कैमरा उनकी ओर किया और उन्होंने देख लिया तो उनकी पीठ का फ़ोटो आप भले ही ले लें, चेहरे की नहीं ले सकते चाहे सौ डालर का नोट ही आप उन्हें क्यों न दिखायें। वे नहीं चाहती कि उनकी रूप-चर्चा उनकी सीमाओं से बाहर जाय।

कुलून वापस लौटते समय हमने दूसरा मार्ग अपनाया, जो युवेनलांग होकर था। कुलून से प्रायः १० मील दूर रह जाता है कैसिलपीक जो सैलानियों के लिए बहुत ही आकर्षक स्थल है विशेष कर समुद्र में स्नान करनेवालों के लिए। यहाँ समुद्र के किनारे-किनारे ऐसे कई स्थान हैं जहाँ सैकड़ों की संख्या में लोग मस्ती से स्नान करते हुए दिखाई पड़ते हैं। कई अच्छे होटल भी हैं यहाँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

५

अंगकोर के देश कम्बोडिया में

हांगकांग से पोनमपेन्ह (कम्बोडिया) के लिए विमान में मेरा स्थान सुरक्षित हो चुका था किन्तु कम्बोडिया काउन्सल जनरल के कार्यालय में जब वीसा लेने गया तो पता चला कि वे मुझे बिना अपनी सरकार से पूछे वीसा नहीं दे सकेंगे क्योंकि मैं पत्रकार ठहरा। मैंने उनसे कहा कि भगवान ने आपके देश को विश्व का एक आश्चर्य 'अंगकोरवाट' दिया है जिसके दर्शन की लालसा उसके महत्व को जाननेवाले प्रत्येक व्यक्ति की होती है। क्या मैं इसे सिर्फ इसलिए नहीं देख सकता क्योंकि मैं पत्रकार हूँ? तो क्या मुझे इसे देखने के लिए पत्रकारिता छोड़नी पड़ेगी?

लेकिन वे लोग टस से मस नहीं हुए। उस समय तो अगर मैंने उन्हें यह वचन भी दिया होता कि आज से पत्रकारिता छोड़ दूँगा तो भी वे मुझे वीसा न देते। अजीब बात है। पत्रकारों के प्रति कुछ सरकारों का यह अजीब रवैया है। यही विचित्र स्थिति मुझे बर्मा का वीसा लेने में हुई थी और यही कम्बोडिया के सम्बन्ध में भी हो रही थी। लेकिन बर्मा का वीसा तो मैंने ले लिया था। तो क्या कम्बोडिया के बारे में मुझे निराश होना पड़ेगा—वह भी तब जब उसके लिए विशेष रूप से हांगकांग में रुकना पड़ा है तथा वायुयान में स्थान सुरक्षित हो चुका है? अन्ततः एक उपाय सूझा और भगवद्कृपा से मुझे वीसा मिल गया। उपाय क्या था यह तो नहीं बताना चाहूँगा, इतना अवश्य बता सकता हूँ कि वह उचित और वांछित तरीके से ही था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

१ जुलाई को दोपहर में सी० पी० ए० के जेट विमान से पोनमपेन्ह जाना था और सुबह से ही एक जबरदस्त समुद्री तूफान से हांगकांग आक्रांत था। समाचार पत्र में भी पढ़ा कि इस तूफान से फिलीपाइन्स के तटवर्ती क्षेत्रों में जन-धन की गम्भीर हानि हुई है तथा इस समय यह तूफान हांगकांग से गुजर रहा है। अनुमान हुआ कि आज अपना विमान नहीं जायगा। लेकिन दो घण्टे पहले जब पूछताछ की तो पता चला कि जायेगा और उस समय तक मौसम भी कुछ ठीक हो चला था। सो मैं हवाई अड्डे पर पहुँच गया। वहाँ पता चला कि विमान छूटेगा लेकिन दो घण्टे बाद।

और दो घण्टे बाद विमान उड़ा भी मुझे लेकर। लेकिन कुछ ही समय के बाद पता चला कि मौसम बहुत खराब है और यात्रीगण अपनी सीट की पेटी बाँधे रहें। विमान की उछलकूद-जैसी असाधारण चाल से हमें भी पता चल गया कि मौसम बहुत खराब है। जेट विमान वैसे ही प्रायः ३५ हजार फुट की ऊँचाई तक उड़ते हैं, उस समय वह और भी ऊँचाई पर उड़ रहा था—सम्भवतः यह ५० हजार फुट थी।

उस समय विमान दक्षिण चीन समुद्र के ऊपर वियतनाम के तट से कुछ सौ मील पर रहा होगा। मैं उस समय मुँह-हाथ धोने के लिए कक्ष में गया हुआ था। तभी बगल में बिजली की रोशनी से अंग्रेजी में चमक उठा—गो टू दि कैबिन (अपने स्थान पर जाइये) मैं अपनी सीट पर आया और पेटी बाँध ली। तभी अकस्मात हम लोग बहुत जोर के धक्के के साथ हिल उठे। जैसे किसी ने एकबारगी पूरे विमान को झकझोर कर रखदिया हो। सभी यात्री दूसरे का मुँह देखने लगे—स्पष्टतः चेहरे पर परेशानी के कुछ लक्षण थे। शायद उस समय सभी को भगवान याद आ गये होंगे। यह स्थिति प्रायः ५-७ मिनट रही। हम लोगों को पता लग गया कि हम इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

समय उस वेगवान तूफान के झोंके का सामना कर रहे हैं। उस समय मन में यह भी आया कि ऐसे प्रतिकूल मौसम में विमानों को नहीं उड़ना चाहिए, हमारा तो शक्तिशाली जेट विमान था—हो सकता है कि छोटे-मोटे विमान ऐसे प्रतिकूल मौसम का सामना न कर सकें। खैर, राम, राम कहते तट की भूमि दिखाई पड़ने लगी थी और आगे मौसम बिलकुल ठीक था। हमारा विमान सकुशल पोनमपेन्ह में उतरा।

उस समय शाम हो चुकी थी। अपने भारतीय मित्र के यहाँ पहुँचते-पहुँचते ६॥ बज गये थे। मेरे पास वीसा केवल दो दिन का था और पोनम-पेन्ह से २०० मील दूर स्थित अंगकोरवाट देखना आवश्यक था। अतएव मैंने जल्दी-जल्दी खाना-पीना खा-पीकर ७। बजे वाली बस पकड़ी जो रात्रि में एक बजे अंगकोरवाट पहुँचाती थी। उस क्षेत्र में जो एकमेव भारतीय बन्धु रहते हैं उन्हें मेरे आगमन की सूचना देने की व्यवस्था कर दी गयी थी। ये दक्षिण भारत के एक चेट्टियार बन्धु हैं और इनकी दुकान कुटीर उद्योग की वस्तुओं की है।

इस देश में मुझे सबसे पहले भाषा की सबसे अधिक कठिनाई अनुभव हुई क्योंकि फ्रांसीसी आधिपत्य में रहने के कारण यहाँ फ्रेंच ही चलती है और बाद में भी कम्बोडिया ने फ्रेंच के स्थान पर अंग्रेजी लाने की आवश्यकता अनुभव नहीं की। इसके कारण विदेशियों को यहाँ बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता है। यहाँ का सारा कामकाज भी फ्रेंच तथा कम्बोज भाषा में होता है।

इसके कारण मुझे सबसे अधिक असहायता और मजबूरी का अनुभव उस समय हुआ जब वह बस लगभग २० मील दूर जाने के बाद ही एक बड़ी नदी (कोनसेलप) के तट पर रुक गयी। क्योंकि उसे स्टीमर से पार करना था। मेरी इस बस को जिसे रात में १ बजे अंगकोरवाट पहुँच जाना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

था, पोनमपेन्ह से २० मील दूर इस स्थान पर ही रात को ३॥ बजे तक अर्थात् ७॥ घण्टे खड़ी रही लेकिन मैं कुछ न कर सकता था और न उनकी कम्बोज भाषा जानता था और न फ्रेंच ही तथा वे न मेरी हिन्दी जानते थे और न अंग्रेजी ही। अतएव न मैं ड्राइवर से कुछ कह सकता था और न फेरी के अधिकारियों से। मजबूर होकर चुपचाप बैठा रहा। तमाशा देखता रहा। रात्रि के ३॥ बजे बस नदी से पार हुई और रात्रि के एक बजे के बजाय प्रातः ६ बजे पहुँचा।

अंगकोरवाट

अंगकोरवाट का निर्माण बारहवीं शताब्दी में जयवर्मन नामक सम्राट ने करवाया था। यह मन्दिर विष्णु भगवान को समर्पित है जिससे सिद्ध होता है कि वह विष्णु भगवान का भक्त था। यद्यपि यह आज खंडहर के रूप में है। किन्तु यह खंडहर ही अपनी इमारत की बुलन्दी सिद्ध करने में पर्याप्त है। अंगकोरवाट का सम्पूर्ण क्षेत्र कई मील के क्षेत्रफल में है किन्तु यह कई भागों में विभाजित है, जैसे—अंगकोरवाट, अंगकोर थाम, वेयोन, बफून आदि। अंगकोरवाट के भवनों में रामायण और महाभारत के अनेक प्रसंग दीवारों पर खुदे हैं। यद्यपि इनमें से अधिकांश शैली स्थानीय ही जान पड़ती है। इन प्रसंगों में शरशय्या-शायी भीष्म, कौरव-पाण्डव युद्ध, बालि-सुग्रीव युद्ध, समुद्र-मंथन, सीता की अग्नि परीक्षा, रावण पर राम की विजय आदि प्रमुख हैं।

अंगकोर थाम कभी प्राचीन कम्बोडिया की राजधानी थी किन्तु इसकी स्थिति आज से कुछ भिन्न बतायी जाती है। वेयान का मुख्य मन्दिर शिव मन्दिर लगता है और अर्घा जैसा पत्थर अभी भी शेष है। दीवालों पर खुदी मूर्तियों की शैली भारत से प्रभावित है। इसमें प्रदर्शित झण्डे भी भारत के केसरिया झण्डों की तरह के ही हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

इनके अतिरिक्त यहाँ आज भी बुद्धदेव के अतिरिक्त विष्णु, गणेश, गरुण आदि की मूर्तियाँ देखी जा सकती हैं।

अंगकोरवाट देखने के बाद मेरे मन में यह विचार आया कि दुनिया के सात आश्चर्य निश्चय करने वालों ने पता नहीं कि भारत में मदुराई स्थित मीनाक्षी मन्दिर अथवा रामेश्वरम् का मन्दिर भी देखा था या नहीं। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि यदि विश्वके आश्चर्यों की सूची का पुनर्निर्धारण किया जाय तो मीनाक्षी मन्दिर और अंगकोरवाट को विश्व के आश्चर्यों में अवश्य स्थान मिलेगा।

अंगकोरवाट सिमरियप नामक नगर से मिला हुआ है जहाँ वायुयान से भी आया जा सकता है। यह नगर बहुत सुन्दर, स्वच्छ और प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण है।

इधर से मैंने दिन में ही पोनमपेन्ह की यात्रा की। अतएव २०० मील लम्बी इस यात्रा में कम्बोडिया का वास्तविक जन-जीवन देखने का सुअवसर प्राप्त हो सका। मेरी धारणा यहाँ यही बनी कि कम्बोडिया का जन-जीवन प्रायः थाईलैण्ड से मिलता-जुलता है, केवल लोगों के चेहरों में मामूली-सा अन्तर है। एक बात और देखने में आई कि इस देश में सैनिक दृष्टि से बहुत तैयारी हो रही है। विद्यालयों में केवल छात्रों को ही सैनिक शिक्षा नहीं दी जाती है बल्कि अन्य स्वस्थ शरीरवाले स्त्री-पुरुषों को भी यह शिक्षा दी जा रही है। सड़कों पर—यहाँ तक कि गाँवों की सड़कों पर भी इसका प्रदर्शन किया जाता है।

कम्बोडिया की राजधानी पोनमपेन्ह एक सुन्दर शहर है। जितना बड़ा देश है उतना ही बड़ा यह नगर भी है किन्तु है सुव्यवस्थित। नगर से सटी हुई ही कोनसेलप नदी बहती है जो नगर की शोभा और अधिक बढ़ाती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

इस नदी के किनारे-किनारे दूर तक पानी में ही तैरते हुए अनेक मकान हैं जो कश्मीर की डलझील के बोट हाउसों की याद दिलाते हैं।

कम्बोडिया से मैं विमान द्वारा बैंकाक वापस लौटा और दूसरे दिन ही ट्रेन द्वारा मलयेशिया के लिए रवाना हो गया। ट्रेन से एक दूसरे देश में जाने का यह प्रथम अवसर था। ट्रेन द्वारा बैंकाक से सिंगापुर आने में ढाई दिन और दो रातें लगती हैं।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

६

नेताजी के स्मृति-सौरभ से सुगन्धित देश मलयेशिया में

बैंकाक से ट्रेन द्वारा चलकर मैं २७ घण्टे में मलयेशिया के तटवर्ती सुन्दर नगर पिनांग में उतरा। यह यात्रा भी बड़ी सुखद रही तथा मार्ग में पड़नेवाले दोनों देशों के हरे-भरे लहलहाते खेतों, किलकारी करती चलती हुई नदियों और आसमान को छूने का अरमान लिए हुए पहाड़ियों को जी भर कर निहार सका। ट्रेन भी साफ-सुथरी अच्छी थी। बस सोने की व्यवस्था उसमें न थी क्योंकि पूरी ट्रेन में बस अगल-बगल दो लोगों के बैठनेवाली सीटें होती हैं। फिर भी रात में जब नींद आयी तो सोने की व्यवस्था भी कुछ-न-कुछ अपने-आप हो गयी। थाईलैंड का अन्तिम स्टेशन हदयाई है और मलयेशिया का प्रथम स्टेशन पंदगबिसार। पंदगबिसार में ही पासपोर्ट आदि की जाँच होती है। भारत और मलयेशिया राष्ट्रमण्डल के सदस्य होने के कारण भारतीयों के लिए इस देश में आने पर वीसा की आवश्यकता नहीं पड़ती। इस स्टेशन से पिनांग का रास्ता करीब ४ घण्टे का है।

जब पिनांग स्टेशन पर ट्रेन रुकी उस समय शाम को ७ बज गये थे। स्टेशन से ही सटा हुआ समुद्र और उस समुद्र के तट पर स्थित पिनांग का हरित प्रदेश बहुत भाया। ऐसा लगा कि जैसे पहली झलक में ही इससे प्यार हो गया हो, यद्यपि पिनांग से प्यार होने का कारण सिर्फ वाह्याकर्षण नहीं था, उसमें सन्निहित गुण भी था। इस धरती को देखते ही मुझे अपने देश के स्वतन्त्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण काल स्मरण आ गया जब यही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पिनांग हमारे क्रांतिकारी वीरों का कर्मक्षेत्र बना हुआ था और यहाँ से भारत की आजादी के लिए गोटियाँ बिठाई जाती थीं। इसी मार्ग से गदर पार्टी आदि के क्रांतिकारी सिंगापुर, जापान, कनाडा, अमेरिका आदि देशों को जाते थे। बाद में नेता जी सुभाषचन्द्र बोस और उनकी आजाद हिन्द फौज का भी यह एक प्रमुख गढ़ बना।

समुद्र की प्राय: १० मील लम्बी एक छोटी-सी पट्टी पिनांग नगर और उसके स्टेशन को अलग करती है। रेलवे स्टेशन पर जब उतरा तो सामने ही रेलवे विभाग का एक स्टीमर हमें उस पार पिनांग ले जाने के लिए खड़ा था। इसके लिए कोई अतिरिक्त किराया नहीं लगता। प्राय: २० मिनट की यह समुद्र यात्रा भी बहुत मनभावन थी।

पिनांग शहर भी अच्छा है। महानगरों की भागदौड़ और चिल्लपों यहाँ नहीं है। सड़कें बहुत अच्छी और साफ हैं तथा अधिकतर मकानों के साथ बगीचों और लानों की हरियाली है। नगर से सटा हुआ ही पहाड़ है और पहाड़ से सटा हुआ नगर का प्रदेश प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर है। यहीं एक विशाल उद्यान है जो सैलानियों के लिए विशेष आकर्षण है।

और सबसे अधिक आकर्षण है यहाँ पहाड़ पर जाने वाली रेलवे का जिसका डिब्बा ट्राम की तरह का है। ऐसी रेलवे मैं हांगकांग में देख चुका था और बताया जाता है कि यह संसार में तीन ही स्थानों पर है पिनांग, हांगकांग और स्वीटजरलैंड में। यह समुद्र सतह से लगभग ढाई हजार फुट की ऊँचाई तक जाती है। इसकी पटरियाँ तो सामान्य ही होती हैं यद्यपि उनके बीच में पहिये लगे होते हैं जो लोहे के रस्से से घूमते हैं। एक साथ दो डिब्बों का सम्बन्ध रहता है एक चढ़ता और दूसरा उतरता है। दोनों का सन्तुलन इसी रस्से के द्वारा होता है। इसीलिए यदि एक डिब्बा कहीं रुका तो दूसरे को भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

एक मुसाफिर : एक दुनिया——

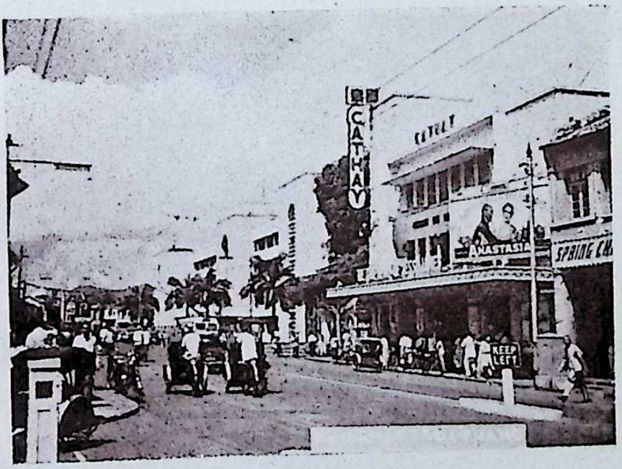

मलेशिया का सुन्दरतम नगर 'पिनांग'

✣

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उसी समय रुकना पड़ता है। इसकी यांत्रिक व्यवस्था आश्चर्यजनक अवश्य है परन्तु खतरे से रहित है। यह ४२ वर्ष पहले बनी थी और आज तक कोई दुर्घटना नहीं हुई।

ट्रेन से ऊपर जाकर चोटी पर जो स्थान आता है वह अत्यन्त मोहक है। यहाँ से पिनांग नगर और समुद्र का दृश्य इतना सुन्दर लगता कि इसे घंटों देखा जा सकता है। ऊपर होटल, डाकघर आदि भी हैं। पिनांग नगर में आनेवाला भ्रमणार्थी यहाँ अवश्य आता है।

पिनांग में भारतीय अच्छी मात्रा में हैं विशेषकर दक्षिण भारतीय। चीनी भी यहाँ कम नहीं। इनका एक सर्पमन्दिर देखने योग्य है। नगर में एक थाई मन्दिर भी विशेष आकर्षण है जिसमें ११० फुट लम्बी लेटी हुई बुद्ध मूर्ति है।

कुआलालमपुर

पिनांग में मैं अधिक नहीं ठहरा और दूसरे दिन ही रात्रि की ट्रेन से मलयेशिया की राजधानी कुआलालमपुर रवाना हो गया। सेकण्ड क्लास स्लीपर (शयन) में पहले से ही स्थान सुरक्षित करा लिया था और इस सम्बन्ध में इतना ही कहना काफी होगा कि इसमें यात्रा करते समय मुझे अपने देश के एयर कंडीशन क्लास का स्मरण आ गया। विशेष अन्तर केवल पंखे और एयर कंडीशन का ही था। इधर के देशों में मुझे मलयेशिया की ट्रेन-यात्रा ही अधिक सुखकर लगी।

प्रातःकाल मेरी ट्रेन कुआलालमपुर पहुँची। यहाँ का स्टेशन मुझे अपने लखनऊ के चारबाग स्टेशन का स्मरण करा रहा था। फर्क इतना ही है कि कुआलालमपुर स्टेशन पर मुसलिम स्थापत्यकला का अधिक प्रभाव है। वैसे पूरा नगर ही प्राचीन और अर्वाचीन का सम्मिश्रण है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

इस समय हिन्देशिया–मलयेशिया विवाद अपने प्रखर रूप में था—दोनों देशों के नेताओं के शिखर सम्मेलन को विफल हुए भी ज्यादा दिन नहीं गुजरे थे। जहाँ देखिये, वही बात। पूरे मलयेशिया का जन-मन पूर्णतः इसी विवाद से आन्दोलित दिखाई पड़ा और राजधानी में तो इसका और भी अधिक आभास मिला। एक प्रकार से युद्धकालीन वातावरण ही था पूरे देश में। विवाद का कारण यह है कि मलय, सिंगापुर, सारावाक और उत्तरी बोर्नियो (ब्रिटिश बोर्नियो) को मिलाकर जो मलयेशिया संघ बना उसके फलस्वरूप सारावाक और बोर्नियो से हिन्देशियाई बोर्नियो की सीमा एक मिल गयी। चूँकि मलयेशिया के ये भाग मुख्य मलय प्रदेश से लगभग ४०० मील दूर हैं और समुद्र उन्हें पृथक करता है अतएव हिन्देशिया का यह कहना है कि ये प्रदेश मलयेशिया में कतई नहीं मिलने चाहिए—यदि इन्हें मिलना है तो हिन्देशिया में मिलें। यद्यपि शुरू में हिन्देशिया ने मलयेशिया संघ के प्रस्ताव का समर्थन किया था। हाँ इतना अवश्य कहा था कि सारावाक और बोर्नियो के जनमत का निर्णय विधिवत् जान लेना चाहिये।

उधर मलयेशिया का कहना है कि ये सभी प्रदेश ब्रिटिश साम्राज्य से स्वतन्त्र हुए हैं। इनकी बहुत-सी प्रशासनिक व्यवस्थाएँ भी एक साथ रही हैं तथा जब इन प्रदेशों ने स्वेच्छा से मलयेशिया संघ में मिलने का निर्णय किया है तो ये उसी देश के अविभाज्य अंग है। इसी झगड़े के दौरान हिन्देशिया ने अपने कुछ सैनिक उक्त मलयेशिया प्रदेश के कुछ सीमावर्ती भाग में भेज दिये और इसीलिए मामला बहुत संगीन हो गया तथा नौबत आ गयी युद्ध की—मरने-मारने की।

कार्यकारी प्रधान मन्त्री से भेंट

मैं जब कुआलालमपुर पहुँचा तो उस देश के अत्यन्त लोकप्रिय प्रधान मन्त्री श्री टुंकू अब्दुल रहमान राष्ट्रमण्डलीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

लन्दन जा चुके थे तथा उप प्रधान मन्त्री श्री अब्दुल हाजी टुन रजाक कार्य-कारी प्रधान मन्त्री थे। मुझे इनसे मिलकर बातचीत करने का अवसर प्राप्त हुआ। बातचीत में श्री टुन रजाक ने स्पष्ट कहा कि भारत को मलयेशिया पर आक्रमण की खुली निंदा करनी चाहिए जिस प्रकार मलयेशिया ने चीनी आक्रमण के समय की थी। मैं उनसे पत्रकार की हैसियत से मिला था अतएव उनके विचार सुन ही सकता था अपने विचार उनके सामने रख नहीं सकता था। परन्तु यह प्रश्न निश्चय ही बहुत पेचीदा हो गया है और इसमें भारत की स्थिति बहुत नाजुक है क्योंकि यह झगड़ा उसके दो मित्रों के बीच का है। जहाँ तक चीनी आक्रमण का सम्बन्ध था, चीन मलयेशिया का भी दुश्मन था। फिर भी भारत ने यह प्रश्न सिर्फ दोस्त और दुश्मन के दृष्टिकोण से ही नहीं देखा उसने मलयेशिया के अस्तित्व का सदैव पक्ष लिया। हाल में हिन्देशिया में हुए अफ्रीकी एशियाई तैयारी सम्मेलन में भी भारत ने मलयेशिया को शामिल करने के लिए जोरदार वकालत की थी। हाँ, उसके दो मित्रों के इस संघर्ष में भारत से इतनी अपेक्षा तो ठीक है कि वह अपने प्रभाव का उपयोग करके रूस पर यह प्रभाव डाले कि वह इन दोनों के झगड़े से दूर रहे। ब्रिटेन मलयेशिया का साथ दे ही रहा है, अमेरिका भी खुलेआम यदि आ गया तो एक ओर ब्रिटेन और अमेरिका तथा दूसरी ओर रूस और चीन हो जायेंगे। तब यह मामला विश्वयुद्ध का कारण बन सकता है। साथ ही इसके फलस्वरूप हिन्देशिया साम्यवाद की गोद में भी जा सकता है।

इस प्रकार यदि युद्ध की काली छाया मलयेशिया पर मँडराने न लगी होती तो सन् १९५७ में स्वतन्त्र होनेवाले इस देश ने थोड़े ही समय में साधारण प्रगति कर ली होती। फिर भी इसने पिछले केवल ७ वर्षों में जो प्रगति की है उसके दर्शन भली प्रकार किये जा सकते हैं। इस देश में विशेषकर राजधानी, कुआलालमपुर में अनेक महत्वपूर्ण कार्य पिछले इन्हीं वर्षों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हैं। इनका संसद भवन तथा नेशनल स्टेडियम (राष्ट्रीय क्रीड़ांगन) जो स्वतन्त्रता (मर्डेका) के नाम पर है, सम्पूर्ण एशिया में अपना शानी रखते हैं। एशियाई देशों में भारत के बाद केवल मलयेशिया में ही सच्ची संसदीय प्रणाली का जनतन्त्र है। अतएव उसकी प्रगति और नवनिर्माण का अपना विशेष महत्व है।

सम्भवतः मलयवासी शांत और सरल स्वभाव के हैं तथा ये भी सही अर्थों में धर्म और जाति निरपेक्ष हैं। तभी इनके यहाँ चीनी और भारतीय जातियाँ इनके साथ खूब मजे में पल रही हैं तथा राष्ट्रीय कार्यों और सुविधाओं में इन तीनों जातियों में कोई भेद नहीं बरता जाता बशर्ते नागरिकता मलय की हो। यह भी एक अद्भुत तथा अनुकरणीय प्रयोग है परन्तु यहाँ एक बात देखने में आयी कि चीनी लोग अपनी संख्या और प्रभाव सुनियोजित रूप से बढ़ा रहे हैं जो वहाँ के राष्ट्र शुभचिंतकों के लिए चिंता का विषय है। इसीलिए इधर कुछ स्थानों पर जाति भेद सम्बन्धी संघर्ष भी हुए हैं। चीनियों की जन्म दर भी शेष जातियों से अधिक है। अन्य कुछ दक्षिणपूर्वी एशियाई देशों की तरह मलय का वाणिज्य और व्यापार भी अधिकांश चीनियों के ही हाथ में है जो यहाँ लगभग ४४ प्रतिशत है।

भारतीय प्रभाव

मलयेशिया की कुल जनसंख्या का दसवाँ भाग भारतीय जाति का है। मलय भाषा में संस्कृत और तामिल के अनेक शब्द हैं। कुआलालमपुर का आकर्षक संग्रहालय भी भारत से मलय की अटूट कड़ी का साक्षी है। यहाँ रामायण से सम्बन्धित अनेक छाया चित्रों के नमूने प्रदर्शित किये गये हैं। यहाँ जनेऊधारी अगस्त्यमुनि की भी एक मूर्ति है जो ९ वीं शती की है और जलोग (पेरांग) में पायी गयी थी। अगस्त्यमुनि का इस क्षेत्र से बहुत संबंध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

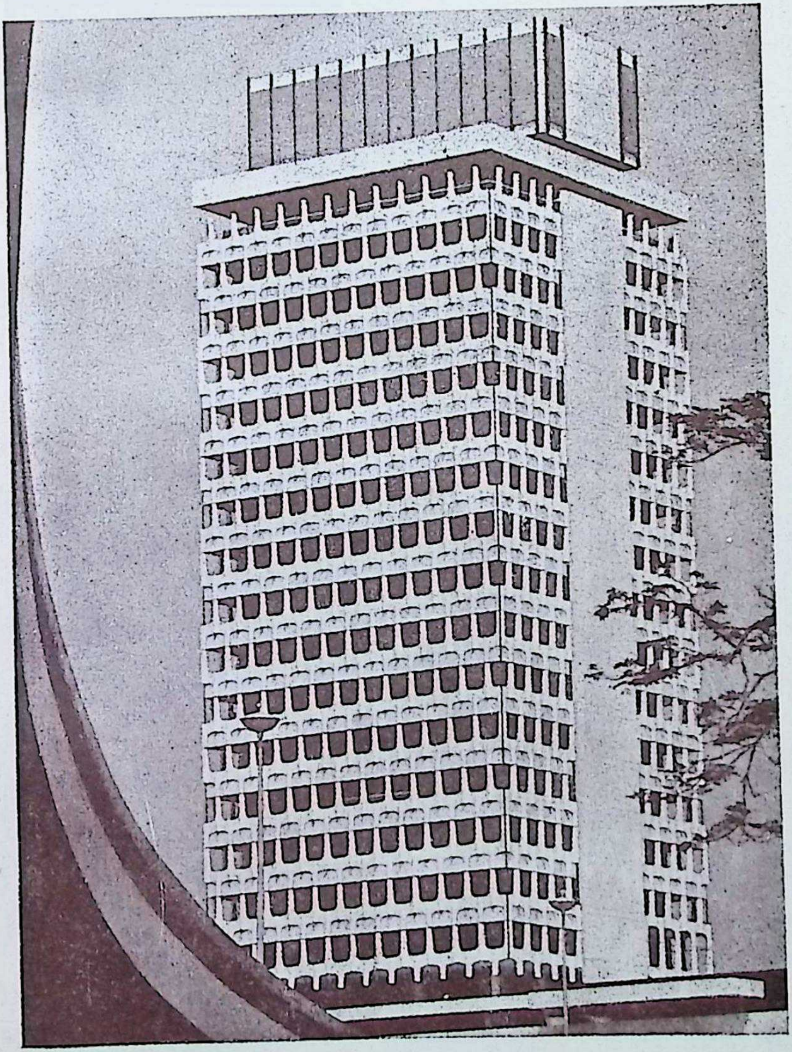

मलेशिया का संसद-भवन ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

रहा है। उक्त मूर्ति श्री विजय के युग की है। साथ ही अन्य अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ भी हैं। दसवीं शताब्दी की महायान से सम्बन्धित एक षटभुजी मूर्ति भी यहाँ है।

यहाँ भारतीयों की प्रतिष्ठा कुछ अच्छी ही है तथा सरकार में भी दो भारतीय जाति के ही मन्त्री हैं।

कुआलालमपुर में दो दिनों का अत्यधिक व्यस्त कार्यक्रम रहा और इसके बाद रात्रि की ट्रेन से ही सिंगापुर रवाना हो गया। दूसरे दिन प्रातः सिंगापुर में था।

सिंगापुर

दक्षिण पूर्व में सिंगापुर की तुलना सिर्फ हांगकांग से ही की जा सकती है। लेकिन मुझे सिंगापुर कुछ अधिक पसन्द है। इसका कारण यह हो सकता है कि हांगकांग की गगनचुम्बी अट्टालिकाओं के सामने अपनी लघुता का जितना आभास होता है उतना यहाँ नहीं होता है। कुछ गगनचुम्बी अट्टालिकायें यहाँ भी हैं लेकिन हांगकांग की तरह यहाँ स्थान की कमी न होने से यह नगर बहुत विस्तृत बसा हुआ है। सड़क पर चलने वाले जब चाहें आसमान देख सकते हैं और सिर उठाकर आराम से साँस ले सकते हैं। हांगकांग में ऐसा नहीं है। साथ ही सिंगापुर अधिक व्यवस्थित बसा हुआ है। मलय में छोटे-छोटे रंगबिरंगे मकान बहुत आकर्षक बनते हैं और ऐसे मकान यहाँ प्रचुर मात्रा में हैं। यहाँ एक भाग को पूर्व का न्यूयार्क बनाने की योजना है। तब हांगकांग भी यहाँ आ जायगा लेकिन उतनी घुटन के साथ नहीं क्योंकि यहाँ गगनचुम्बी भवन समुद्र के किनारे-किनारे सिर्फ एक ओर ही बनेंगे—बम्बई के मेरिन ड्राइव की तरह।

सिंगापुर का कोई विशेष आकर्षण आपको क्या बताऊँ, सारा नगर ही अपने-आप में कुछ-न-कुछ आकर्षण है। समुद्र के किनारे स्थित कुछ पार्क

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अवश्य अच्छे हैं। शेष सिंगापुर तो एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र है और इसीलिए इसका सौन्दर्य भी व्यापारिकता लिए हुए है। सिंगापुर करमुक्त क्षेत्र है। इसीलिए यहाँ चीजें कुछ सस्ती हैं—विशेषकर विलासिता सम्बन्धी। लेकिन हांगकांग में यहाँ से भी कुछ सस्ती चीजें हैं।

सिंगापुर ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत रहा है लेकिन अब इसने मलयेशिया संघ में मिलने का निर्णय किया है—यद्यपि इसका विलयन एक क्रमिक प्रक्रिया ही है। अभी भी यहाँ का सर्वोच्च नेता प्रधान मन्त्री ही कहलाता है—यानी एक देश में दो प्रधान मन्त्री।

सिंगापुर में अच्छी मात्रा में भारतीय हैं। कुछ बड़े व्यापारी भी हैं। यहाँ की हाई स्ट्रीट मानो भारतीयों के लिए ही सुरक्षित है। वैसे तो विदेशों में बहुत-से भारतीयों को विशेषकर बड़े व्यापारियों को अपनी भाषा के लिए विशेष आग्रह नहीं रह जाता। किन्तु सिंगापुर में हिन्दी के हितों को कुछ-न-कुछ आर्यसमाज और नेताजी स्कूल देखते हैं।

नेताजी की याद

सिंगापुर के लिए मेरे मन में एक विशेष भावना रही है और वह है नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के कारण। नेता जी ने यहीं अस्थायी आजाद हिन्द सरकार कायम की थी। सच पूछा जाय तो सिंगापुर ने ही नेता जी की सम्पूर्ण तेजस्विता देखी है, उनके कृतित्व को समझा है तथा उनकी शक्ति और क्षमता को धारण किया है। भारत ने बस उसका पूर्वाभास ही पाया था और बाद में सिर्फ सुना ही—जो ओजस्वी स्वर और तेजस्वी वाणी आज भी भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास के पन्नों से छन-छन कर भारत के दुकूलों और हिमालय की चोटियों से टकराते हैं। लेकिन उन्हें सुनता कौन है सिर्फ कुछ संवेदनशील देशभक्त हृदय। लेकिन वे भी न जाने क्यों असमर्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हैं। हाँ, कभी-कभी आहभरी अभिव्यक्ति अवश्य टकराती है—काश, नेताजी आज जिंदा होते। तभी मानों भारतमाता के नयनों से दो आँसू ढुलक पड़ते हैं—न जाने उसका सुभाष कब आयेगा, उसकी आजादी तो आज खतरे में है।

खैर, यह तो हुई भावुकता क्योंकि भावना और भावुकता का गहरा सम्बन्ध है। लेकिन उस दिन सिंगापुर में जब एक सभा के बाद में वहाँ उपस्थित कुछ भारतीयों से परिचय करने लगा, तो उनमें मुझे आजाद हिन्द फौज के अनेक भूतपूर्व सैनिक और सेनाधिकारी मिल गये। फिर तो मैंने उनसे निवेदन किया कि भाई, मेरे अनेक कार्यक्रम तो आप लोग अपने मन से रखते हैं एक कार्यक्रम मेरे मन से रख लीजिये—और वह है आजाद हिन्द फौज के इस नगर में विद्यमान सभी भूतपूर्व सेनानियों का सम्मेलन। दूसरे दिन यह कार्यक्रम रखा गया। इसमें अधिकांश सैनिक उपस्थित थे—कुछ ऐसे भी जो नेता जी के साथ चौबीसों घण्टे रहनेवाले। इनसे मिलकर और विचार-विमर्श करके निश्चय ही बड़ा सन्तोष मिला। आज भी इनमें उस पुरानी आग की चिनगारियाँ शेष हैं जो धूल हटाने पर चमकती हुई दिखाई पड़ती है।

इसके बाद मैंने नेताजी के एक साथी के साथ वे सभी स्थान देखे जो नेताजी और आजाद हिन्द फौज से सम्बन्धित थे—फौज का मुख्य केन्द्र और अस्थायी सरकार का मुख्य कार्यालय आदि। वे पार्क भी, जहाँ लाखों की भीड़ में नेताजी की ओजस्वी वाणी के द्वारा निकली हुई उनके हृदय की प्रखर देशभक्ति और बलिदान की आग उपस्थित जनसमूह के हृदयों में प्रविष्ट होती थी—उसी तरह से जैसे तेज आग की लपटें अन्य वस्तुओं को भी अपनी तरह बना लेती हैं या जैसे एक जलता हुआ दीपक दूसरे की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

बुझी हुई लौ को भी प्रज्ज्वलित कर देता है। लेकिन अब यह सब बीते युग की बातें हो गयीं। मैंने यहाँ देखा और अनुभव किया कि राणा झाला आज भी जिन्दा है अपने वीर प्रताप के लिए जान देने को। और भामाशाह भी जिन्दा है अपने प्रताप के चरणों में सर्वस्व अर्पित करने को— लेकिन वे क्या करें, उनका वह नेता ही नहीं रहा। उनकी बलिदान और समर्पण की भावनायें यूँ ही एक तरफ पड़ी सिसक रही हैं।

सच ही कहा है—

हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पर रोती है।
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा॥

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

७

महायुद्ध के काले बादलों के देश दक्षिण वियतनाम में

सिंगापुर में ६ दिन रहने के बाद मुझे सैगोन (दक्षिण वियतनाम की राजधानी) जाना था जो एक ओर गृहयुद्ध की आग में झुलस रहा है और दूसरी ओर उस पर विश्वयुद्ध के काले बादल मँडरा रहे हैं।

आग की लपट से हर व्यक्ति दूर रहने की कोशिश करता है। मुझे भी उससे डर लगता है। एक बार भय भी लगा कि जो जलती हुई आग किसी भी क्षण उस समस्त क्षेत्र को ग्रस सकती है, उसके पास क्यों जाया जाए। लेकिन हृदय के किसी कोने में जो दृढ़ निश्चयी तत्व पड़ा है, उसने ललकारा। मैंने सिंगापुर से सैगोन का टिकट लिया और निर्धारित समय पर हवाई अड्डे जा पहुँचा। हवाई अड्डे पर एक मुसकराती हुई महिला कर्मचारी ने स्वागत किया और मुसकराहट के साथ मुझे सूचना दी कि सैगोन की उड़ान आज रद्द कर दी गई है। मैं तो सोच रहा था कि ऐसी मुसकराहट सिर्फ खुशखबरी ही दे सकती है। सच पूछिए, तो मुझे बहुत गुस्सा आया इस पर। उधर मेरा सारा कार्यक्रम बन चुका था और इधर हवाई जहाज की उड़ान रद्द। मन में एक बार फिर आया कि न जाऊँ क्या? अगर एक वियतनाम न देखा तो क्या खास कमी रह जाएगी। फिर कभी देखा जायगा—आखिर इधर का कार्यक्रम दोबारा बन ही रहा है। दूसरा हवाई जहाज उधर चौथे दिन जाता था। मैंने विमान कम्पनी से कहा मैं इतने दिन व्यर्थ यहाँ बर्बाद नहीं कर सकता। यदि उधर सीधे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कोई विमान चार दिन तक नहीं जाता तो आज ही मेरा टिकट बैंकाक होकर सैगोन का बना दिया जाए, बिना किसी अतिरिक्त व्यय के। पहले तो वे तैयार न हुए, लेकिन कुछ घण्टों की माथापच्ची के बाद मान गए। मुझे बैंकाक होकर सैगोन जाने की अनुमति उसी टिकट पर मिल गई जब कि इधर से सैगोन का किराया लगभग दूना है। मैं उसी दिन रवाना हो गया।

१६ जुलाई को मैं दक्षिण वियतनाम की राजधानी सैगोन पहुँच गया। अब तक सैगोन पूरी तरह से संसार की दृष्टि का मुख्य केन्द्र-बिन्दु बन चुका था। अमेरिका ने अपने प्रमुख सेनाधिकारी जनरल टेलर को यहाँ के राजदूत के रूप में भेजकर यह जता दिया था कि वह दक्षिण वियतनाम की रक्षा करने के लिए कटिबद्ध है। साथ ही इस प्रकार की घोषणाएँ भी अमेरिका की ओर से हो चुकी थीं कि वह दक्षिण वियतनाम की रक्षा के लिए उत्तर वियतनाम पर भी आक्रमण कर सकता है और सीधे चीन से भी मुकाबला कर सकता है। अमेरिकी राष्ट्रपति-पद के रिपब्लिकन उम्मीदवार श्री गोल्डवाटर ने तो बहुत पहले ही आणविक-युद्ध तक का सुझाव दे दिया था।

ऐसे नाजुक वातावरण में मेरा हवाई जहाज सैगोन में उतरा। वैसे आसमान से देखने पर तो यह देश बहुत हरा-भरा दिखाई पड़ा, बहुत अच्छा भी लगा। लेकिन इस हरियाली पर युद्ध की काली छाया का भी आभास हुआ—शायद इसलिए कि मुझे इसकी नाजुक स्थिति का ज्ञान था। उन दिनों यह जोरदार अफवाह भी फैली हुई थी कि २० जुलाई तक, जिस दिन वियतनाम की स्वतन्त्रता और विभाजन के लिए १० वर्ष पूर्व जेनेवा में संधि हुई थी, कुछ-न-कुछ गम्भीर गड़बड़ी यहाँ हो जायगी—क्या हो जाएगी यह कोई नहीं बता सकता था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

महायुद्ध के काले बादलों के देश दक्षिण वियतनाम में

युद्ध की दहकती हुई चिनगारियाँ

सैगोन हवाई अड्डे पर खड़े हुए सैनिक विमानों और बमवर्षकों से भी वहाँ युद्धकालीन-स्थिति होने का आभास मिलता था। वैसे तो वियतनाम काफी समय से गृहयुद्ध में झुलस रहा है, किन्तु इधर कुछ समय से वीट-कांग छापामारों ने अपनी गतिविधियाँ तेज कर दी हैं और रात्रि के अन्ध-कार में वे अक्सर दक्षिण वियतनाम सैनिक टुकड़ियों से भिड़ जाते हैं। उनकी यह लड़ाई सैगोन से सिर्फ १५-२० मील की दूरी पर होती है जिसकी आवाज रात के सन्नाटे में अक्सर सैगोनवासी सुनते हैं। मैं तो यह आवाज सुनने के लिए किसी रात नहीं जागा। वीटकांग छापमारों के बारे में सबसे अधिक परेशानी सरकार के लिए यह है कि वे (वीटकांग) तो दूसरों का हर राज जानते हैं, लेकिन दूसरों को उनके बारे में कुछ पता नहीं। कभी-कभी तो सरकारी दफ्तरों और सेना में भी वीटकांग छापामार छिपे रहते हैं और उनके बारे में कोई पता नहीं रहता। इन छापामारों की माँग यही है कि वियतनाम के एकीकरण के लिए पूरे देश (दोनों वियत-नाम) में आम चुनाव होने चाहिए और देश की जनता को जिस भाग का भी, उत्तर या दक्षिण, का शासन प्रिय हो, चुनने की सुविधा दी जानी चाहिए। किन्तु दक्षिण वियतनाम सरकार ने इसे स्वीकार नहीं किया है।

सबसे अधिक खतरा है सैगोन में रहनेवाले अमेरिकियों को। न जाने कब उनके आगे-पीछे या दाएँ-बाएँ बम-विस्फोट हो जाए। इसीलिए ये लोग जहाँ काम करते हैं या रहते हैं वहाँ चौबीसों घण्टे सख्त सैनिक पहरा रहता है। इस प्रकार काल के मुँह में रहने के बावजूद ये लोग मस्त रहते हैं। इनकी बदौलत सैगोन में एक-एक सड़क पर न जाने कितने नाइट क्लब, शराबखाने और वेश्यालय चलते हैं। मुझे भय है कि अपने इस आचरण से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वे दक्षिण वियतनामवासियों को अपने विरुद्ध न बना लें। इधर हाल में अमेरिका ने एक बहुत ही सैनिक एवं नागरिक महत्व का काम किया है। वह है सैगोन से बाहर कई मील लम्बे विस्तृत राजमार्ग का निर्माण। यह राजमार्ग इतना चौड़ा है कि आवश्यकता पड़ने पर इस पर जेट विमान तक उतारे जा सकते हैं।

यहाँ का काम युद्ध-स्तर पर हो रहा है। यहाँ अनिवार्य सैनिक शिक्षा लागू है तथा सभी स्वस्थ शरीरवालों को कभी भी सेना में बुलाया जा सकता है। इसीलिए अधिकांश दूकानदारी यहाँ महिलाओं के ही हाथ में है। यहाँ की महिलाएँ अत्यन्त स्वच्छ, सुगढ़ और सुन्दर हैं। उन्होंने अपनी राष्ट्रीय पोशाक नहीं छोड़ी हैं, जो पैंजामा तथा लम्बी अचकन जैसी हैं। पुरुषों ने अपनी पोशाक बदल ली है।

यहाँ की जलवायु प्राय: भारत–जैसी हैं, बस जाड़ा नहीं पड़ता। फल और सब्जियाँ यहाँ खूब होती हैं। कुछ फल यहाँ ऐसे भी हैं, जो भारत में नहीं होते। सैगोन में भारतीयों की संख्या कुछ सौ ही है लेकिन प्रतिष्ठा अच्छी है। वैसे यहाँ का कोई भी भारतीय वियतनामी नागरिक नहीं है। इसके लिए कभी जोर भी नहीं दिया गया और उसके कारण उन्हें कोई परेशानी भी नहीं है।

सैगोन नगर बहुत स्वच्छ और सुन्दर है। यहाँ की आबादी २० लाख । एक विशाल नदी मीकांग पर स्थित होने के कारण समुद्र के बड़े-बड़े जहाज तक नगर के तट पर आ जाते हैं।

वैसे तो सैगोन में कई अधिकारी एवं साधारण व्यक्तियों से वहाँ की स्थिति के बारे में बात हुई, किन्तु विदेश मन्त्री डॉ. फान हू क्वात से बात-चीत होने के बाद वहाँ की सरकारी नीति के बारे में भली प्रकार ज्ञान हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सका । मैंने उनसे वियतनाम के एकीकरण के बारे में पूछा, तो उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि एकीकरण हम भी चाहते हैं, किन्तु सम्पूर्ण वियतनाम में जनमत संग्रह के नाम पर हम साम्यवादियों के फंदे में नहीं पड़ना चाहते हैं । इसका पहला कारण तो यह है कि उत्तरी वियतनाम में साम्यवादी शासन होने के कारण वहाँ चुनाव स्वतन्त्र और निष्पक्ष नहीं हो सकते; दूसरी बात यह है कि उत्तर वियतनाम की आबादी दक्षिण वियतनाम की आबादी से अधिक है । इसलिए जब पूर्वी जर्मनी की अपेक्षा पश्चिमी जर्मनी की अधिक आबादी होने के कारण साम्यवादी वहाँ जर्मनी के एकीकरण के लिए जनमत संग्रह की बात नहीं करते, तब यहाँ वे किस मुँह से ऐसा कहते हैं ।

दक्षिण वियतनाम की रक्षा के लिए उत्तरी वियतनाम पर आक्रमण करने की प्रस्तावित नीति के बारे में यद्यपि विदेश मन्त्री ने स्पष्ट कुछ नहीं कहा तथापि उनकी बातों से ऐसा लगा कि वे इसके विरुद्ध नहीं हैं ।

इससे प्रायः एक माह पूर्व फारमोसा के आगे क्वीमाय द्वीप में मैं कुछ भारतीय संसद सदस्यों के साथ दक्षिण वियतनाम के मुख्य सेनाध्यक्ष से मिल चुका था और यहाँ की सामरिक स्थिति के बारे में थोड़ी-बहुत जानकारी प्राप्त कर चुका था । उनसे तो यही पता चला था कि वह दृढ़ निश्चय और साहस के साथ अपने संघर्ष में जुटे हुए हैं ।

राजनीतिक और सामरिक स्थिति के इस नाजुक दौर में भी धर्म और संस्कृति की बात नहीं भूला, क्योंकि यही तत्व दक्षिण-पूर्वी एशिया को भारत से जोड़ते हैं । सैगोन में ही बौद्ध धर्म के उच्चस्तरीय अध्ययन के लिए एक संस्थान चलता है जो धीरे-धीरे विश्वविद्यालय का रूप ग्रहण कर रहा है । यहाँ के वरिष्ठ अधिकारी भिक्षु थिच मिन्त चान से मिलकर काफी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

बातें हुईं, जो कई वर्षों तक भारत में—विशेषकर नालंदा विश्वविद्यालय में—रहे हैं। यहाँ अनेक नए-पुराने संस्कृत तथा पालि ग्रन्थ हैं। बौद्ध धर्म इस देश में थाईलैंड की तरह ही राजधर्म नहीं है, फिर भी ८० प्रतिशत जनता उसकी अनुयायी है। बौद्ध धर्म यहाँ सामाजिक सेवा और पोषण का माध्यम है।

भगवान बुद्ध का गोली-बिंधा हाथ

यह बात सर्वविदित है कि १ नवम्बर, १९६३ तक यहाँ श्रीमती नूह के संकेतों पर संचालित राष्ट्रपति डीम की सरकार बौद्ध धर्म के कितनी विरुद्ध थी। उसने बौद्ध भिक्षुओं को खुलेआम पिटवाया था, जिसके अन्याय के प्रतिकार में ८ बौद्ध भिक्षुओं ने जीवित अग्नि-समाधि ले ली थी। आज संसार जानता है कि धर्म का अपमान करनेवाले या तो संसार को छोड़ गए, या आज उन्हें कोई पूछता भी नहीं। पिछली सरकार के पागलपन का नमूना तो मैंने सालोई पगोडा में देखा, जहाँ बुद्ध भगवान की मूर्ति पर मदान्ध शासकों ने गोलियाँ चलाई थीं। इस मूर्ति के दाहिने हाथ पर आज भी गोली का निशान है। यह मन्दिर यहाँ का सर्वप्रमुख मन्दिर है।

मुझे १८ जुलाई की रात को सैगोन से बैंकाक के लिए रवाना हो जाना था, किन्तु उस दिन प्रातःकाल का दृश्य तो बिल्कुल युद्धकालीन लगता था। दूसरे दिन नगर में वीटकांग विरोधी प्रदर्शन होने वाला था। जबर्दस्त तैयारियाँ चल रही थीं—इस गरमागरम अफवाह के साथ कि आज-कल में यहाँ जरूर कुछ गम्भीर गड़बड़ी होने वाली है। बाजार की दूकानों पर बड़ी भीड़भाड़ थी। लोग कम-से-कम एक सप्ताह तक के लिए सभी खाद्य-पदार्थों आदि को जुटा कर रख रहे थे—पता नहीं क्या नौबत आ जाए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मैं इसे अपने ऊपर भगवान की बड़ी कृपा समझता हूँ कि मेरे रहते वहाँ कुछ गड़बड़ी नहीं हुई और उससे भी अधिक कृपा मानवता पर है, जो अभी तक कुछ नहीं हुआ। यह कृपा ऐसी ही बनी रहे, यही कामना हम सभी कर सकते हैं। १८ जुलाई की रात्रि में विमान द्वारा मैं थाईलैंड लौट आया।

थाईलैंड में मेरा मिशन पहले ही पूरा हो चुका था जब मैं बर्मा रुकता हुआ यहाँ आया था और लगभग डेढ़ माह रहकर थाईलड के प्रायः सभी मुख्य स्थानों—उत्तर में चेंगनाई से लेकर दक्षिण में हदयाई तक का भ्रमण किया था। अतएव इस बार मैं केवल ५ दिन यहाँ ठहरा और २३ जुलाई को स्वदेश रवाना हो गया। इस प्रकार मेरी ढाई माह से भी अधिक की सुदूर पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों की यात्रा पूर्ण हुई।

—:०:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

रोचक संस्मरण और समस्यायें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मेरी विदेश-यात्रा बनाम धोती

जब मैं विदेश के लिए प्रस्थान करने लगा तो मेरे सामने बिलकुल वही समस्या थी जो नवनिर्वाचित प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के समक्ष उस समय थी जब उन्होंने राष्ट्रमण्डलीय प्रधान मन्त्री सम्मेलन में भाग लेने के लिए लन्दन जाने का निश्चय किया था—दुर्भाग्यवश अपनी अस्वस्थता के कारण वे जा नहीं सके थे। समस्या तो बड़ी नहीं थी, कम-से-कम मेरे लिए, लेकिन जब इसका सम्बन्ध प्रधान मन्त्री से हुआ तो यह अवश्य बड़ी दिखाई पड़ी अन्यथा अखबारों में इसकी इतनी जबर्दस्त चर्चा क्यों होती? समस्या और कोई नहीं—सिर्फ यह थी कि विदेश में कौन-से कपड़े पहने जायँ।

जब मैंने अपने गुरुतुल्य स्वामी कृष्णानन्द जी से इस सम्बन्ध में सलाह माँगी थी तो उन्होंने मुझे पैंट-बुशर्ट या चूड़ीदार पैजामा-शेरवानी की सलाह दी थी। किन्तु चूड़ीदार पैजामा और शेरवानी को मैंने उन्हीं कारणों से अस्वीकार कर दिया जिनसे हमारे नये प्रधान मन्त्री जी ने उसे नहीं अपनाया। फिर भी उस समय मेरी यह समझ में पूरी तरह नहीं आया था कि प्राचीन संस्कृति के पुजारी होते हुए भी स्वामी जी ने धोती और कुर्ते के लिए सुझाव क्यों नहीं दिया? परन्तु चूँकि मैं चूड़ीदार पैजामा और शेरवानी अपने साथ ले नहीं गया था अतएव विकल्प के रूप में धोती-कुर्ता २-३ जोड़ी रख लिये। यह हमारा राष्ट्रीय वेश है यह समझ कर भी इसके प्रति कुछ मोह था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

एक दिन बर्मा में रूकता हुआ सबसे पहले थाईलैंड पहुँचा। सबसे पहले इसलिए कह रहा हूँ कि यहीं के निमन्त्रण पर निकला था और यहीं सबसे अधिक दिनों तक रहना था। यहाँ आने पर शुरू में तो धोती-कुर्ता पहनने का बड़ा उत्साह रहा। भारतीयों के कार्यक्रम में जाने पर भी यही पहनता था और थाई-बन्धुओं से मिलने-जुलने पर भी यही। किन्तु शीघ्र ही मुझे अनुभव होने लगा कि इस देश में धोती की गरिमा नष्ट हो चुकी है और अब इसे हेय दृष्टि से देखा जाता है। यद्यपि, इनकी परम्परागत वेशभूषा में धोती शामिल है और अब भी अनेक परम्परा प्रेमी इसे पहनते भी हैं, किन्तु सामान्य थाई निवासियों ने इसे छोड़ रखा है।

थाईलैंड में धोती की गरिमा नष्ट होने का सबसे बड़ा कारण यह है कि वहाँ भारत के उत्तर-प्रदेश के पूर्वी जिलों से हजारों की संख्या में लोग गये हैं, जो अधिकतर अंगूठा ही दिखाते हैं, अर्थात् अशिक्षित और निरक्षर हैं। ये लोग यहाँ के सम्पन्न घरानों और दुकानों पर दरबानी या रखवाली का काम करते हैं। कुछ लोग दूध बेचते हैं और कुछ लोग खोम्चा लगाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि आधारभूत काम करते हैं। काम कोई बुरा नहीं होता, लेकिन, ये महत्वाकांक्षा-विहीन और लकीर के फकीर हैं। इसीलिए, इनकी स्थिति आज भी वही है, जो कई दशक पूर्व यहाँ आने पर थी। साथ ही इनके विरुद्ध सबसे बड़ी शिकायत यह है कि ये लोग साफ़-सुथरे और सुव्यवस्थित कपड़े नहीं पहनते। बहुतों को इस हालत में देखकर मुझे भी कष्ट हुआ और यह लगा कि इन्हें इस बात का कत्तई अहसास नहीं है कि ये किसी विदेश में है और इनके आचरण पर इनके देश की प्रतिष्ठा निर्भर करती है।

मैं स्वयं भी उत्तर प्रदेश का निवासी होते हुए अपने प्रदेश-बन्धुओं के बारे में इतना कुछ कहने की आवश्यकता सिर्फ यह बताने के लिए कर रहा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हूँ कि वे लोग सच्चे और पुराने भारतीय के नाते धोती ही पहनते हैं। लेकिन, यह एक दुर्भाग्य नहीं तो क्या है कि यह धोती की प्रतिष्ठा सिर्फ इसलिए समाप्त हो गयी कि धोती इन लोगों का पहनावा रहा है और बहुत-से थाई निवासी इन्हें धोतीवाले कह कर सम्बोधित करते हैं, जो एक तरह का व्यंगात्मक सम्बोधन ही है। इसके विपरीत यहाँ रहने वाले अधिकांश पंजाब निवासी भारतीय पूर्णतः पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगे हैं और वे वैसी ही वेश-भूषा धारण करते हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि थाईवासी यह समझने लगे कि भारत में सम्पन्न और शिक्षित लोगों का पहनावा कोट-पैंट अथवा पैंट-बुशर्ट है तथा पर्याप्त साधनों और शिक्षा से रहित लोगों का पहनावा धोती है। हालांकि उन्हें यह स्मरण नहीं रहा कि धोती कभी उनकी पोशाक भी रही है।

धोती के सम्बन्ध में इस भ्रमपूर्ण धारणा के कारण मेरा धोती के प्रति उत्साह कुछ अवश्य कम पड़ा। यद्यपि, मैंने यह ध्यान रखा कि जब किसी थाई निवासी से मिलने जाऊँ अथवा वह मुझसे मिलने आये तो मैं धोती ही पहने हुए रहूँ। इसके कारण एक स्थान पर मुझे अपने देश की प्रशंसा भी सुनने को मिली। मैं एक दिन थाईलैंड के प्रिंस धानी से मिलने गया जिनका औपचारिक महत्व वहाँ सम्राट् के बाद दूसरा माना जाता है। ये वहाँ के जाने-माने विद्वान् भी हैं। मैं उस समय धोती और कुर्ता पहने हुए था। किसी प्रसंगवश उन्होंने मुझे बधाई दी। 'आपने (मेरा देश) अपनी वेशभूषा को बनाये रखा है जब कि हम लोग ऐसा नहीं कर सके।' उस समय प्रिंस धानी भी धोती ही पहने हुए थे। उस समय मुझे अनुभव हुआ कि किसी एक व्यक्ति के आचरण से किस प्रकार लोग उसके पूरे देश के बारे में अच्छी या खराब धारणा बना लेते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

और फारमोसा में तो धोती, प्रतिष्ठा की अपेक्षा कुतूहल की वस्तु अधिक बनी। धोती की प्रतिष्ठा का तो यहाँ कोई प्रश्न ही नहीं उठता था क्योंकि धोती के देश से इस देश का कोई भी महत्वपूर्ण संबंध पिछले १५ वर्षों से नहीं रहा है। मैं भली प्रकार तो यह नहीं बता सकता कि इस देश ने विगत १५ वर्षों में धोती के दर्शन कब किये। हाँ, इतना अवश्य कह सकता हूँ कि इसने भली प्रकार तभी किये जब मेरे यहाँ पहुँचने से ३ दिन पूर्व भारतीय संसद सदस्यों का एक प्रतिनिधि-मंडल यहाँ पहुँचा। पत्रकार के रूप में पहला धोतीवाला शायद मैं ही था। यद्यपि, मैं हमेशा यह नहीं पहनता। मैं रात में यहाँ की राजधानी तापेह पहुँचा था और उस समय पैंट-बुशर्ट में ही था। लेकिन दूसरे दिन मैं धोती कुर्ते में था और यह दिन मानो पूरी तरह से मेरा अपना था। होटल से निकलते ही बेयरों और होटल प्रबंधकों ने हाथ जोड़ कर 'गुडमार्निंग' किया। अपने साथ रहनेवाले सरकारी अधिकारी को मैंने सगर्व यह बताया कि भारत की राष्ट्रीय पोशाक यही है। पता नहीं उसे पसंद आयी कि नहीं, बहरहाल उसने तारीफ बहुत जोरशोर से की मेरी राष्ट्रीय पोशाक की। इसके बाद मुझे तापेह से २०० मील दूर काउशंग नगर हवाई जहाज से जाना था। अतएव हवाई अड्डे के लिये रवाना हुआ। दिन का समय था अतएव हवाई अड्डे पर विद्यमान सभी यात्रियों का ध्यान मेरी ओर था यानी धोती-कुर्ते की ओर। मेरे साथ के सरकारी अधिकारी महोदय सभी जिज्ञासुओं से मेरा परिचय करा रहे थे कि मैं उनकी सरकार के निमंत्रण पर भारत से आया हूँ।

मैं हवाई अड्डे पर उन अधिकारी महोदय के साथ खड़ा था कि एक अंग्रेज सज्जन मेरे पास आये और बोले—"आज आप अपनी सही पोशाक में हैं।" मैंने इसके लिए उन्हें धन्यवाद दिया। बाद में परिचय करने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पर पता चला कि वे भारतीय सेना में रह चुके हैं तथा कुछ समय तक वे पं० जवाहरलाल नेहरू के रक्षक भी रहे हैं, जब वे आजादी की लड़ाई के सिलसिले में जेल में थे।

काऊशंग नगर में पहुँचने पर तो मानो मैं अजायबघर ही बन गया। जिधर से निकलता लोग ताकते ही रह जाते, कहीं-कहीं दुकानदार अपनी दुकानों से बाहर आ जाते और कहीं खड़े होने पर कुछ लोग मेरे आस-पास खड़े हो जाते। शाम को एक कार्यक्रम में भारतीय संसद-सदस्यों से भेंट हुई। इसके बाद दो दिन का मेरा कार्यक्रम इनके साथ था। रात्रि में खरीददारी की गरज से हम लोग अपने होटल से बाहर निकले। एक डिपार्टमेन्टल स्टोर्स में पहुँचे। वहाँ जिस काउन्टर पर खड़े हो जाते अच्छी खासी भीड़ आसपास जमा हो जाती। कहीं-कहीं और ग्राहकों को जाने का मार्ग ही नहीं मिल पाता। यह स्थिति देखकर संसद-सदस्य श्री अटल-बिहारी वाजपेयी ने कहा कि भाई यहाँ तो धोती पहनना अपने को अजायब-घर बनाना है। इसकी वजह से लोगों से हिलना-मिलना ही सम्भव नहीं।

इसके अलावा यहाँ इन सूती कपड़ों को धुलाने की भी विकट समस्या थी। अतएव हम में से अनेक को मजबूरन टेरीलीन का पैंट और बुशर्ट धारण करना पड़ा। यहाँ तक कि प्रतिनिधि-मंडल के नेता श्री डाह्या भाई पटेल (सुपुत्र सरदार पटेल) को भी कुछ कमीजें और पैंट खरीदने पड़े।

मलयेशिया में धोती किसी प्रकार के कुतूहल का विषय नहीं। यहाँ भारतीय—विशेषकर दक्षिण-भारतीय—बड़ी संख्या में हैं। अतएव मलयवासी भारतीय वेशभूषा देखते रहने के लिए अभ्यस्त हैं। इसके अतिरिक्त कंबोडिया और वियतनाम में भी धोती के प्रति किसी ने आश्चर्य और कुतूहल व्यक्त नहीं किया। हाँगकाँग में भी कमोवेश यही स्थिति है।

तो यह है विदेशों में धोती की स्थिति। हाँ, लालबहादुर शास्त्री के प्रधानमन्त्री बनने के बाद इसके सुनहरे दिन आ गये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

भारतीय यात्री और गोमांस

शाकाहारी होने के कारण मुझे हाल की अपनी विदेश यात्रा में कई स्थानों पर कुछ कठिनाई हुई। वैसे तो मैं अधिकतर भारतीय मित्रों के साथ ही ठहरता और खाता था परन्तु जब किसी मजबूरी की वजह से होटल में रहना या खाना पड़ता तो मनको बड़ा कष्ट होता। यह कष्ट केवल इसलिए नहीं होता कि ये होटल अधिकांश मांसाहारियों के लिए खाद्य-पदार्थ बनाते हैं बल्कि इसलिए कि इन होटलों में प्रायः गाय का मांस बनता है। केवल होटल ही नहीं, बड़ी-बड़ी पार्टियों में भी यही खतरा रहता। मैं तो कुछ आवश्यकता से अधिक इस मामले में सतर्क रहता किन्तु हमारे कुछ बन्धु तो इसके शिकार बन ही गये।

फारमोसा यात्रा में मेरे कुछ कार्यक्रम एक संसदीय प्रतिनिधि मण्डल के साथ रखे गये। इस प्रतिनिधि मण्डल में कुछ मांस-भक्षी हिन्दू सदस्य भी थे जो मांसाहारी भोजन के प्रति बड़ा उत्साह दिखाते थे। एक दिन राजधानी ताइपेह में राष्ट्रपति जनरल च्यांग काईशेक और उनकी श्रीमती जीने इस प्रतिनिधि मण्डल के सम्मान में एक भोज दिया जिसमें एक गुझियानुमा चीज गोमांस युक्त थी। इन बन्धुओं ने बड़े प्रेम से इसका भक्षण किया। बाद में संदेह होनेपर जब पूछताछ की गयी तो पता चला कि उसमें गोमांस था। श्रीमती च्यांग को जब यह पता चला कि भारत में हिन्दू गाय की पूजा करते हैं तो उन्होंने इसके लिए क्षमा-याचना की। बहरहाल गोमांसयुक्त गुझिया तब तक उन लोगों के पेट में पहुँच चुकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

थी और उसके परम्परागत शमन के लिए उस देश में गंगाजल, गोमूत्र या गोबर भी उपलब्ध न था।

मैं अपनी दक्षिण वियतनाम की यात्रा पर सैगान गया हुआ था और कुछ भारतीय मित्रों के साथ ठहरा था। यहाँ मैं एक अन्तरराष्ट्रीय संस्था के महामन्त्री से मिलने गया। उन्होंने सौजन्यवश मुझे रात्रि के खाने पर आमंत्रित किया—स्थान था सैगोनका फैशनेबुल होटल। मैंने उन्हें पहले ही बता दिया था कि मैं पूर्णतः शाकाहारी हूँ। अतएव ऐसी ही व्यवस्था मेरे लिये होनी चाहिए। वे राजी हो गये। जब खाने की टेबुल पर बैठे तो मैंने उन सज्जन से कहा कि मेरे कारण आप अपना खाना क्यों खराब करेंगे, अपने लिए आप मांसाहारी भोजन मँगवा सकते हैं। मुझे कोई आपत्ति न होगी।' इस पर उन्होंने दो-एक चीजें मँगवायी और उसके बाद 'बीफ' (गो मांस की कोई चीज), मँगायी। मैंने इसे सुन लिया अतएव वह चीज जैसे ही टेबुल पर आयी मैंने अपना खाना-बन्द कर दिया—पारिवारिक संस्कार जो ठहरे।

किन्तु इस व्यापक गोमांस भक्षण को देखकर मुझे बड़ा विचित्र लगा। कितना परिवर्तन है! यही सारा भूभाग कभी गऊ को माता मानकर पूजन करता था बिलकुल भारतीयों की तरह और आज ये लोग उसके मांस का भक्षण किये बिना रह नहीं सकते। उस समय मुझे अनेक ऐतिहासिक तथ्यों का स्मरण हो आया जो गोपूजन के महत्व को दर्शाते हैं। इस वियतनाम देश के अनाम प्रान्त में एक नगरी थी चम्पा। जहाँ दूसरी शताब्दी से पन्द्रहवीं शताब्दी तक हिन्दू राजा ही राज्य करते थे। ये राजा भारत की तरह गो-ब्राह्मण प्रतिपालक थे और अधिकतर शिव के भक्त थे। इन्होंने अपनी समस्त सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक व्यवस्था भारत की तरह से की थी। इन राजाओं द्वारा निर्मित मन्दिरों के अवशेष आज भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मिलते हैं। माइसोन के मन्दिर में तांडव नृत्य करते हुए शिव का चित्र उत्कीर्ण है। उनके चरणों के पास ही उनका गोरूप नन्दी भी विराजमान है।

थाईलैण्ड में गऊ के महत्व को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। यहाँ के अनेक बौद्ध मन्दिरों में गऊ की मूर्तियाँ मिलेंगी। बैंकाक के संसार प्रसिद्ध बुद्ध मन्दिर में, जिसमें नीलम की बुद्धमूर्ति रखी है, गऊ की प्रतिमा भी स्थापित है और यह अत्यन्त प्रमुख स्थान पर है जहाँ सभी की दृष्टि जाती है।

इसी मन्दिर के बगल में एक और बुद्ध मन्दिर है जिसके अन्दर शिवलिंग और नन्दी—दोनों के दर्शन हुए। मैं बहुत प्रसन्न हुआ।

कम्बोडिया के अंगकोर नाम की अनेक भग्न प्रतिमाओं में भी गऊ की प्रतिमा दिखाई पड़ी। इसमें विद्यमान दो मन्दिर क्रमशः विष्णु और शिवजी को समर्पित हैं तथा इनकी दीवालों पर रामायण और महाभारत के अनेक प्रसंग उत्कीर्ण हैं।

गऊ की प्राचीन गरिमा और वर्तमान दुर्दशा का कारण केवल एक है तथा वह यह कि भारत और भारतीय संस्कृति ने विश्व में अपनी श्रेष्ठता को खो दिया। जब तक यह श्रेष्ठता पुनः अर्जित नहीं की जाती, तब तक गऊ की दुर्दशा में भी कोई अन्तर नहीं पड़ेगा, जिसे–'गावो विश्वस्य मातरः' अथवा 'मातरः सर्वभूतानाम्'–कहा गया है।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दक्षिण-पूर्वी एशिया और हिन्दी

अभी हाल में ही मुझे दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस यात्रा के अन्य अनेक उद्देश्यों के साथ एक उद्देश्य यह भी था कि मैं इन देशों में हिन्दी की स्थिति के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करूँ और यदि इस दिशा में कुछ सम्भव हो तो वह करने का प्रयास करूँ।

इस दृष्टि से सबसे पहले मैं बर्मा गया और वहाँ के हिन्दी भक्तों से मिला। किन्तु वहाँ तो हिन्दी अत्यन्त संकटग्रस्त दिखायी दी, क्योंकि उसके लाखों भक्तों पर ही अभूतपूर्व संकट आया हुआ है। और ये हिन्दी भक्त इस देशको छोड़ने के लिए मजबूर हो रहे हैं, जिस धरती को उन्होंने अपने खून और पसीने से सींचा है। जाहिर है कि जब यहाँ हिन्दी भक्तों का ही भविष्य अन्धकार में है, तो हिन्दी का भविष्य कैसे दूसरा हो सकता है ?

वैसें पहले बर्मा में हिन्दी की स्थिति काफी अच्छी रही है और निस्संकोच यह कहा जा सकता है कि भारत के बाद यदि कहीं हिन्दी की प्रतिष्ठा सबसे अधिक थी, तो वह बर्मा में ही थी। यहाँ हिन्दी भक्तों की ओर से एक हिन्दी साहित्य सम्मेलन का संचालन होता रहा है और सनातन धर्म संघ (पहले का भारतीय स्वयं सेवक संघ) में भी हिन्दी भक्तों की संख्या बहुत रही है। साथ ही 'प्राची प्रकाश' के नाम से एक अच्छा हिन्दी पत्र भी चलता रहा। किन्तु हाल में ही यह वर्तमान बर्मा सरकार की कोपदृष्टि का शिकार बना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मैं बर्मा में अधिकांश हिन्दी भक्तों से मिला, किन्तु उनसे हिन्दी की उन्नति के सम्बन्ध में कुछ भी बातचीत करने का साहस नहीं हुआ। वस्तुतः इस समय वहाँ की समस्या हिन्दी रक्षा की नहीं, बल्कि भारतीयों की रक्षा की है। यदि अब भी वहाँ भारतीयों की रक्षा की दिशा में कोई सुदृढ़ और सफल कदम उठाया जा सके, तो वहाँ हिन्दी की रक्षा भी हो सकती है, अन्यथा हिन्दी का भविष्य भी पूर्णतः अन्धकारमय है।

बर्मा की अपेक्षा थाईलैण्ड में हिन्दी का भविष्य अधिक सुरक्षित है। यहाँ हिन्दी की सेवा करनेवाली चार संस्थाएँ हैं—थाई-भारत संस्कृति आश्रम (थाई-भारत कल्चरल लॉज), आर्य समाज, विष्णु मन्दिर और हिन्दू समाज। थाई-भारत संस्कृति आश्रम के संचालक पं. रघुनाथ शर्मा विगत अनेक वर्षों से स्वयं आश्रम में छात्रों और जिज्ञासुओं को हिन्दी तथा संस्कृत पढ़ाते हैं। इनमें अनेक बौद्ध भिक्षु तथा अन्य छोटे-बड़े थाई निवासी भी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त आश्रम में ही एक पुस्तकालय भी है, जहाँ एक बड़ी संख्या में लोग हिन्दी की पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने आते हैं। शर्मा जी तो हिन्दी के पुराने लेखक भी हैं तथा उनके हृदय में हिन्दी के लिए दर्द है।

आर्य समाज तो हिन्दी सेवा के लिए सर्व-विख्यात है। थाईलैण्ड की शाखा भी इसका अपवाद नहीं है। इसका सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में ही होता है। इस बार मुझे वहाँ के कुछ उत्तरदायी कार्यकर्त्ताओं ने यह भी आश्वासन दिया कि वे शीघ्र ही देश में एक हिन्दी विद्यालय स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। यदि यह कार्य सफल हो सका, तो निश्चय ही हिन्दी की एक महत्वपूर्ण सेवा होगी।

विष्णु मन्दिर द्वारा संचालित संस्था में मुख्यतः उत्तरप्रदेश से गये भारतीय ही हैं। अतएव हिन्दी के प्रति उनका अनुराग स्वाभाविक है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हिन्दू समाज मुख्यतः पंजाब के भारतीयों द्वारा संचालित है। इसी के द्वारा एक भारतीय विद्यालय चलाया जाता है, जिसमें हिन्दी भी पढ़ायी जाती है।

वस्तुतः थाईलैण्ड में हिन्दी के प्रचार के लिए बहुत अनुकूल परिस्थितियाँ हैं। यदि थाई (स्याम) भाषा और हिन्दी में विद्यमान अद्भुत साम्य और एकरूपता का परिचय थाई निवासियों को कराया जाये, तो वे बहुत रुचिपूर्वक हिन्दी सीखने का प्रयास कर सकते हैं और शीघ्र ही इसमें सफलता भी प्राप्त कर सकते हैं। थाई की वर्णमाला प्रायः हिन्दी के ही समान है। वही स्वर और वही व्यंजन। बस थाई में कुछ स्वर अधिक हैं। कहीं-कहीं लिपि में भी साम्य है। और सबसे अधिक साम्य तो है शब्दों का। यदि कई हजार नहीं, तो कई सौ शब्द अवश्य दोनों भाषाओं में एक ही हैं—जैसे राष्ट्र, राजदूत, धनपत्र, दूरलेख, प्रतिदिन, शिल्प-कर्म, अधिपति, स्वर, व्यंजन, भाषा, पाद, मात्रा, धर्मशास्त्र, सहकार, चक्रयान, आकाशयान, वेला, श्रीमान, प्रतिक्रिया, आर्यजन, अनुग्रह, अनुचर, प्रभागार, गुरु, आचार्य, पण्डित, विद्यालय, महाविद्यालय, आजीविका, अनुगामी, चराचर, क्रीड़ा स्थान, उपयोग, आयु, वनस्पति आदि।

यह भाषागत साम्य धार्मिक एवं सांस्कृतिक साम्य का द्योतक है। आवश्यकता है वहाँ के दूतावास और प्रवासी भारतियों द्वारा अपने राष्ट्रहित की भावना से प्रेरित होकर इसे विकसित करने की।

मलयेशिया में भारत के प्रायः सभी भागों के भारतीय अच्छी संख्या में हैं। वहाँ की सरकार में भी ये अच्छे पदों पर हैं। इनमें अधिकांश दक्षिण भारत के हैं। उत्तर भारत के भारतीय व्यापार और निजी सेवाओं में हैं। अतएव हिन्दी के प्रचार और प्रसार की गुंजाइश यहाँ भी कम नहीं है, जबकि मलय भाषा में भी संस्कृत, हिन्दी और तमिल के सैकड़ों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

शब्द हैं। पिनांग और क्वालालम्पुर में तो नहीं, किन्तु सिंगापुर में हिन्दी के प्रति कुछ जागरूकता अवश्य दिखायी दी। यहाँ आर्य समाज के कुछ उत्साही कार्यकर्त्ता हिन्दी की निःशुल्क शिक्षा दे रहे हैं तथा नेताजी हिन्दी स्कूल में भी भारतीय और मलयवासियों को हिन्दी-शिक्षा दी जाती है। यहाँ के भी हिन्दी भक्तों ने यह आश्वासन दिया है कि वे भविष्य में हिन्दी की और अधिक सेवा करेंगे।

और हांगकांग तो पूर्णतः पश्चिम प्रभावित नगर है। यहाँ का रहन-सहन और वातावरण बिल्कुल उसी प्रकार है और यहाँ रहनेवाले भारतीयों ने भी अपने को पूर्णतः उसी रंग में रंग लिया है। मैंने उनमें से अधिकांश में भारतीयता के प्रति कोई विशेष आग्रह नहीं पाया और जब उसी के लिए यहाँ गुंजाइश नहीं, तो उसकी चेरी हिन्दी को स्थान कहाँ मिलेगा! वैसे तो मैंने इन सभी देशों में यह देखा कि यहाँ रहनेवाले सम्पन्न भारतीय व्यापारी अपनी सन्तानों को अंग्रेजी में ही शिक्षा दिलाते हैं, और कुछ तो शायद यहाँ तक प्रयास करते हैं कि इन्हें कहीं हिन्दी की हवा न छू जाये। अतएव वे अपने बच्चों से अंग्रेजी में ही बातें करते हैं। मुझे यहाँ और वियतनाम में कुछ ऐसे भारतीय बच्चे मिले, जिन्हें न तो हिन्दी और न ही उनकी मातृभाषा आती थी। मजबूर होकर मुझे इन बच्चों से अंग्रेजी में बातचीत करनी पड़ी।

इधर बर्मा की घटनाओं के बाद कुछ भारतीयों ने अपने बच्चों को हिन्दी पढ़ाने की आवश्यकता समझी है, इस आशंका के कारण कि कहीं उन्हें भी भारत न लौटना पड़े और यदि ऐसा हुआ, तो हिन्दी न जानने पर भारत में क्या होगा। इसके पीछे भी उपयोगिता का ही सिद्धान्त है। विदेशों में स्थित अधिकांश साधन सम्पन्न भारतीय अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूलों में ही भेजते हैं जहाँ वे भारत में शिक्षा प्राप्त करने पर भी भारतीयता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

से दूर रहते हैं। और उन्हें यह कहने में प्रसन्नता होती है, "आई ऐम सारी, आई डोण्ट नो हिन्दी !" (मुझे दुःख है कि मुझे हिन्दी नहीं आती ।)

हांगकांग में मुझे एक घटना से बड़ा कष्ट हुआ। भारत के कुछ संसत्सदस्य इधर के देशों की यात्रा करते हुए हांगकांग आये। उनमें से कुछ एक भारतीय की दूकान पर खड़े होकर उससे बातचीत करने लगे। लेकिन यह बातचीत उन्होंने अंग्रेजी में की। संयोग से वहीं एक कनाडा निवासी महिला खड़ी थी। जब ये संसत्सदस्य चले गये, तो उसने भारतीय दूकानदार से पूछा, "आप लोग आपस में भी अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं। क्या आपके देश की अपनी कोई भाषा नहीं है?" भारतीय दूकानदार के लिए लज्जा से सिर झुका लेने के अलावा और कोई चारा न था।

मुझे भी विदेशीपन से पीड़ित अनेक भारतीयों से मिल कर एक विचित्र प्रकार का अनुभव हुआ और मन में विचार आया—क्या कोई सिर्फ इसलिए भारतीय है, कि वह भारत में पैदा हुआ है? अथवा उसके लिए कुछ भारतीयता या भारतीय आदर्शों का पालन करना भी जरूरी है? भाषा कोई महत्वहीन अथवा बाह्य तत्व नहीं है, इसमें उस देश की आत्मा, उसकी संस्कृति का बोध होता है, जो राष्ट्रीयता और राष्ट्रभक्ति के लिए आवश्यक है। अपनी भाषा का आग्रह छोड़कर कैसे एक भारतीय सच्चे अर्थों में भारत का पूर्ण राष्ट्रीयता से युक्त प्रतिनिधि कहला सकता है? विदेशों में तो अपने राष्ट्रीय तत्वों का और भी अधिक आग्रह आवश्यक होता है। तभी तो दूसरे देश भारत के बारे में यह जान सकते हैं कि इस देश की भी अपनी कोई भाषा है, कोई संस्कृति है।

अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त करने में कोई विवेकशील व्यक्ति नहीं रोकेगा। किन्तु अंग्रेजी एक अन्तरराष्ट्रीय व्यवहार की ही भाषा है, इससे अधिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

इसका कोई महत्व नहीं। उसके आगे मातृभाषा और राष्ट्रभाषा की उपेक्षा करना अपनी राष्ट्रीयता और देशभक्ति का ही मजाक उड़ाना है। इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, ताकि विदेशों में भारत तथा भारतीयों की और अधिक हास्यास्पद स्थिति न बनी रहे। विदेश विभाग को चाहिए कि वह ऐसे अधिकारियों को ही विदेशों में भेजे, जिन्हें राष्ट्रभाषा का कुछ ज्ञान हो तथा वे यह कहने में लज्जा का अनुभव करते हों कि उन्हें हिन्दी नहीं आती। प्रवासी भारतीय तथा उनकी संस्थाएं भी अब इस ओर विशेष रूप से उन्मुख हों।

यदि विदेशों में राष्ट्रभाषा हिन्दी के आग्रह का अभाव रहा, तो अनजाने में ही यह राष्ट्र की प्रतिष्ठा पर सबसे बड़ा आघात होगा। अब भी समय है, हम चेतें !

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अंग्रेजी का भूत सिर्फ भारत में

मुझे देश की सर्वोच्च सत्ता पर आसीन एक प्रमुख राजपुरुष से भेंट करने का अवसर मिला। उनसे भेंट हुई और अपनी विदेश यात्रा के अनुभवों के आधार पर विचार-विमर्श हुआ। इसे तो निश्चित ही मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ किन्तु उनसे मुझे अंग्रेजी में बात करनी पड़ी, इस बात ने मेरे मन को कचोटा। इसलिए कि अपने देशवासी से बात करने के लिए भी अंग्रेजी का सहारा लेना पड़ता है। यह मजबूरी इस कारण थी कि उस परम सम्मानित राजपुरुष को हिन्दी नहीं आती है और मुझे उनकी मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा नहीं आती। ठीक भी है। भारत इतना बड़ा देश है, कितनी ही भाषायें यहाँ चलती हैं और सभी से यह आशा नहीं की जा सकती कि उसे हिन्दी का ज्ञान हो ही। किन्तु देश के स्वतन्त्र होने के १७ वर्ष बाद भी आज राष्ट्र के किसी महत्वपूर्ण राज-पद पर विद्यमान राजनेता को राष्ट्रभाषा की काम-चलाऊ जानकारी भी न हो, यह एक चिंता की बात अवश्य है। देश के अन्य सामान्य भाषाभाषी जन के लिए हिन्दी का महत्व एक भाषा तक ही सीमित रह सकता है किन्तु राष्ट्र की सरकार के किसी राजनेता के लिए नहीं, जिसने (सरकार) हिन्दी को राष्ट्रभाषा या राजभाषा के रूप में स्वीकार किया है। राष्ट्र की राजसत्ता पर आसीन किसी भी नेता या अधिकारी के लिए तो यह भाषा उसी प्रकार से श्रद्धास्पद है, जिस प्रकार से राष्ट्र या राज्य की श्रद्धा के अन्य प्रतीक।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

विदेशी भाषा के कारण श्रेष्ठता नहीं

सच तो यह है कि अंग्रेजी भाषा का जितना भूत भारत पर सवार है, उतना अंग्रेजी भाषी देशों के अतिरिक्त और कहीं नहीं है। यहाँ अंग्रेजी भाषा का जानकार अपने को अपेक्षाकृत कुछ श्रेष्ठ मानता है, भले ही उसे अपनी राष्ट्रभाषा या मातृभाषा का भली प्रकार ज्ञान न हो। यह मानसिक गुलामी या हीनता की भावना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। इसके विपरीत ऐसे कितने ही छोटे-छोटे देश हैं जो अपने यहाँ अंग्रेजी को कतई महत्व नहीं देते और फिर भी उनमें किसी प्रकार की हीनता की भावना नहीं। उनके भी बड़े-से-बड़े नेता अंग्रेजी नहीं जानते और उस पर भी वे अपने देश के भाग्य विधाता हैं और दृढ़ता तथा आत्मविश्वास के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का निर्वाह करते हैं। मेरी सैगोन में दक्षिण वियतनाम के विदेश मंत्री डा० फान हुई कवात से भेंट हुई और उन्होंने मुझसे एक दुभाषिये के जरिये अपनी वियतनामी भाषा में बात की। भारत सरकार तो कभी यह सोच भी नहीं सकती कि विदेश विभाग से सम्बन्धित कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति, बिना अंग्रेजी ज्ञान के अपना काम चला सकता है। फारमोसा में वहाँ के प्रतिरक्षा–उप मंत्री जनरल च्यांग चिन कुओं से जब भेंट हुई तो उन्होंने भी अपनी भाषा में ही बात की जब कि श्री च्यांग वहाँ के राष्ट्रपति जनरल च्यांग काईशेक के लड़के हैं। वहीं एशियाई जनता कम्युनिस्ट विरोधी लीग के महानिदेशक श्री कू से लगभग दो घंटे बातें हुई और उनके मुँह से अंग्रेजी का एक शब्द भी नहीं निकला जब कि इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था को शालायें दर्जनों देशों में है–विशेषकर अंग्रेजीदां देशों में। थाईलैंड में कुछेक वरिष्ठ अधिकारियों को छोड़कर शेष ने अंग्रेजी के ज्ञान को आवश्यक नहीं समझा और इसके कारण उनमें कहीं भी हीनता की भावना नहीं। सिर्फ अधिकारियों की ही बात

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नहीं, वहाँ के एक शीर्ष पदस्थ नेता को पर्याप्त अंग्रेजी का ज्ञान नहीं। रेल के टिकटों पर—यहाँ तक कि थाईलैंड से मलयेशिया जानेवाली इन्टर नेशनल एक्सप्रेस के टिकट पर भी अंग्रेजी के किसी शब्द के दर्शन नहीं हो सकते—यद्यपि इस ट्रेन के लगभग आधे यात्री विदेशी होते हैं। वे समझते हैं कि जिसकी गरज होगी, वह खुद थाई भाषा सीखेगा या उसके लिए अपनी कोई अन्य व्यवस्था करेगा।

और कम्बोडिया इससे भी चार कदम आगे है। वहाँ तो जैसे अंग्रेजी का नामलेवा भी कोई नहीं। पूरे कम्बोडिया में एक भी अंग्रेजी का अखबार आप नहीं पायेंगे जो वहाँ से प्रकाशित होता हो। वहाँ के लोग फ्रेंच के जानकार हैं।

स्पष्ट है कि ये देश अन्तर्राष्ट्रीय उपयोग के लिए भी अंग्रेजी की पढ़ाई आवश्यक नहीं समझते जैसा कि अपने देश में एक बहुत बड़ा भ्रम विद्यमान है। ये देश अपने बालकों का श्रम, समय और दिमाग एक विदेशी भाषा में पूर्णता प्राप्त करने में बरबाद नहीं करवाते। ये कुछ दर्जन अंग्रेजी जाननेवालों से अपने देश का कारोबार चला सकते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सुभाष बोस की स्मृतियों में डूबी सिंगापुर की वह शाम

जब मैं अपनी दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों की यात्रा के सिलसिले में मलयेशिया आया और पिनाँग, कुआलालमपुर होता हुआ सिंगापुर पहुँचा, तो मुझे ऐसा लगा कि जैसे मैं अपने किसी राष्ट्रीय तीर्थ में आ गया हूँ। एक विदेश और राष्ट्रीय तीर्थ—यह कैसी बात ! हाँ, सिंगापुर के पीछे कुछ बात ही ऐसी निराली है। सच बात तो यह है कि भारत की आजादी के लिए जितना जबर्दस्त मोर्चा सिंगापुर में स्थापित किया गया, उतना अन्यत्र कहीं सम्भव नहीं हुआ। और इसके संस्थापक और सूत्रधार थे भारतीय स्वातन्त्र्य-इतिहास के सर्वाधिक पराक्रमी और क्षमतावान नेता सुभाषचन्द्र बोस, जिनकी तेजस्विता और पराक्रम को भारत की अपेक्षा कहीं अधिक दक्षिण-पूर्वी एशिया ने ही देखा। सिंगापुर इसी का प्रमुख केन्द्र बना। इसी महानगर में नेताजी ने सन् १९४३ में भारत की आजाद हिन्द सरकार की स्थापना की, जिसकी अपनी फौज, अपनी मुद्रा, अपना झण्डा आदि सभी कुछ था।

ऐसे ऐतिहासिक नगर सिंगापुर को देखने की इच्छा स्वाभाविक थी—विशेषकर इसलिए भी कि 'धर्मयुग' सम्पादक ने दक्षिण-पूर्व की यात्रा पर रवाना होने से पूर्व मुझे आजाद हिन्द सेना से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य एकत्रित करने का सुझाव दिया था। सौभाग्य से सिंगापुर आते ही मेरा जो पहला सार्वजनिक कार्यक्रम हुआ, उसमें उपस्थित होनेवाले व्यक्तियों से परिचय करने पर यह पता चला कि इनमें कई लोग आजाद हिन्द सेना के सेनाधिकारी और सैनिक रहे हैं। स्वाभाविक था कि मुझे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

इस अनायास ही हुई उपलब्धि से बड़ी प्रसन्नता होती और मैंने उनसे निवेदन किया कि आप लोगों ने मेरे कई कार्यक्रम अपने मन से निश्चित किये हैं, एक मेरे मन से भी निश्चित कर लीजिए और वह यह कि नेता जी सुभाषचन्द्र बोस तथा उनकी आजाद हिन्द सेना और सरकार से सम्बन्धित सभी स्थानीय व्यक्तियों की एक गोष्ठी बुलाये जाये। सभी ने मेरे अनुरोध का स्वागत किया—विशेषकर सेठ मक्खनलालजी ने, जो नेताजी के कुछ भामाशाहों में से एक थे। यह भी एक शुभ संयोग था कि मैं इन्हीं के यहाँ ठहरा था। ये सिंगापुर आनेवाले भारतीयों के प्रति विशेष रूप से सहृदय और सहायक हैं।

दूसरे दिन रात्रि में एक भारतीय व्यापारी श्री सी० वी० परसराम के यहाँ ऐसे लगभग सभी स्थानीय व्यक्ति एकत्र हुए, जो कभी नेता जी के महान व्यक्तित्व और कृतित्व के निकट आये थे। इनमें कुछ आजाद हिन्द सेना के लेफ्टिनेण्ट, मेजर आदि थे और कुछ, कुछ समय तक नेताजी के चौबीसों घण्टे के अंग रक्षक भी थे। यद्यपि यह कार्यक्रम बिल्कुल अनौपचारिक था, किन्तु मैंने इसे कुछ औपचारिकता प्रदान की—वह यह कि ऐसे सभी भूतपूर्व स्वातन्त्र्य सेनानी नेताजी से सम्बन्धित अपने प्रमुख संस्मरण सुनायें, साथ ही यह भी बतायें कि वे आज अपनी मातृभूमि के कल्याण के सम्बन्ध में क्या सोचते हैं और क्या करने का विचार रखते हैं, क्योंकि उनसे विचार-विमर्श के बाद मेरी यह पहले ही धारणा बन गयी थी कि इनके हृदय की आग वही है, उसका ताप वही है। बस उस पर परिवर्तित समय और परिस्थितियों की राख पड़ी है, जिसे जरा भी हटाकर देखने से आग की ज्वाला साफ दिखायी पड़ती है।

मैं उस रात्रि की गोष्ठी का विवरण हूबहू आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ, ताकि आप भी उस राख-आच्छादित ज्वाला का दर्शन कर सकें, जिसे मैंने सिंगापुर में किया था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

आजाद हिन्द सेना में लेफ्टिनेण्ट और अब वस्त्र के व्यापारी श्री गुलाबजी ने गोष्ठी का शुभारम्भ करते हुए कहा कि नेता जी की सबसे बड़ी विशेषता उनकी निर्भीकता और साहस था। एक बार सिंगापुर की ही विशाल सार्वजनिक सभा में वे भाषण दे रहे थे। सभा में मुख्यतः आजाद हिन्द सेना के सेनानी थे और उस समय जापान के प्रधान मन्त्री जनरल तोजो भी वहाँ उपस्थित थे। नेताजी ने भाषा में प्रसंगवश यह बात स्पष्ट कह दी कि—'यदि जापानी यह समझते हों कि अंग्रेजों के बाद उनका महत्व भारत में हो जायेगा, तो उनसे बढ़कर बेवकूफ और कोई नहीं। भला हम एक गदहे को छोड़कर दूसरे को कैसे स्वीकार कर सकते हैं ?' जब इसका अनुवाद करके जापानी नेता को बताया गया, तो वह सुभाष बोस का मुँह ताकता रह गया था। नेता जी ने सदा भारतीयों को जापानियों के बराबर दर्जे पर ही रखा।

गुलाब जी ने यह भी बताया कि नेता जी युद्ध के कैदी (प्रिजनर आफ वार) बनना चाहते थे, ताकि अंग्रेज सरकार उन्हें और उनके कार्यों को मान्यता दे दे। इसके लिए वे जनरल मैकआर्थर के सामने ही आत्म-समर्पण करना चाहते थे। किन्तु इसके पूर्व ही विमान दुर्घटना में उनकी रहस्यपूर्ण मृत्यु हो गयी। नेता जी कहा करते थे कि पूर्ण युद्ध सम्पूर्ण प्रयास ही चाहता है, आंशिक नहीं।

सबसे महत्व की बात गुलाब जी ने यह बतायी कि नेता जी कहा करते थे कि—'हमें तो देश की आजादी की एक चिनगारी ही जलानी है। हमारे सामने यह एक भीषण ज्वाला बनकर अंग्रेजी साम्राज्य को राख कर दे, यह आवश्यक नहीं।'

आज के सम्बन्ध में गुलाब जी ने कहा कि हमारे एक नेता एन. राघवन सन् १९४३ में कहते थे कि जनतान्त्रिक प्रणाली सर्वोत्कृष्ट है, लेकिन वह धीरे-धीरे आनी चाहिए। उनकी वह बात आज की परिस्थितियों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

में विचारणीय है। एक बात आपने यह भी कही कि धर्मनिरपेक्ष राज्य अनुचित और अनावश्यक है।

श्री गोविन्दराम (लेफ्टिनेण्ट—अब व्यापारी) ने कहा कि एक बार नेताजी ने हम लोगों से पूछा कि अगर सड़क पर लड़ाई चल रही हो और कहीं से एक अंग्रेज का बालक आ जाये तो उसे मारोगे या नहीं? इस पर हम लोगों ने विभिन्न बातें कहीं। तब नेताजी ने कहा कि हमारे सामने सिर्फ अपना लक्ष्य होना चाहिए, फिर उसके बीच जो भी आये उसकी परवाह नहीं। साँप का बच्चा छोटा होने पर भी उतना ही खतरनाक है।

आज की परिस्थितियों के सुधार के लिए श्री गोविन्दराम क्रान्तिकारी सरकार के समर्थक थे।

श्री दशरथ सिंह (नायक–अब नौकरी कर रहे हैं) ने कहा कि नेताजी खुद त्यागी थे, इसलिए उनकी वाणी में शक्ति थी और वह शक्ति त्याग के लिए प्रेरित करती थी। और तभी उनमें नियन्त्रण करने की शक्ति भी थी।

आज की परिस्थितियों के बारे में आपने कहा कि इस समय भारत का नेतृत्व वही कर सकता है, जो त्यागी हो। साथ ही आपने गाँवों में सैनिक शिक्षा पर विशेष जोर दिया।

श्री रामनरेश राय (लान्स नायक—अब पहरेदारी की नौकरी करते हैं) ने कहा कि नेताजी कहते थे कि भारत की आजादी लेना है, चाहे चालीस में से बीस करोड़ बलिदान हो जायें। बड़ी चीज की कीमत भी बड़ी होनी चाहिए, क्योंकि आसानी से मिलने वाली चीज आसानी से चली जा सकती है। नेताजी को हारने का कोई अफसोस न था। वे कहते थे कि हम अपना कर्तव्य कर चुके, दिल्ली नहीं पहुँचे, तो कोई बात नहीं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

आपने यह भी बताया कि जिस समय नेताजी की मृत्यु की सूचना हमें मिली, हम पछाड़ खाकर गिर पड़े थे और हम में से कई आत्महत्या के लिए तत्पर हो गये। आपने शिक्षा पर विशेष जोर दिया।

अब बारी थी श्री रामचन्द्रजी (लेफ्टिनेण्ट–आज व्यापारी) की। वे बोले--नेताजी मानो आग के शोले थे। उनमें कोई आकर्षण था, जो अपनी ओर खींचता था। उन्होंने मामूली आदमियों को उठाकर एक विशाल सेना बना दी—वह भी दुनिया की एक बड़ी सेना। उन्होंने कहा था कि जब तक संगठन और प्रशिक्षण नहीं होगा, तब तक हम हारते रहेंगे। इसीलिए उन्होंने इन पर जोर दिया।

शंकरजी (लेफ्टिनेण्ट—आज व्यापारी) ने कहा कि जब देश से सच्चा प्यार होता है, तभी उसके लिए बलिदान की भावना जाग्रत होती है।

इसके बाद नेताजी की वीरता के प्रसंग का वर्णन करते हुए आपने बताया कि जिस समय नेताजी ने 'दिल्ली चलो' का नारा लगाया था, उस समय अंग्रेजों को साफ बता दिया था कि जब हम भारत से आये तो दुनिया की कोई ताकत हमें नहीं रोक सकी और जिस समय हम वहाँ वापस जाना चाहेंगे, उस समय दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकेगी।

इनके अतिरिक्त कुछ अन्य भूतपूर्व सैनिकों ने भी अपने विचार व्यक्त किये। सभी को यह जानकर बड़ी प्रसन्नता और सन्तोष मिला कि भारत नेताजी और आजाद हिन्द फौज को नहीं भूला है।

दूसरे दिन इन्हीं बन्धुओं की कृपा से मैंने सिंगापुर और आस-पास का क्षेत्र घूम कर वे सभी स्थान देखे, जो नेताजी और उनकी फौज तथा सरकार से सम्बन्धित रहे हैं। वह मकान देखा, जिसमें नेताजी रहते थे, वह स्थान देखा जहाँ आजाद हिन्द सेना का प्रशिक्षण होता था और वह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सिनेमा हॉल (कैंठे) देखा, जिसमें भारत की आजाद हिन्द सरकार की स्थापना की गयी थी, जिसमें जापान सरकार से कुछ सन्धियाँ भी की थीं। इसी सरकार ने अण्डमान और नीकोबार द्वीपों को 'शहीद द्वीप' का नाम दिया था।

इस प्रकार विदेश में अपने एक राष्ट्रीय तीर्थ की झाँकी और उसका माहात्म्य पूर्ण हुआ। अब क्या मेरी तरह आपके मन में भी यह बात नहीं उठती कि ऐसे स्थान पर नेताजी का एक उपयुक्त स्मारक बने, जो केवल भारतीय ही नहीं, संसार के समस्त स्वातन्त्र्य प्रेमियों के लिए प्रेरणा-केन्द्र हो ?

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दक्षिण-पूर्वी एशिया और भारत की प्रतिष्ठा

मैंने वर्मा से लेकर फारमोसा तक की यात्रा की। यात्रा की समाप्ति के वाद जब मैं उस पर एक विहंगम दृष्टि डालता हूँ, तो तरह-तरह के प्रश्न मेरे मस्तिष्क में उठते हैं। एक प्रश्न प्रमुख रूप से उठता है कि दक्षिण-पूर्वी एशिया के इन देशों में, जो अभी हमारे वृहत्तर भारत के ही अंग थे, क्या वस्तुतः आज भी भारत के प्रति वही आत्मीयता की भावना व्याप्त है ? और जब इस प्रश्न का उत्तर सोचता हूँ तो मन एक विचित्र विषाद की भावना से भर उठता है।

ऐसा लगता है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमें इन देशों के साथ मैत्री और सद्भावना के सम्बन्ध स्थापित करने का जैसा आग्रह होना चाहिए था, दुर्भाग्य से वैसा नहीं रहा। इसका कारण शायद यह हो सकता है कि हमने इन छोटे-छोटे राष्ट्रों की मैत्री की महत्ता को भली प्रकार नहीं समझा। हमने उन राष्ट्रों की ओर अवश्य ध्यान दिया जो हमसे बड़े थे, किन्तु जो हमसे छोटे देश थे—विशेष रूप से दक्षिणी-पूर्वी एशियाई देश—उनसे घनिष्ठतम सम्वन्ध स्थापित करने की ओर हमारा ध्यान अपेक्षित रूप से नहीं रहा, जबकि हमें इस दिशा में बहुत अधिक प्रयास करने की आवश्यकता नहीं होती। यदि इस ओर हमारा थोड़ा भी ध्यान रहा होता, तो भी पर्याप्त था, क्योंकि धर्म और संस्कृति का जो अक्षयकोष भारत से उन्हें प्राप्त हुआ है और आज भी जिनसे हमारा पर्याप्त धार्मिक एवं सांस्कृतिक साम्य है, उसके फलस्वरूप वे भारत को स्वाभाविक रूप से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अपना सांस्कृतिक नेता मानते रहे हैं। किन्तु आवश्यकता थी इस ओर विशेष ध्यान देकर इस सांस्कृतिक नेतृत्व को बनाये रखने की। दुर्भाग्य यही है कि इसकी रक्षा नहीं की जा सकी। यही कारण है कि कल तक भारत को बड़ा भाई माननेवाले देश आज उसके और उसके नागरिकों के विरुद्ध ऐसा कदम उठा बैठते हैं जो सामान्यत: कोई मित्र देश अपने मित्र के विरुद्ध उठाने का साहस नहीं कर सकता।

चीनी आक्रमण के बाद

दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों की दृष्टि में भारत का वह नेतृत्व अथवा उसकी वरिष्ठता यद्यपि पहले से ही क्षतिग्रस्त हो चली थी, किन्तु चीनी आक्रमण के बाद तो वह मानो पूर्णतः धराशायी ही हो गयी हो। इस आक्रमण से हुई भारत की पराजय ने उसे सर्वाधिक प्रभावित किया है और आज इन देशों में रहनेवाला प्रत्येक भारतीय भी एक विचित्र प्रकार की आत्मीयता का अनुभव करने लगा है। उसका स्वाभिमान वह नहीं रहा जो कभी था। यही कारण है कि आज साम्यवाद के विरोधी देश भी और वे देश भी, जो चीन की आक्रमणकारी वृत्ति से भली-भाँति परिचित हैं, चीन से सिर्फ इसलिए अच्छे सम्बन्ध रखना चाहते हैं, क्योंकि उन्हें उसकी शक्ति से भय है, आशंका है।

इसका सबसे अधिक दु:खद पक्ष तो यह रहा कि जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया तो अनेक छोटे-छोटे देश खुलकर उसकी निंदा करने का भी साहस नहीं कर पाये। और कुछ देशों ने इस प्रश्न पर पूर्णतः तटस्थतावादी रुख अख्तियार किया तथा भारत और चीन दोनों को एक ही स्तर पर बैठाया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

विदेशी सेवाओं की निष्क्रियता

स्पष्ट है कि इस स्थिति का सबसे अधिक दोष भारत के विदेश स्थित दूतावासों तथा कार्यालयों पर है। मैंने दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों में भ्रमण के दौरान, वहाँ रहनेवाले भारतीयों की तो यह आम शिकायत पायी कि भारतीय दूतावास उनके हितों का समुचित प्रतिपादन नहीं करते। साथ ही मैंने यह भी अनुभव किया कि दूतावासों के अधिकारी एवं कर्मचारी बिल्कुल सरकारी भावना से काम करते हैं। मैंने उनमें ऐसी कर्त्तव्यपरायणता की भावना बहुत कम पायी कि वे लोग केवल वेतनभोगी सरकारी कर्मचारी ही नहीं राष्ट्र के सच्चे प्रतिनिधि भी हैं और उनके परिश्रम, आचरण और व्यवहार पर सम्पूर्ण राष्ट्र की प्रतिष्ठा निर्भर करती है। मैं ऐसा नहीं कहता कि विदेशी सेवाओं में सभी ऐसे हैं। वस्तुतः कुछ बहुत योग्य, कर्मठ और कर्त्तव्यपरायण भी हैं, किन्तु इनकी संख्या निश्चय ही बहुत कम है। कुछ राजनयिक अधिकारी अपने देश की सामान्य जनता से घुलना-मिलना ही नहीं पसन्द करते और कुछ अधिकारियों को तो यहाँ तक कहते सुना गया कि वे लोग तो सिर्फ दो देशों के बीच सम्बन्ध निर्वाह के लिए ही हैं।

वस्तुतः यह कार्य राष्ट्र सेवा की भावना से प्रेरित होकर ही करने का है मात्र कर्मचारी या अधिकारी भावना से करने का नहीं। अन्यथा वे न तो दो देशों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को घनिष्ठ और परिपुष्ट बनाने में सक्षम हो सकते हैं और न अपने देश के बारे में वहाँ अच्छी धारणा उत्पन्न कर सकते हैं। पश्चिमी राष्ट्रों की तरह दक्षिणी-पूर्वी एशियाई देशों में ऐशोआराम के लिए बहुत अनुकूल परिस्थितियाँ हैं। यदि हमारे राजनयिक प्रतिनिधि भी इन परिस्थितियों में फँसते हैं तो निश्चय ही इसका प्रभाव भारत-जैसे देश की प्रतिष्ठा पर अच्छा न पड़ेगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

चीनी आक्रमण के बाद इन देशों की प्रतिष्ठा पर किसी प्रकार की भी आँच आने का सीधा अर्थ है हमारे दूतावासों ने अपेक्षित मात्रा में अपने कर्त्तव्य का निर्वाह नहीं किया। साथ ही चीन और पाकिस्तान के विरुद्ध अपने दावे के पक्ष में इस क्षेत्र में जन-जागृति नहीं की। आज भी इधर के लोगों और इन देशों की सरकारों के अनेक अधिकारियों में बहुत-सी गलत-फहमियाँ हैं।

बर्मा का अनुचित उदाहरण

यह सारी गड़बड़ी चल ही रही थी कि बर्मा ने अपनी नयी नीतियों के कारण ५ लाख भारतीयों को बेरोजगार और बेघरबार कर देने का दुःसाहस किया और इस सम्पूर्ण क्षेत्र में एक बहुत ही अवांछित उदाहरण पेश कर दिया। भारत सरकार तथा इन ५ लाख भारतीयों द्वारा बर्मी सरकार की उन अन्यायपूर्ण नीतियों को चुपचाप सहन कर लिये जाने से दक्षिण-पूर्वी एशिया में भारतीयों की स्थिति पूर्णतः अरिक्षत हो गयी है। बर्मा के इस कार्य की अन्य राजधानियों में भी चर्चा होने लगी। इधर कम्बोडिया भी बर्मा की दिशा में ही उन्मुख दिखाई पड़ता है। वहाँ अनेक प्रमुख उद्योगों के बाद आयात और निर्यात व्यापार का भी राष्ट्रीयकरण कर दिया गया है। इससे कम्बोडिया में विद्यमान भारतीय व्यापारियों पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा है।

व्यापार में भारत का पिछड़ापन

वैसे तो दक्षिण–पूर्वी एशिया के अनेक देशों का अधिकांश व्यापार चीनियों के हाथ में है, लेकिन इस क्षेत्र में जिन देशों के माल की खपत होती है वे प्रमुख रूप से जापान, अमेरिका, जर्मनी, आस्ट्रेलिया आदि हैं। जापान के मुकाबले भारतीय माल यहाँ सस्ता नहीं पड़ता। इसलिए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

इन देशों में भारत का माल कम मँगाया जाता है। किन्तु यदि भारत के प्रति सद्भावना रखनेवाले लोग अथवा देशभक्त प्रवासी भारतीय व्यापारी यहाँ से कुछ माल मँगाते भी हैं तो यहाँ के कुछ अत्यधिक स्वार्थी और अदूरदर्शी व्यापारी अच्छा माल न देकर अथवा उसमें ईमानदारी न बरत कर हमेशा के लिए अपनी और अपने देश की प्रतिष्ठा को कलंकित कर देते हैं। इन देशों में भारत से निर्यात करनेवाले व्यापारियों की अनेक शिकायतें सुनने में आयी है। कहना न होगा कि भारत के ऐसे स्वार्थी व्यापारियों ने भी अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में भारत की प्रतिष्ठा बहुत गिरायी है।

भारतीय मुद्रा का मूल्य गिरा

इन देशों में सबसे अधिक दुःख यह देखकर होता है कि यहाँ भारतीय रुपये की प्रतिष्ठा और मूल्य बहुत गिर गया है। भारत का रुपया कभी यहाँ पौंड और डालर की तरह महत्वपूर्ण माना जाता था, किन्तु आज यह स्थिति नहीं। उदाहरणार्थ, थाईलैंड में चलने वाली मुद्रा टिकल और रुपये की सरकारी विनिमय दर है लभगभग साढ़े चार टिकल बराबर एक रुपये के। लेकिन बाजार में यह दर दूसरी है और वह है एक रुपया बराबर ३ या पौने तीन टिकल के। इसी अनुपात में रुपये का मूल्य ह्रास अन्य मुद्राओं के सम्बन्ध में भी हुआ है। मुद्रा के मूल्य से भी किसी देश की प्रतिष्ठा का अनुमान लगाया जाता है। थाईलैंड और मलयेशिया जैसे छोटे देशों की मुद्राओं की साख भारतीय मुद्रा से भी अधिक होना हमारे लिए निश्चित ही दुर्भाग्य की बात है।

भारत क्या करे ?

यह सारी स्थिति निश्चय ही दुर्भाग्यपूर्ण है, विशेषकर उस समय जब चीन-जैसा प्रबलतम प्रतिद्वंद्वी हमारे सामने है तथा उससे हमारा संघर्ष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

केवल सैनिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि सैद्धांतिक और कूटनीतिक स्तर पर भी है। विदेशों में भारत की प्रतिष्ठा पर किसी प्रकार की भी आँच आने का अर्थ यही है कि हमारी नीतियों में कहीं कोई अभाव है, कोई दोष है। आवश्यकता है इन पर विचार करने की तथा यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाने की। नये विदेशमंत्री से आशा है कि ये अब तक की सम्पूर्ण नीतियों पर पुनर्विचार करेंगे और अभावों तथा दोषों को दूर करेंगे। दक्षिण-पूर्वी एशिया में आजकल एक प्रकार से मानो परिवर्तन की आँधी चल रही है। हमारी नीतियों को इसके अनुसार ही बनाना होगा।

जहाँ तक विदेश विभाग का सम्बन्ध है, ऐसा लगता है कि इसमें आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है। इसके बिना स्थिति में कोई विशेष अंतर नहीं पड़ेगा।

दक्षिणी-पूर्वी एशिया के देशों में हमारी विदेश नीति दो बातों पर आधारित होनी चाहिए। प्रथम तो यथार्थवादी दृष्टिकोण वहुत आवश्यक है तथा द्वितीय, हमारी नीतियों में उन तत्वों को शामिल करना चाहिए जो इन देशों के साथ एकता में सहायक बन सकते हैं।

उदाहरणार्थ, धर्म और संस्कृति ही दक्षिण-पूर्वी एशिया को भारत से मिलाते हैं और यही भारत को सांस्कृतिक नेतृत्व भी प्रदान करते हैं। आवश्यकता है इन तत्वों को परिपुष्ट बनाने की और प्रोत्साहित करने की। इस सम्बन्ध में यह सुझाव युक्तिसंगत होगा कि इस क्षेत्र के देशों में जाने वाले विदेश विभाग के अधिकारियों को धर्म और संस्कृति का पर्याप्त अध्ययन हो तथा इस ओर उनकी रुचि भी हो। तभी वे इन देशों की जनता में भारत के प्रति सद्भावना निर्माण कर सकेंगे तथा उनके हृदयों में भारत की महानता का आभास करा सकेंगे। जिस समय बड़े-बड़े राष्ट्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अपने भौतिक साधनों के बल पर इन देशों पर अपना प्रभाव स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं, भारत सिर्फ इसलिए असहाय होकर नहीं बैठ सकता, क्योंकि उसके पास भौतिक साधनों का अभाव है। उसके पास तो आध्यात्मिकता, धर्म और संस्कृति का ऐसा अक्षय कोष है कि उसके सामने भौतिक साधनों का कोष पूर्णतः नगण्य है। लेकिन जरूरत है सिर्फ उचित दृष्टिकोण की, इस ओर विशेष ध्यान देने की। यदि हम इस दिशा में कुछ कर सकें तो आज भी भारत अपना सांस्कृतिक नेतृत्व पुनः प्राप्त कर सकता है, जो अधिक स्थायी और राष्ट्र के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। इस दृष्टि से भारत को चाहिए कि वह अधिक-से-अधिक विद्वानों तथा धर्म और संस्कृति के मर्मज्ञ लोगों को ही अपने प्रतिनिधि मंडलों में बाहर भेजे तथा वहाँ से भी ऐसे ही व्यक्तियों को आमंत्रित करे। साथ ही जिस प्रकार हमारी सरकार पर्यटन के लिए विदेशियों को आकर्षित करती है उसी प्रकार वह बौद्ध धर्मस्थलों की यात्राओं के लिए उनमें रुचि रखने वाले विदेशियों को आकर्षित करने का प्रयास करे तथा उसके लिए विभिन्न सुविधाओं की व्यवस्था करे।

इस सम्बन्ध में सरकार को यह भी चाहिए कि वह विदेशों में अपने दूतावासों के द्वारा बौद्ध धर्म तथा पाली और संस्कृत भाषाओं के अध्ययन की व्यवस्था कराये तथा अपने यहाँ भी इसके लिए पर्याप्त सुविधायें प्रदान करे।

यदि एकता के इन तत्वों को प्रश्रय और प्रोत्साहन दिया गया तथा नीतियों को यथार्थवादी और व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया गया, तो कोई कारण नहीं कि भारत की प्रतिष्ठा में पुनः अभिवृद्धि न हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

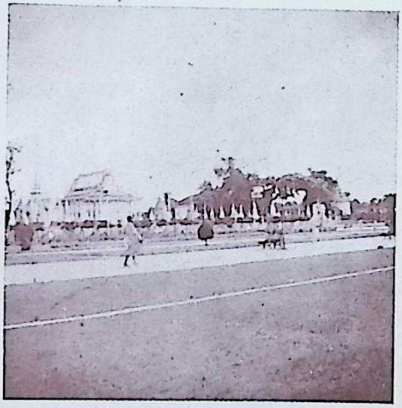

कम्बोडिया की राजधानी पोनमपेन्ह की एक सड़क

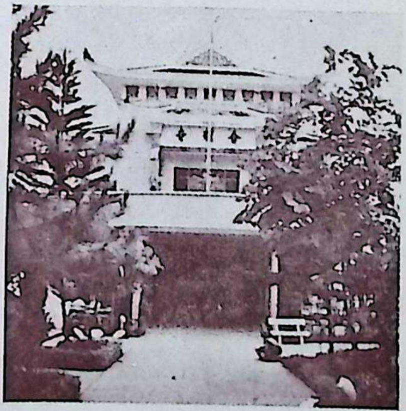

द. वियतनाम की राजधानी सैगोनमें सलीई पगोडा, जिस पर स्थापित बुद्ध-मूर्ति पर बौद्ध-धर्म विरोधी 'डीम' सरकारके अधिकारी ने गोली चलाई थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वियतनाम और महायुद्ध के काले बादल

विगत कुछ वर्षों से दक्षिण वियतनाम की स्थिति अत्यन्त विस्फोटक बनती जा रही है। कोई नहीं कह सकता कि यहाँ किसी भी क्षण क्या कुछ हो जायेगा। पिछले एक दशक से भी अधिक से यह सम्पूर्ण क्षेत्र गृह-युद्ध की अग्नि में तो झुलस ही रहा था और अब इस पर केवल युद्ध ही नहीं—महायुद्ध के काले बादल मड़राने लगे हैं। साथ ही सबसे बड़ी विडम्बना तो यह है कि ये बादल अपने गर्भ में शीतल जल नहीं छिपाये हुए हैं बल्कि ऐसा तरल पदार्थ लिए हुए हैं जो उस आग को और भी अधिक प्रज्ज्वलित कर देगा।

इसी आग और बादल ने मेरे में विद्यमान पत्रकार को दक्षिण वियतमाम आने का निमन्त्रण दिया। यद्यपि उसी समय मेरे अपने हृदय में ही विद्यमान शांति प्रेमी साहित्यकार ने मना किया कि ऐसे झगड़े-टंटे वाली जगह में मत जाओ जहाँ जान्सन, चाऊ एन लाई, जनरल टेलर, होची मिन्ह आदि महारथियों के विषैले वाण-चल रहे हों। लेकिन अन्ततः विजय हुई पत्रकार की और मैं सिंगापुर से सैगोन के लिए चल पड़ा। यहाँ शांतिप्रेमी साहित्यकार की प्रतिष्ठा के लिए यह स्पष्टीकरण करना आवश्यक समझता हूँ कि वस्तुतः पहली विजय उसी की हुई थी। जब मैं फारमोसा से हांगकांग होता हुआ थाईलैंड वापस लौट रहा था, उस समय सैगोन होकर ही जाने का विचार था किन्तु नहीं गया और कम्बोडिया होता हुआ ही लौट गया। परन्तु ऐसा लगता है कि दोनों के बीच संघर्ष चलता ही रहा और जब मलयेशिया गया तब पत्रकार रूप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

का पक्ष भारी पड़ गया तथा मैं वहाँ से सैंगोन के लिए रवाना हो गया यद्यपि इसके कारण दोहरा व्यय हुआ।

मैं १६ जुलाई को दक्षिण वियतनाम की राजधानी सैंगोन पहुँचा। उस समय जेनेवा संधि के १० वर्ष पूरे होने में सिर्फ ३ दिन बाकी थे जिसके अन्तर्गत वियतनाम का विभाजन हुआ था और चारों तरफ यह आम अफवाह थी कि इस दिन जो न हो जाय वह थोड़ा है। लोगों में बड़ी खलबली थी। कोई दो-चार हफ्तों के राशन की व्यवस्था कर रहा था और कोई सभी इष्टमित्रों-बंधु-बांधवों के साथ रहने की बात कर रहा था कि सब एक ही साथ जियें और एक साथ मरें। बिलकुल वही स्थिति थी जो अष्टग्रही योग से कुछ दिन पूर्व भारतवासियों की थी। संयोग से मैं एक विशेष "डेन्जर जोन" में था। मैं ऐसी जगह ठहरा था जहाँ से भूतपूर्व राष्ट्रपति डीम और उनकी भाभी अर्थात् इस युग की एक अत्यन्त खूँख्वार महिला श्रीमती नू का महल बिलकुल पास था। यही क्षेत्र उस क्रांति का का केन्द्र था जहाँ नवम्बर, १९६३ में उक्त राष्ट्रपति, उनके भाई अर्थात श्रीमती नू के पति तथा उनके दो बच्चों का कत्ल कर दिया गया था। और उस समय टैंकों की गड़गड़ाहट और गोलियों की कड़कड़ाहट से इस क्षेत्र के निवासियों के हृदय काँप उठे थे। आज भी इसकी याद करते समय इन लोगों के शरीर के रोयें खड़े हो जाते हैं।

सड़कों पर सैनिकों की गतिविधियाँ तो खूब रहती ही थीं और उन भवनों की रक्षा तो किलों की तरह की जाती थी जहाँ एक भी अमेरिकन रहता हो।

एक दिन सुबह उठा तो देखा कि सड़कों पर बड़ी संख्या में सेना तैनात है—कई-कई एम्बुलैंस गाड़ियों पर बेतार के तार के उपकरणों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सहित जिनसे सैनिक सूचनायें भेज रहे थे। मैंने सोचा कि कहीं कुछ हो तो नहीं गया जिसकी बड़ी गरमा-गरम हवा थी। लेकिन फिर यह लगा कि यदि कुछ हुआ होता तो मैं घर से बाहर कैसे निकल पाता।

इसी प्रकार अनेक घटनायें न बता कर सारांश पहले ही बता दूँ कि जब तक मैं वहाँ रहा कुछ नहीं हुआ उसी प्रकार जैसे भारत में अष्टग्रही के दौरान कुछ नहीं हुआ। हाँ, अब वापस भारत आ गया तो एक दिन आकर अखबार में पढ़ा कि अमेरिकी विमानों ने जवाबी कार्रवाई में उत्तरी वियतनाम की कई सैनिक नौकाओं को नष्ट कर दिया और चेतावनी दी कि फिर कभी उसने अमेरिका को छेड़ने का साहस किया, तो उसे कुचल दिया जायगा। खुश्चेव, चीनी नेताओं आदि ने भी जवाबी चेतावनियाँ दी हैं और इस प्रकार वियतनाम पर मँडराते हुए उन काले बादलों का कालापन और अधिक घना हो गया। अमेरिका ने अपनी दृढ़ता अवश्य सिद्ध कर दी।

काले बादलों का इतिहास

ये बादल कोई नये नहीं हैं और न ही वह आग कोई नयी है। एक दशक से अधिक हो गया इनका जीवन। समय-समय पर बादल के कालेपन और आग की तेजी में ही फर्क पड़ा है। दोनों वियतनाम का निर्माण आज से १० वर्ष पूर्व हिन्दी चीन में फैली-गृह युद्ध की आग के परिणाम-स्वरूप हुए समझौते के कारण हुआ था। इस समझौते में अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और चीन ने भाग लिया। उस समय राष्ट्रसंघ से इसका कोई सरोकार न था। यद्यपि इधर ८ जुलाई १९६४ को राष्ट्रसंघ के महामन्त्री श्री ऊ थान्त ने अवश्य कहा है कि अब राष्ट्रसंघ से इसका सरोकार होने में कोई अनुचित बात नहीं। यदि नया सम्मेलन बुलाया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जाता तो फिर भी राष्ट्रसंघ के सम्बन्ध में वे निश्चयात्मक ढंग से कुछ न कह सके क्योंकि इस प्रश्न से सम्बन्धित ३ देश—चीन, उत्तरी और दक्षिणी वियतनाम राष्ट्रसंघ के सदस्य नहीं हैं। किन्तु अमेरिका नये सम्मेलन के पक्ष में नहीं है। उसका कहना है कि पहले तो पुरानी शर्तें ही पूरी की जायँ, फिर नयी की बात हो अर्थात उत्तरी वियतनाम दक्षिण वियतनाम में हस्तक्षेप करना बन्द करे आदि। १० वर्ष पूर्व हुए सम्मेलन में ३ माह की अवधि के बाद सम्बन्धित पक्षों द्वारा सेनाओं की वापसी, अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण आदि की व्यवस्था के सम्बन्ध में समझौता हो सका था। किन्तु अमेरिका ने इस पर अपने हस्ताक्षर नहीं किये थे और उस समय चेतावनी दी थी कि यदि युद्ध फिर से प्रारम्भ किया गया तो अमेरिका उसे बहुत गम्भीर मामला समझेगा। अमेरिका द्वारा दी गयी इसी चेतावनी में निहित अपने दायित्व के कारण ही आज वह वियतनाम के संघर्ष में एक महत्वपूर्ण पक्ष बना हुआ है।

वैसे १० वर्ष के बाद आज की स्थिति में यही अन्तर पड़ा है कि फ्रांस ने अपनेको इस विवाद में सक्रिय रूप से भाग लेने से रोक रखा है। रूस के रवैये में भी पहले से अन्तर है क्योंकि अब वह चीन का वैसा समर्थक नहीं।

आम चुनाव का प्रश्न

सारा झगड़ा आज इस बात के लिए है कि उत्तरी वियतनाम आम चुनाव के लिए जोर दे रहा है। जैसा कि पहले तय हो चुका है, और दक्षिणी वियतनाम उसके लिए राजी नहीं क्योंकि उसका कहना है कि उत्तरी वियतनाम में कम्युनिस्ट शासन रहते चुनाव स्वतन्त्र और निष्पक्ष नहीं हो सकते।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

इस सम्बन्ध में मैंने सैगोन में विदेश मन्त्री डा० फान हुई वदात से एक विशेष भेंट में पूछा था। जिसके उत्तर में उन्होंने कहा था कि हम वियतनाम का एकीकरण तो चाहते हैं किन्तु आम चुनाव के नाम पर कम्युनिस्टों के फंदे में नहीं पड़ सकते। उन्होंने इस सम्बन्ध में पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी का भी जिक्र किया और कहा चूँकि पश्चिमी जर्मनी में जनसंख्या ज्यादा है इसलिए कम्युनिस्ट वहाँ तो आम चुनाव द्वारा एकीकरण की माँग नहीं करते। परन्तु यहाँ वे सिर्फ इसलिए करते हैं क्योंकि उत्तरी वियतनाम की जनसंख्या अपेक्षय: अधिक है।

चीन और उ० वियतनाम का दोष

और झगड़े की जड़ कम्युनिस्ट चीन और उत्तरी वियतनाम हैं, जो प्रत्यक्ष और परोक्षरूप से दक्षिण वियतनाम में छापामार वीटकांग सैनिकों को सैनिक सहायता देकर यहाँ विद्रोह को बढ़ावा दे रहे हैं। यह काम भी वैसे मुक्ति के नाम पर किया जा रहा है लेकिन वस्तुत: उसके पीछे उत्तर वियतनाम की कम्युनिस्ट पार्टी लाओ डाँगे ही है। इसने २६ जनवरी, १९६१ में एक प्रस्ताव में साफ कहा भी है "यदि पार्टी ने संचालित न किया होता तो दक्षिण वियतनाम की क्रांति को सफलता न मिली होती।"

वियतनाम के अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण आयोग की न्याय समिति ने भी २ जून, १९६४ की विशेष रिपोर्ट में कहा—"दक्षिण वियतनाम सेनाओं और सरकार के लिए उत्तर वियतनाम ने सशस्त्र और शस्त्रहीन सैनिक, शास्त्रास्त्र, रसद आदि भेजी है जो वियतनाम में युद्धबन्दी सम्बन्धी सन्धि की १०, १९, २४ और २७वीं धाराओं का उल्लंघन है।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

साथ ही समय-समय पर अनेक चीनी नेताओं ने भी दक्षिण वियतनाम में विद्रोही हरकतों को बढ़ावा देने सम्बन्धी वक्तव्य दिए हैं। इसी का परिणाम है कि अमेरिका भी दक्षिण वियतनाम सरकार के निमंत्रण पर इस झगड़े में कूद पड़ा है और एक प्रकार से अमेरिका और चीन की सेनायें आमने-सामने आ डटी हैं। चीन यह स्वप्न देख रहा है कि दक्षिण वियतनाम को लेकर वह पूरे दक्षिण पूर्वी एशिया को कम्युनिस्ट बनाने का अपना स्वप्न साकार कर ले और अमेरिका उसे रोकने के लिए कटिबद्ध है।

स्वाभाविक है कि भारत इन घटनाओं से चिंतित है क्योंकि वियतनाम का युद्ध पूरे दक्षिण पूर्व एशिया में फैल सकता है।

इसका एकमेव उपाय यही है कि चीन पर विश्व जनमत का दबाव डालकर उसे दक्षिण वियतनाम में घुस-पैठ करने से रोका जाय तथा वीटकांग विद्रोहियों की कार्रवाई भी रुकवाई जाय। किन्तु दुर्भाग्य यह है कि चीन शक्ति प्रयोग की भाषा ही जानता है और उसी से सबक भी सीख सकता है। किन्तु इसके फलस्वरूप विश्व मानवता को क्या कीमत चुकाना पड़ेगी, यही चिन्ता का विषय है।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मलयेशिया-हिन्देशिया विवाद

इधर कुछ समय से हिन्देशिया-मलयेशिया विवाद ने जो गम्भीर रूप धारण किया है, उसका पूर्वाभास मुझे उसी समय मिल गया था जब मैंने सम्पूर्ण मलयेशिया का भ्रमण किया था तथा वहाँ की सामान्य जनता से लेकर शीर्षस्थ नेताओं से मिला था। उसी समय वहाँ पूर्णतः युद्धकालीन तत्परता थी और अब तो कुछ दिनों पूर्व हिन्देशिया द्वारा दक्षिण मलाया के एक भाग पर अपने कुछ छतरीबाजों को उतार दिये जाने के कारण मामला बहुत संगीन हो गया है। परिणामस्वरूप मलयेशिया में संकटकालीन स्थिति की घोषणा कर दी गयी है और उसने हिन्देशिया के विरुद्ध सुरक्षा परिषद् में शिकायत भी की है।

यद्यपि यह विवाद बहुत पुराना नहीं है क्योंकि स्वयं मलयेशिया संघ का जीवन ही कुल एक वर्ष का है फिर भी इस विवाद ने इस समय सम्पूर्ण विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रखा है तथा वियतनाम, साइप्रस, लाओस आदि की तरह इस विवाद ने भी सम्बन्धित क्षेत्र को एक विस्फोटक स्थल बना रखा है जहाँ किसी भी समय बड़े-से-बड़ा विस्फोट हो सकता है जो संसार को नहीं, तो सारे दक्षिण-पूर्वी एशिया को अवश्य हिला देगा।

महाहिन्देशिया का स्वप्न

यदि इस सम्पूर्ण विवाद, उसके पीछे की पृष्ठभूमि तथा उससे भी पूर्व की तत्सम्बन्धी ऐतिहासिक घटनाओं पर बहुत सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया जाय, तो यही निष्कर्ष निकलेगा कि दोनों देशों के बीच बहुत पहले से ही कुछ ऐसे मूलभूत भेद और अदृश्य संघर्ष रहे हैं जो अब मलयेशिया संघ के निर्माण के प्रश्न को लेकर भड़क उठे हैं। वास्तव में, जब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हिन्देशिया स्वतंत्र नहीं था उसी समय से उसके वर्तमान राष्ट्रपति सुकर्ण जैसे स्वातंत्र्य-सेनानियों ने ऐसे 'महा हिन्देशिया' का स्वप्न देखा था जिसमें मलाया भी शामिल हो। ११ जुलाई, १९४५ को उन्होंने इस बात को अन्य अनेक हिन्देशियाई नेताओं के साथ स्पष्ट रूप से कहा भी। उस समय उन्होंने कहा था—"मैंने यह कभी नहीं कहा कि हिन्देशिया में वही क्षेत्र शामिल होंगे जो हालैण्डवासियों के अधिकार में हैं। मैंने अपने जीवन में कभी महा हिन्देशिया संघ का स्वप्न देखा था जिसमें केवल मलाया और पपुआ (न्यूगिनी) ही न होंगे, बल्कि फिलीफाइन्स भी शामिल होगा।

स्वाभाविक था कि श्री सुकर्ण का स्वप्न मलायावासियों की राष्ट्रियता से टकराया और यह टकराव ही पारस्परिक ईर्ष्या और प्रतिद्वद्विता का कारण बना। हिन्देशिया सन् १९४५ में स्वतंत्र हो गया और मलाया १९५७ में। स्वतंत्र होने के बाद भी दोनों की दिशायें भिन्न रहीं। मलाया ने अपने यहाँ संसदीय लोकतंत्र की स्थापना की और हिन्देशिया ने कुछ तानाशाही तत्वों से मिश्रित "नियंत्रित लोकतंत्र" को स्वीकार किया। इसके बाद एक ने ब्रिटेन और अमेरिका का दामन पकड़े रखा और दूसरा जाकर चीन और रूस की गोद में बैठ गया।

और इसी दौरान सन् १९६१ में चर्चा होने लगी मलयेशिया संघ के निर्माण की जो अन्ततः पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेषरूपी ईंधन के लिए चिनगारी बन गयी। मलयेशिया संघ निर्माण के पीछे मलाया का उद्देश्य अपने को सशक्त करना तो था ही क्योंकि प्रारम्भ से ही हिन्देशिया के राष्ट्रपति सुकर्ण के प्रति सशंक था परन्तु प्रकट रूप से इसने यही कहा कि वह ब्रिटिश उत्तरी बोर्नियों, सारावाक, ब्रूनी और सिंगापुर को मलयेशिया संघ में शामिल करके उनकी स्वतंत्रता प्राप्ति की गति को शीघ्रता प्रदान करना चाहता है। साथ ही वह यह भी चाहता है कि मलयेशिया संघ दक्षिण-पूर्व एशिया में साम्यवाद के मार्ग में प्रबल अवरोध बने।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मलयेशिया संघ का निर्माण हृदय से हिन्देशिया ने कभी भी नहीं चाहा क्योंकि इससे साफ तौर पर प्रतिद्वन्द्वी की शक्ति बढ़ रही थी तथा बोर्नियों में उसकी सीमायें अब स्पष्टतः प्रस्तावित मलयेशिया संघ से मिलने जा रही थीं किन्तु उसने अपनी अनेक राजनैतिक पेचीदगियों के कारण उस समय उसके निर्माण के प्रस्ताव का विरोध नहीं किया बल्कि हिन्देशिया के विदेश मंत्री डा० सुबन्द्रियो ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में (२० नवम्बर, १९६१) कहा कि जब मलाया ने हमें यह बताया कि वह सारावाक, ब्रूनी और उत्तरी बोर्नियो नामक ब्रिटिश उपनिवेशों को मिलाकर एक संघ बनाने जा रहा है तो हमने कहा कि हमें कोई आपत्ति नहीं है। हम उक्त विलयन की सफलता की कामना करते हैं क्योंकि सभी को शांति और स्वतंत्रता के साथ जीने का अधिकार है।

इसके बाद ५ अगस्त, १९६३ को मनीला में फिलीपाइन्स और हिन्देशिया के विदेश मंत्रियों ने भी यह स्वीकार किया कि यदि सारावाक और उत्तरी बोर्नियो के उपनिवेशों की जनता का मत जान लिया जाय और इस कार्य का संचालन स्वयं संयुक्त राष्ट्र के महामन्त्री श्री ऊ थांट करें तो उसे कोई आपत्ति न होगी। मलाया ने इसे स्वीकार कर लिया। महामंत्री की रिपोर्ट १४ सितम्बर, १९६३ तक आ जानेवाली थी अतएव मलयेशिया संघ की स्थापना की तारीख १६ सितम्बर, १९६३ निश्चित कर दी गयी। यद्यपि मलय सरकार ने स्पष्ट कर दिया था कि यदि महामन्त्री की रिपोर्ट विरुद्ध रही तो वह मलयेशिया निर्माण का निश्चय त्याग देगा।

महामन्त्री श्री ऊ थांट ने निश्चित समय पर अपने जाँच आयोग की रिपोर्ट दे दी जिसमें स्पष्ट कहा गया था—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

"...मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि साबाह ((उत्तरी बोर्नियो) और सारावाक की जनता के बहुमत ने अपने भविष्य और मलयेशिया संघ में शामिल होने के परिणाम पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर लिया है।...मेरा यह भी निष्कर्ष है कि दोनों उपनिवेशों की बहुसंख्यक जनता मलाया और सिंगापुर के साथ मलयेशिया संघ में मिलकर साथ-साथ अपने भाग्य का निर्माण करना चाहती है।" महामन्त्री ने इस कार्य को राष्ट्र-संघीय घोषणा पत्र के अनुकूल भी बताया।

इसके पूर्व उत्तरी बोर्नियो और सारावाक की सभी महत्वपूर्ण स्थानिक संस्थाओं से लेकर विधान परिषद तक ने भी मलयेशिया संघ का समर्थन किया। अतएव पूर्व घोषणा के अनुसार १६ सितम्बर, १९६३ को मलयेशिया संघ की स्थापना हो गयी। ब्रूनी के बहुमत ने चूंकि मलयेशिया का समर्थन नहीं किया अतएव वह अलग ही रखा गया।

हिन्देशिया का विरोध

किन्तु हिन्देशिया ने राष्ट्रसंघीय महामन्त्री के जाँच दल की रिपोर्ट से अपनी सहमति नहीं प्रकट की। साथ ही इस बात का भी बहाना लेकर कि मलयेशिया संघ निर्माण की पूर्व तिथि घोषित करके जांच के निर्णय को प्रभावित किया गया है, हिन्देशिया ने अपने नव निर्मित पड़ोसी राष्ट्र के प्रति अपनी खुली शत्रुता और विरोध का उद्घोष कर दिया। साथ ही उसने यह भी कहा कि उत्तरी बोर्नियो और सारावाक की जनता का मत विधिवत् नहीं जाना गया है जो मुख्य मलय प्रदेश से प्राय: ४०० मील दूर हैं और समुद्र उन्हें मलय से दूर करता है। और यदि इनका किसी बड़े देश या संघ से मिलना ही श्रेयस्कर है तो ये हिन्देशिया से मिले जिसकी सीमा इनसे मिली हुई है। इस प्रकार वेस्ट इरियन के जिस प्रश्न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

के कारण हिन्देशिया इससे पहले मलयेशिया के प्रश्न पर कुछ चुप था, अब उसके (वेस्ट इरियन समस्या) सुलझ जाने के बाद वह पूरी तरह से ताल ठोक कर सामने आ गया और कालांतर में उत्तरी बोर्नियो की मलयेशियाई सीमा के अन्दर अपने छापामार सैनिक भी भेज दिये जिसे मलयेशिया ने "नग्न आक्रमण" बताया।

इसीलिए विगत जून माह में मनीला में जब मलयेशिया और हिन्देशिया का शिखर सम्मेलन हुआ और राष्ट्रपति सुकर्ण ने उक्त छापामारों को मलयेशिया सीमा से वापस मँगाना अस्वीकार कर दिया तो इसी कारण उक्त सम्मेलन अकस्मात समाप्त हो गया और समझौते की समस्त आशायें धूमिल पड़ गयीं। और अब हाल में मुख्य मलय प्रदेश के दक्षिण में छतरीवालों को भेज कर तो हिन्देशिया ने इस विवाद को बहुत गम्भीरता प्रदान कर दी। राष्ट्रपति सुकर्ण 'मलयेशिया को कुचलने' की अपनी घोषित नीति पर अटल हैं। इसके लिये उन्होंने रूस से पर्याप्त सैनिक सहायता भी ली है। मलयेशिया के प्रधान मंत्री टुंकु अब्दुल रहमान ने भी अमेरिका और ब्रिटेन जाकर अधिक सैनिक सहायता के लिए प्रयास किया। वैसे वह पहले से ही ब्रिटेन से एक सैनिक संधि द्वारा बँधा हुआ है और मलयेशिया के विभिन्न स्थानों पर ब्रिटेन के सैनिक अड्डे भी विद्यमान हैं।

भारत की नीति

मलयेशिया के सम्बन्ध में जहाँ तक भारतीय नीति का प्रश्न है, भारत ने सदैव मलयेशिया संघ के ध्येय और अस्तित्व का समर्थन किया है। वह सिद्धान्ततः यह भी मानता है कि किसी भी देश की सीमाओं में विदेशी सेना का रहना अनुचित है। परन्तु वह अनेक कारणों से हिन्देशिया की खुली निन्दा नहीं कर सका है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मैं जब गत जुलाई माह में मलयेशिया गया था तो उप समय यहाँ के प्रधान मंत्री टुंकु अब्दुल रहमान ब्रिटेन के दौरे पर थे। अतएव मैं कार्यकारी प्रधान मंत्री हाजी अब्दुल टुन रजाक से मिला और इस सम्बन्ध में बातचीत की। बातचीत में उन्होंने स्पष्ट कहा कि भारत को मलयेशिया पर आक्रमण की खुली निन्दा करनी चाहिये जिस प्रकार मलयेशिया ने चीनी आक्रमण के समय उसके विरुद्ध की थी। मैं उनसे पत्रकार की हैसियत से मिला था अतएव उनके विचार सुन ही सकता था, अपने या अपने देश के विचार उनके सामने रख नहीं सकता था। परन्तु यह प्रश्न निश्चय ही बहुत पेचीदा हो गया है और इसमें भारत की स्थिति बहुत नाजुक है क्योंकि यह झगड़ा उसके दो मित्रों के बीच का है—भले ही मित्रता की घनिष्ठता में अंतर हो। जहाँ तक चीनी आक्रमण का सम्बन्ध था, चीन मलयेशिया का भी दुश्मन था। फिर भी भारत ने यह प्रश्न दोस्त और दुश्मन के दृष्टिकोण से ही नहीं देखा। उसने मलयेशिया के अस्तित्व का सदैव पक्ष लिया। हाल में हिन्देशिया में हुए अफ्रीकी एशियाई तैयारी सम्मेलन में भी भारत ने मलयेशिया को शामिल करने के लिये जोरदार वकालत की थी भले ही उसे कश्मीर के प्रश्न पर उसकी कीमत चुकानी पड़ी।

हां, उसके दो मित्रों के इस संघर्ष में भारत से इतनी अपेक्षा तो ठीक है कि वह अपने प्रभाव का उपयोग करके रूस पर यह दबाव डाले कि वह इन दोनों के झगड़ों से दूर रहे। ब्रिटेन मलयेशिया का साथ दे ही रहा था, अमेरिका भी खुलेआम यदि आ गया, तो एक ओर ब्रिटेन और अमेरिका तथा दूसरी ओर रूस और चीन हो जायेंगे तथा यह मामला विश्वयुद्ध का कारण बन सकता है। साथ ही इसके फलस्वरूप हिन्देशिया साम्यवादी गुट में भी पूरी तरह से जा सकता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

१२६४०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
पोस्ट बॉक्स नं. ७०, पिशाचमोचन
वाराणसी–१

क. मुद्रक : विद्या मन्दिर प्रेस (प्रा.) लि०, मानमन्दिर वाराणसी–१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu